ISSN : 2582-1660
मूल्य : ₹ 25

तीरभुक्ति

वर्ष : 2, अंक : 2, अक्टूबर-दिसंबर 2019
अखिल भारतीय मिथिला संघक (Peer Reviewed) शोध पत्रिका

मैथिली साहित्य संधान

पोथी समीक्षा

(1)

संगम विहारमे भेल मिथिला भवनक उद्‌घाटन

नई दिल्ली: दिल्लीमे रहनिहार करीब 40 लाख मैथिल केर अग्रणी संगठन अखिल भारतीय मिथिला संघ केर संगम विहारमे बनाओल गेल मिथिला भवनक उद्‌घाटन गत आठ सितंबर कें भेल। दिल्लीमे अपना तरहक ई एकमात्र भवन अछि। एकर उद्घाटन राज्यसभा सांसद प्रभात झा, लोकसभाक पूर्व सांसद महाबल मिश्र, आईआरएस आलोक झा आ गोपाल झा जीक करकमल सं कयल गेल। एहि अवसर पर संघक अध्यक्ष विजयचंद्र झा सहित समस्त पदाधिकारी आ अन्य सदस्य लोकनि सेहो उपस्थित छलाह।

भवनक उद्‌घाटन केर बाद प्रभात झा जी कहलनि जे संगम विहारमे रहनिहार मैथिल के लेल ई एकटा पैघ सौगात अछि। एतुका मैथिल के आब मुंड़न-उपनयन के संगहि विवाह आदि मांगलिक कार्य के लेल जगह ताकबाक जरूरत नहि पड़तनि। महाबल मिश्र सेहो भवन बनला पर खुशी जतौला आ एकर पूरा श्रेय संघक अध्यक्ष विजयचंद्र झा कें देलाह। गोपाल झा आ आलोक झा एहि अवसर पर कहला जे भवन एखन दूमहला अछि, मुदा संस्था केर लोक सबहक सहयोग सं एकरा जल्दिये चारि महल तक बनेबाक प्रयास कयल जायत। विजयजी एहि मध्य भावुक भ' गेलाह आ संस्थाक संस्थापक स्व. भोगेंद्र झा कें याद करैत कहलाह जे आई अगर ओ रहितथि त भवन बनबाक खुशी दुगुना भ' जाइत। ओ संगम विहारमे रहनिहार मैथिल सबसं कहलाह जे 'ई भवन अहां सबके छी आ एकर नीक की बेजाए, आब अहीं सबहक हाथमे अछि।'

उद्‌घाटन समारोहक बाद संघक कार्यकारिणीक बैसार सेहो भेल जकरा संघ केर महासचिव विद्यानंद ठाकुर संबोधित कयलाह। ठाकुरजी एहि दौरान संघ के पूरा साल के गतिविधि सं त' अवगत करेबे कयलाह संगहि संघक निकट भविष्य केर कार्यक्रमक जानकारी सेहो देलाह। ओ कहलाह जे संघक वार्षिक कार्यक्रम मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह 24 नवंबर कें डॉ. भीमराव आंबेडकर सेंटर, जनपथमे आयोजित होयत। संगहि ओ इहो जानकारी देलाह जे अखिल भारतीय मिथिला संघ अगिला साल फरवरी के अंतिम सप्ताहमे तीन दिवसीय *विश्व मैथिल सम्मेलन* केर आयोजन करत जाहिमे दुनिया भरि के मैथिल केर समागम प्रस्तावित अछि।

कार्यक्रममे करीब दू सय गोटे जमा भेल छलाह। पूरा कार्यक्रमक संचालन संघक महासचिव डॉ. प्रकाश झा के द्वारा कयल गेल।

– रौशन कुमार झा

हास्य सम्राट हरिमोहन झाक स्मृति

हास्य सम्राट, मैथिली साहित्यक रत्नगर्भित धरोहर, मैथिली साहित्यक अद्वितीय पुरोधा स्वर्गीय प्रोफेसर हरिमोहन झा केर स्मृति संध्या, अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा गांधी शांति प्रतिष्ठान सभागारमे दिनांक 18 सितंबर, 2019 कें आयोजित कयल गेल। सभागार मे बुद्धिजीवी, साहित्यकार लोकनिक वक्तव्य सुनबा आ गुणबाक अवसर प्राप्त भेल। अहि सभाक संयोजन अखिल भारतीय मिथिला संघक सचिव श्रीमती कल्पना झा कयलन्हि। एहि संगोष्ठीमे मिथिलानी सभ सेहो बढ़ि-चढ़ि क' हिस्सा लेलि।

सभागारमे उपस्थित बुद्धिजीवीजन, हरिमोहन झा जीक लेखनी आ हिनक कृति पर विमर्श कयलन्हि। विद्वान लोकनि कहलनि जे जतय प्राचीन युगमे कवि कोकिल विद्यापति मैथिली काव्य कें चरमोत्कर्ष पर विराजित कएलनि, ओतहि प्रोफेसर झा आधुनिक मैथिलीक गद्य के ओहि स्थान तक ल' गेला। ओ हास्य व्यंग्यपूर्ण शैली मे सामाजिक, धार्मिक आ पारिवारिक रूढ़ि आ अंधविश्वास पर चोट करैत रहलाह प्रोफेसर झा स्त्री शिक्षा पर सेहो बल देला।

डॉ. आभा झा जीक द्वारा पांच पत्र पर विवेचना सारगर्भित छल। बुद्धिनाथ झा जी केर उपस्थिति आ हिनक वक्तव्य सम्पूर्ण सभागार कें नव ऊर्जा सं ओत-प्रोत केलक। चंद्रमणि झा जीक कविताक भाव अति प्रशंसनीय छल। विनोद झा जीक संस्मरण अद्‌भुत। अवसर पर 'तीरभुक्ति' केर सम्पादक विनीत उत्पल सेहो अप्पन मंतव्य राखलनि। सभागारमे उपस्थित विद्वतगणक ज्ञान आ मिथिलाक सर्वांगीण विकास लेल सोच, खूब प्रभावित केलक। अहि कार्य लेल मिथिला संघक जतेक प्रशंसा करी ओ कमें होयत। किएक त हरिमोहन झा जीक मैथिली साहित्य मे अद्वितीय स्थान छनि। हिनक लिखल पोथी अनेक भाषा मे अनुवादित भेल। अनेक तरहक चर्चा आ विवेचना भेल। ई कार्यक्रम सब तरहें प्रेरणादायी रहल। अहि तरहक संगोष्ठीक आयोजन अखिल भारतीय मिथिला संघ करैत रहत, अपन साहित्य आ साहित्यकार लोकनिक कृतिक, संरक्षण करबाक कोशिश राखत, से आशा आ अभिलाषाक अछि।

– सांत्वना मिश्रा

मूल्य : ₹ 25
वर्ष : 2, अंक : 2
अक्टूबर-दिसंबर 2019

तीरभुक्ति

अखिल भारतीय मिथिला संघक (Peer Reviewed) शोध पत्रिका

ISSN : 2582-1660
RNI No. : DELMAI/2018/76698

संरक्षक
प्रभात झा
सांसद, राज्य सभा

संस्थापक
विजयचन्द्र झा
अध्यक्ष, अ.भा.मि.सं.

संपादक
विनीत कुमार झा उत्पल*
ऋतेश पाठक

संपादक मंडल
रौशन झा, भास्कर ज्योति, स्वाती शाकम्भरी, डॉ. प्रवीण कुमार झा, त्रिपुरारी ठाकुर

उप संपादक
गोविन्द कुमार झा

प्रबंध संपादक
विद्यानंद ठाकुर

प्रबंधन मंडल
पं. कौशल झा, अंजनी कुमार झा, ओम चौधरी, शंकर कुमार झा

आवरण चित्र
श्रुति झा

डिजाइनर
मणिशंकर कुमार

स्थायी पता
म.नं.-435-ई, गली नं. 7, ई-ब्लॉक, संगम विहार, नई दिल्ली-110062
पत्राचार पता
20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली-110001
फोन: सं.: 9911364316
प्र.: 9650461788, 9717539000
ईमेल: teerbhuktimaithili@gmail.com

*प्रेस आ पोथी अधिनियमक अधीन

(उपरोक्त सभ टा पद मानद आ अवैतनिक अछि)

विषय सूची

- संपादकीय 5

शोध प्रबंध
- दू सहोदरा भाषाक सम्बन्धक नवीकरण (Assamese & Maithili Verb System : A Contrastive Study) / *डॉ. रमानन्द झा 'रमण'* 7

यात्रा वृतांत
- आस्ट्रेलियाक दर्शन करबैत डायरी (रमता जोगी) / *रमण कुमार सिंह* 9
- सामाजिक, ऐतिहासिक आ धार्मिक यात्रा करबैत पोथी (महाकुम्भ) / *डॉ. सत्येन्द्र कुमार झा* 11

ग्रामगाथा
- गामक दस्तावेज आ ग्राम विकासक महत्वपूर्ण अध्याय (कोइलख) / *ऋतेश पाठक* 14
- इतिवृत्त एक गामक (सुल्तानपुर सौरभ) / *डॉ. नरेश कुमार विकल* 17
- शिवनगर: इतिहास सं वर्तमान धरि (शिवनगर गाम-गाथा) / *हितनाथ झा* 19

उपन्यास
- कोसी गाथाक डाक्यूमेंटरीक औपन्यासिक अभिव्यक्ति (जल प्रांतर) / *वैद्यनाथ झा* 21
- आम जीवनक सहज कथा (दू धाप आगां) / *पंकज 'कलमजीवी'* 23
- नवतुरियाक संघर्ष गाथा (पापुआ ढपुआ सनपटुआ) / *प्रणव कुमार झा* 25

कथा संग्रह
- कुहरैत-छटपटाइत मानवीय मूल्य ओ काम कुंठाक कथा (बीच वैतरणीमे) / *नारायण झा* 27
- फेरो कुहूकल कोइली (कोइली) / *डॉ. नरेश कुमार विकल* 32

महाकाव्य
- मैथिलीमे महाकाव्य विधाक पुनर्जीवन (ॐ महाभारत) / *चन्द्रेश* 34

संस्मरण
- मैथिली-मिथिलाक विभूति सभक आह्वान (दिक्पाल) / *हितनाथ झा* 36
- अस्तित्वक संधान करैत निवेदिता झाक काव्य-संसार (स्त्रीक मोन/हमरेसं रंग) / *डॉ. ललितेश मिश्र* 39

कविता संग्रह
- व्योममे शब्दक कारीगरी (व्योम मे शब्द) / *गंगा नाथ 'गंगेश'* 43
- सपनाक बाट पर चलैत कवि नारायणजी (जल : धरतीक अनुरागमे बसैत अछि) / *रमण कुमार सिंह* 46

पत्रिकामे प्रकाशित आलेख आ रचनामे व्यक्त विचार आ दृष्टिकोण लेखक केर छनि। संपादक अथवा प्रकाशक कें ओहिसं सहमत होयब आवश्यक नञ अछि।

- मृत्यु थिक विचार (मृत्यु थिक विचार) / *डॉ. नरेश कुमार विकल* 48
- भोर सोहनगर अछि (औनायल रातिक भोर) / *कमल मोहन चुन्नू* 50
- प्रतिवादी कविक पिरीतक स्वर (बिछड़ल कोनो पिरीत जकां) / *दिलीप कुमार झा* 53
- नवकवितामे समधानल डेग (एखन धरि) / *अमित मिश्र* 55
- मध्यवर्गक स्वप्न मे इंद्रधनुषक छटा (स्वप्न मे इंद्रधनुष) / *दिपेश कुमार यादव* 57
- पाथरक शहरमे भेदभाव पर धारदार प्रहार (पाथरक शहर) / *सोनी नीलू झा* 60
- 'फूजल आंखिक स्वप्न' मे प्रेमिल जीवनक उद्धाम लालसा (फूजल आंखिक स्वप्न) / *रमेश* 62
- मुख्य सं गौण हेबाक छटपटाहटि (विसर्ग होइत स्वर) / *डॉ. विभा कुमारी* 65

बाल साहित्य

- बाल उपन्यासक कसौटी पर 'गुलरी' (गुलरी) / *अमित मिश्र* 67

निबंध संग्रह

- मिथिलाक ज्योतिष परंपराक अनंत यात्रा (आखर अनंत) / *डॉ. विनय कुमार चौधरी* 71

व्यंग्य

- मनभावन अछि बाइस्कोप (नीक दिनक बाइस्कोप) / *हितनाथ झा* 72

दलान

भूल सुधार

'तीरभुक्ति' केर गत अंक (जुलाई-सितंबर 2019) के किछु त्रुटि देखल गेल। ओकरा निम्नलिखित विवरण अनुसार सुधार संग पढ़ल जाए। असुविधाक लेल 'तीरभुक्ति' टीमंक्षमाप्रार्थी अछि।

पृ.सं.	अनुछेद	त्रुटि	सुधार
7	एक	जनक जननी	जनक नंदिनी
10	तालिका (2) पंक्ति 3	देवनागरी	सिंधी भाषा एवं साहित्य (देवनागरी)
16	तालिका 3	लीली रे	लिलि रे
16	तालिका 3	1986: सुभद्रा झा : नातिक पत्रक उत्तर	2014: आशा मिश्र : उचाट (उपन्यास)

त्रुटि पर ध्यानाकर्षण हेतु हम सब सुधि पाठकलोकनिक आभारी छी। — संपादक

लेखक केर पत्र

रितेशजी

अपनेक पत्रिका मे हमर लेख मे महान साहित्यकार डॉ. सुभद्र झाजीक नाम किछ ग़लत सूचना कें कारण महिला कथाकार कें अन्तर्गत छपि गेल। त्रुटि जल्द सं जल्द दुरुस्त करय लेल कृपा करू। फ़ेसबुक पर विद्यापति डॉ. सुभद्रा झा प्रेरणा मंच मे सुधार सेहो आवश्यक अछि। एहि त्रुटि लेल क्षमाप्रार्थी छी।

शुभकामना सहित

डॉ. राजीव कुमार वर्मा
(ईमेल सं)

अखिल भारतीय मिथिला संघ कें अपन प्रयास सभमे अपने सभक सहयोगक अपेक्षा अछि। संस्था कें प्रदत्त वित्तीय सहयोग आयकर अधिनियमक धारा 80जी के तहत करमुक्त रहत। संघक सहयोगक लेल बैंक विवरण निम्नलिखित अछि-

बैंक खाता विवरण

नाम	:	अखिल भारतीय मिथिला संघ (Akhil Bhartiya Mithila Sangh)
खाता संख्या	:	11084229861
आईएफएससी कोड	:	SBIN0000691
एमआईसीआर कोड	:	110002087
बैंक	:	स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
शाखा	:	पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली

संपादकीय

कोनो साहित्यमे सम्बंधित विषय, रचना, रचनाकार आ पाठक महत्वपूर्ण तत्व होयत अछि। विषय आ रचनाक केंद्रबिन्दुमे रचनाकार होइत अछि आ रचनाकार केंद्रबिन्दु एकटा पाठक केर चारूकात घुमैत अछि। एहि केंद्रबिन्दुमे आलोचना, समालोचना आ समीक्षा सेहो अछि आ तीनू तत्व रचनाकें ग्रहण क' सहित्यकें सार्थकता प्रदान करैत अछि। कोनो रचनाके पढैत काल पाठकक मनमे ई प्रश्न उठब स्वाभाविक अछि जे ओहि रचनामे जीवनक जे व्याख्या कयल गेल अछि आ जे बात लिखल गेल अछि, ओ ठीक अछि वा नहि, कलाक दृष्टि सं ओ ग्रन्थ नीक अछि वा नहि आदि। एहि सभ प्रश्नक उत्तर पयबाक लेल आलोचना, समालोचना आ समीक्षा सहायक होयत अछि।

मैथिली साहित्यमे आलोचना, समालोचना आ समीक्षाक काज बड़ छिड़यायल अछि आ आइ धरि अंगरेजी आ हिन्दी सं इतर कोनो नव रास्ता नहि बना सकल अछि। प्रेमशंकर सिंह अप्पन पोथी "मैथिली भाषा साहित्य: बीसम शताब्दी" में लिखैत छथि जे मैथिली आलोचनाक उदय विगत शताब्दीमे भेल आ एकर विभिन्न स्थिति अछि आ ई ओकर सभसं दुर्बल अंग थिक। विवेच्य कालक मैथिली आलोचना विधाक सम्पूर्ण विकास यात्राकें दृष्टिमे राखि ओ एकर तीन रूप निर्धारित कयने छलाह। प्रथम रूप संस्कृत समालोचना सिद्धांत जे निर्णयात्मक अछि। एहि प्रणालीक अनुगमन कयनिहार संस्कृत आचार्य लोकनिक रूप थिक। द्वितीय अछि पाश्चात्य समालोचना सिद्धांत। तृतीय रूप में प्राचीन भारतीय आ पाश्चात्य सिद्धांतक समन्वय।

भारतीय काव्यशास्त्रमे आलोचकक गुणक विशेष विवरण भेटैत अछि। भोलानाथ चतुर्वेदी केर मानब छलनि जे साहित्यमे समालोचनाक अधिकारी वैह मनुक्ख अछि जे साहित्यक अंग-प्रत्यंगक नीक जकां अध्ययन क' मनन केने अछि। समालोचक कें भय, लोभ आ राग-द्वेष सं शून्य हेबाक चाही। जों हुनकर ह्रदयमे एकरामे सं एक्को टा विद्यमान अछि ते हुनकर समालोचना सम्यक दृष्टिकोण बला नहि भ' सकैत अछि। समालोचना न्यायशील हेबाक चाही। साहित्य क्षीरक परीक्षा करहि के लेल समालोचककें हंस जकां नीर-क्षीर-विवेकी हेबाक चाही। मानल जायत अछि जे आलोचकमे सह्रदयता, तटस्थता, बहुज्ञता आ सृजनात्मकता सन गुण अवश्य हेबाक चाही।

ड्यूक विश्वविद्यालयक प्रोफ़ेसर फ्रेडरिक जेम्सनक लेल सभ विचारधारा 'परिधिमे बान्हैक तरीका' अछि, जिनकर माध्यम सं समाज अपन स्पष्टीकरण दैत अछि आ भीतर नुकायल अंतर्विरोध कें दबाबैत अछि। तकर उपरांत साहित्य वा ओकर आलोचना आवश्यक रूपसं विचारात्मक होयत अछि। जतय साहित्य विचारक संघर्ष कें भाषाक पाछां नुका लेत अछि, ओतय एकटा वास्तविक आलोचना साहित्यक एहि दुराव आ छुपाव के लोकक आगू आनैत अछि। जेम्सन एहि तरह के आलोचना कें 'मेटाकमेंटरी' या 'द्वंद्वात्मक आलोचना' कहैत छथि।

रूसी आलोचक जार्ज प्लेखानोव के कहब छल जे कोनो युगक सामाजिक मानसिकता ओहि युगक सामाजिक संबंध सं संचालित होयत अछि। एहि तथ्य कें सबसं बेसी कला आ साहित्यमे देखल जा सकैत अछि। साहित्यक रचनाकर्म दुनियाके देखयके तरीका पर निर्भर करैत अछि आ ओकर संबंध लेखकक जीवनानुभव आ जीवन दर्शन पर होयत अछि। मीशरे कहैत छथि जे कोनो साहित्यिक रचना विचारधारा सं एहि आधार पर नहि जुड़ल होयत अछि जे ओ की कहैत अछि आ की नहि कहैत अछि। असलमे विचारधाराक अस्तित्वक भान ओहि 'चुप्पी' सं होयत अछि जे कोनो वाक्यमे नुकायल होयत अछि आ आलोचक ओहि 'चुप्पी' के आगू आनैत अछि।

बाबू श्यामसुन्दर दासक मोताबिक, साहित्य क्षेत्रमे, ग्रन्थ कें पढ़ि के ओकर गुण आ दोषक विवेचन करब आ ओकर संबंधमे अपन मत प्रकट करब आलोचना कहाबैत अछि। रामस्वरूप चतुर्वेदी कहैत छथि, जे सर्जनात्मक आलोचनाक अर्थ अछि, अर्थक जे संभावना सभ रचनामे निहित अछि, ओहि संभावना कें आओर आगू प्रयोग करब, उपयोग करब आ ओहि मे अपन सम्भावना के जोड़ब। ओना आलोचना दू तरहक होयत अछि, सैद्धांतिक आ व्यावहारिक। सैद्धांतिक समालोचना वैह अछि जाहि मे साहित्यक विभिन्न रूप केर विवेचन सं साहित्यिक सिद्धांतक स्थान निर्धारित होयत अछि। ई आलोचना एक प्रकारसं आलोचनाक शास्त्रीय पक्ष अछि आ व्यावहारिक आलोचनामे विभिन्न दृष्टिकोण सं एकर प्रयोग होयत अछि। सैद्धांतिक समीक्षा कोनो नै कोनो रूपमे रचनाक व्यावहारिकता आ जीवनमूल्य सं जुड़ल होयत अछि। व्यावहारिक

आलोचनाक संबंध रचना सं होयत अछि। व्यावहारिक समीक्षा कोनो सर्जनक कृतिक भाव सर्जनामे अंतर्निष्ट भाषिक संश्लेषण एवं कलात्मक प्रस्तुतिक व्याख्या करैत अछि। कालावधि मे एहि दू तरहक समीक्षाक बाद कतेक रास समीक्षाक पद्धति आगू आयल अछि जाहि मे प्रमुख सात तरहक समीक्षा अछि, प्रभावाभिव्यंजनात्मक समीक्षा, तुलनात्मक समीक्षा, निर्णयात्मक समीक्षा, ऐतिहासिक समीक्षा, व्याख्यात्मक समीक्षा, चरित्रात्मक समीक्षा आ मनोवैज्ञानिक समीक्षा।

प्रभावाभिव्यंजनात्मक समीक्षा आत्मप्रधान या व्यक्तिप्रधान आलोचना अछि आ ई तखन होयत अछि जखन आलोचक विवेचन पद्धति कें छोड़ि कें मात्र अपन व्यक्तिगत रुचि या अरुचि के अपन आलोचनाक आधार बनाबैत अछि। तुलनात्मक समीक्षा एक पांतिक तुलना सं ल' कें विविध कृति, ओकर धारा, इतिहास दृष्टि, देशी-विदेशी आ देशक विभिन्न भाषा मे सृजित परम्परा केर पारस्परिक तुलना आ ओकर आधार पर निर्णय धरि पहुंचैत अछि। निर्णयात्मक समीक्षामे कोनो रचनाक गुण-दोष निरुपित क' ओकर मूल्य निर्धारित कयल जायत अछि। ऐतिहासिक समीक्षामे कोनो युगक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, साम्प्रादायिक स्थिति आदि कोनो रचनाकार कें कतय धरि प्रभावित केलक एकर छानबीन कयल जायत अछि। व्याख्यात्मक समीक्षा रचनामे निहित सर्जनात्मक तत्व आ सामाजिक मूल्य के क्रमबद्ध तथा तार्किक रूप सं प्रस्तुत कयल जायत अछि। आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखने छथि, जे व्याख्यात्मक आलोचना कोनो ग्रन्थ सं आयल बात के एकटा व्यवस्थित रूपमे आगू राखि एकर कतेक प्रकार सं स्पष्टीकरण करैत अछि। एकर मूल्य एवं मान बाहरी नहि, अपितु विवेचनाक आधार केवल रचना मात्र होयत अछि। चरित्रात्मक समीक्षा के ल' के यदुनाथ सिंह कहैत छथि जे चरित्रमूलक शैलीक आलोचक रचना केर कारण आ घटना पर विचार करैत अछि, जाहिमे रचनाकार के स्वभाव बनल अछि। मनोवैज्ञानिक समीक्षाक तहत कोनो रचनाकारक मनमे निर्मित ओकर अवधारणा पर चिन्तन करैत अछि जाहि कारण ओ रचना करहि के लेल विवश भेल, सन्दर्भक खोज आ रचनामे ओकर अवतरणक व्याख्या होयत अछि।

'तीरभुक्ति' के ई अंक आलोचना, समालोचना आ समीक्षा पर आधारित अछि। ई अंक ओहि पोथी सभ पर आधारित अछि जाहि सभक प्रकाशन दू बरखक भीतर भेल अछि। एहि अंक केर प्रकाशनमे बड़ रास अनुभव भेल, बेसी अनुभव सकारात्मक रहल। किछु लोक सहर्ष समीक्षा लेल तैयार भेलाह आ समय सं पहिने अपन प्रकाशन सामग्री पठा देलनि। किछु लोक अपने सं समीक्षा पठेबाक लेल अग्रसारित भेलाह। मुदा आंगुर पर गिनय बला लोक बेर-बेर फोन क' के चरियैबाक बादो आइ धरि समीक्षा नहि पठौलनि अछि, हुनका सभसं निवेदन से कनि तुलसीदास कृत रामचरितमानस के पांति एक बेर पढि ली, 'रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाय पर वचन न जाई।'

'तीरभुक्ति' के एहि अंक मे प्रख्यात विद्वान आ समीक्षक डॉ. रामानंद झा रमण, डॉ. ललितेश मिश्र, डॉ. कमल मोहन चुन्नू, चंद्रेशजी, नरेश कुमार विकल, वैद्यनाथ झा, हितनाथ झा, गंगानाथ गंगेश, दिलीप कुमार झा, रमेश सन स्थापित लोकक समीक्षा पढ़ब जे नव समीक्षक लेल सिखैक एकटा अध्याय जेना अछि। विनय कुमार चौधरी, डॉ. सत्येन्द्र कुमार झा, डॉ. बिभा कुमारी, रमण कुमार सिंह आदिक समीक्षा देखि के ई आस जगैत अछि जे मैथिली साहित्य मे समीक्षाक विधा जीवित रहत आ एकटा मीलक पाथर साबित होयत। एहि अंक मे अहां ऋतेश पाठक, पंकज कलमजीवी, प्रणव कुमार झा, नारायण झा, अमित मिश्र, सोनी नीलू झा, दिपेश कुमार यादव, के समीक्षा पढ़ब आ एहि सूची मे किछु लेखकक उपस्थिति पहिलुक बेर बतौर समीक्षक अछि। जों हिनका सभके प्रोत्साहित कयल जाय ते ई सभ नव सूर्य बनि मैथिली साहित्यक आकाश कें अवलोकित करत। आगामी अंक सेहो आलोचना, समालोचना आ समीक्षा पर केंद्रित होयत। एहि अंक मे सामग्री एतेक अछि जे कोनो नियमित कॉलम नहि प्रकाशित क' रहल छी, आगामी अंक से नियमित रहत।

'तीरभुक्ति' के शोधकर्ता, रचनाकार आ पाठकक लेल हर्षक विषय अछि जे पत्रिका के आईएसएसएन संख्या भेट गेल अछि आ ई शोध पत्रिका 'ब्लाइंड पीयर रिव्यू जर्नल' के स्वरूपमे अछि। आब ब्लाइंड रिव्यू (अंध समीक्षा) भेला के बादे एहि शोध पत्रिका मे शोध आलेख प्रकाशित भ' रहल अछि, ताहि कारण सं शोधकर्ता सं आग्रह जे अपन शोध आलेख प्रकाशन लेल पठेबा सं पहिने तथ्य आ भाषाक शुद्धताक जांचक प्रति संतुष्ट जरूर भ' जाय। 'तीरभुक्ति' के ई अंक केहन लागल, जरूर बतायब।

– विनीत उत्पल

पाठक लोकनिसं आग्रह

प्रस्तुत अंकमे जाहि कोनो तरहक त्रुटि अभरय से ईमेलः teerbhuktimaithili@gmail.com **पर ईमेल कयल जाए। आगामी अंकमे सुधार सहित प्रकाशित कयल जाएत। धन्यवाद।**

- संपादक

दू सहोदरा भाषाक सम्बन्धक नवीकरण

✍ डॉ. रमानन्द झा 'रमण'

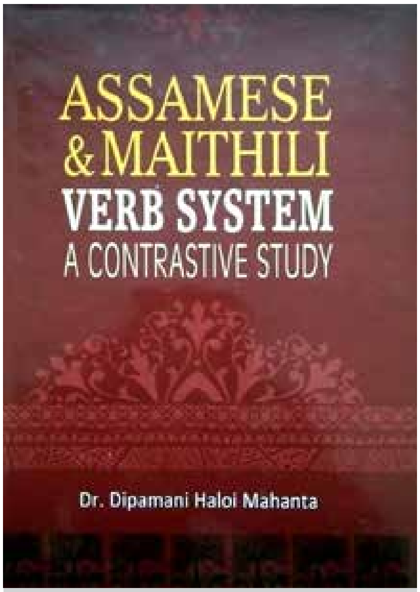

Assamese & Maithili Verb System : A Contrastive Study

रचनाकार	:	डॉ. दीपामणि हलोइ महन्त
प्रकाशक	:	सुप्रभ प्रकाशन, नलबाड़ी, असम
वर्ष	:	2017
मूल्य	:	₹ 300
पृष्ठ	:	278
विधा	:	शोध प्रबंध

डॉ. कनकलाल बरुआ (Early History of Kamrup)क अनुसार प्राचीन कामरूपमे आर्य संस्कृति एवं सभ्यताक प्रचार-प्रसार मिथिलाक माध्यमसं भेल। डॉ. महेश्वर नियोग (Studies in the Early History of Assam)क मत सेहो एही प्रकारक अछि। तात्पर्य जे मिथिला आ असमक सम्बन्ध अतिप्राचीन अछि। विद्यापति सम्पूर्ण पूर्वांचलकें प्रभावित कएने छलाह। एहि सभक माध्यम छल भाषा आ समान लिपि।

जॉर्ज अब्राहम ग्रिअर्सन लिखने छथि जे मैथिली, असमी आ बंगला भारोपीय आर्यकुलक भाषा थिक तथा मागधी अपभ्रंश सं विकसित अछि। अर्थात एकहि माइक पेटसं जनमल अछि: असमी आ मैथिली, सहोदरा। मुदा एमहर किछु गोटे दू माइक पेटसं जनमकें राजनीतिक लाभ-लोभें सेहो सहोदरा कहय लगलाह अछि।

डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी मानैत छथि जे पूर्वीय मागधीसं असमी, बंगला आ उड़िया विकसित भेल तथा केन्द्रीय मागधीसं मैथिली आ मगही। असमक भाषाशास्त्री यू.न. गोस्वामी असमीक विकास मागधी प्राकृतसं मानैत विकासक चारि टा अवस्था कहल अछि। मैथिली भाषाशास्त्री पं गोविन्द झा सेहो मिथिला भाषाक विकासक चारि चरण मानैत छथि। विकासक पहिल अवस्थाक उपलब्ध सामग्री 'चर्यापद' मैथिली आ असमीक सझिआ सम्पति थिक। आधुनिक असमीक विकास ईसाई मिशनरी द्वारा 1846 ई मे प्रकाशित 'अरुणोदोइ' पत्रिकासं मानल गेल अछि आ आधुनिक मैथिलीक विकास मनबोधकृत 'कृष्णजन्म'सं। ओहिना तिरहुता, बंगला आ असमी लिपिक विकास एकहि ठामसं भेल छैक। यैह कारण छैक जे सए-डेढ़ सए वर्ष पूर्वधरि तिरहुता लिपिक अभ्यासी हमरालोकनिक पुरुखा असमी आ बंगला बहुत सहजतासं बुझैत आ पढ़ैत छलाह। किन्तु रोमन आ देवनागरी लिपिक प्रचार-प्रसारसं सहोदरा भाषा-भाषीक बीच दूरी बढ़ि गेल। डॉ. दीपामणि हलोइ महन्तक प्रकाशित शोधप्रबन्ध Assamese & Maithili Verb System : A Contrastive Study ओही बिसरल-हेराए सूत्रकें जोड़ैत अछि।

प्रस्तुत पोथीक दीर्घ भूमिकामे असमी आ मैथिलीक विकासक चरण, उपलब्ध स्रोत-सामग्री एवं दुनू भाषाक सामान्य विशेषता फरिछाओल गेल अछि। पोथी पांच अध्यायमे विभाजित अछि: 1. असमी आ मैथिलीक धातु (क्रिया) 2. दुनू भाषाक धातुक (क्रियाक) वर्गीकरण, 3. असमी आ मैथिलीक क्रियारूपावली, 4. असमी आ मैथिलीमे ऋणात्मक शब्द/वाक्यक निर्माण तथा 5. दुनू भाषाक वाच्यक प्रकार तथा कर्तृवाच्य एवं कर्मवाच्य।

प्रत्येक अध्यायक अन्तमे ओहि अध्यायमे विवेचित दुनू भाषाक व्याकरणिक स्थितिमे साम्य आ वैषम्य विवेचित अछि।

डॉ. रमानन्द झा 'रमण' प्रख्यात आलोचक छथि। आलोचनाक नौ टा पोथी, 39 टा पोथी संपादित आ प्रकाशित। चेतना समिति, पटना, त्रैमासिक पत्रिका *'घर-बाहर'* केर संपादक।

संपर्क : *फ्लैट नं. 24, झेलम अपार्टमेंट, पाटलिपुत्र पथ, राजेन्द्र नगर, पटना-800016*

मो. *9334335482, 9472106459,* ***ईमेल :*** *rnjharaman@gmail.com*

जेना एकटा उदाहरण अछि। ओ लिखैत छथि जे दुनू भाषाक धातु दू प्रकारक अछि प्राथमिक (primary verb-roots) आ सहायक (secondary verb-roots), दुनू भाषाक क्रियापद दू प्रकारक छैक: स्वरान्त एवं व्यंजनान्त। किन्तु दुनू भाषाक धातुक स्वनमीय गठन एकसमान नहि छैक। दुनू भाषाक विभिन्न धातुक विश्लेषणसं ई स्पष्ट कएल गेल अछि जे दुनू भाषाक धातु एवं व्यंजन-स्वर-व्यंजनान्त सामान्यत: दुनू भाषामे एक समान अछि। निष्कर्षमे डॉ. दीपामणि असमी आ मैथिलीक क्रियापदमे कोन-कोन बिन्दुपर आ कोन कारणें साम्य आ वैषम्य छैक तकरहु फरिछाओल अछि। भौगोलिक एवं सामाजिक स्थितिक कारणें दू सहोदराक स्वरूप आ सम्बन्धमे कालक्रमे आएल परिवर्तनकें दर्शाबयबला ई एक परम उपयोगी आ संग्रहणीय पोथी थिक। आशा करैत छी विद्वत् समाजमे एहि पोथीक आदर अवश्य होएत। मैथिलीक भाषावैज्ञानिक अध्ययनक प्रसंग अनेक पोथी अछि, किन्तु दू सहोदरा भाषाक तुलनात्मक अध्ययनक प्राय: ई प्रथमहि पोथी थिक।

डॉ. दीपामणि हालोइ महन्त गुवाहाटी विश्वविद्यालयक असमी विभागमे प्राध्यापक छथि। ई पूर्व क्षेत्रीय भाषा केन्द्र, भुवनेश्वरमे किछु दिन मैथिलीक प्रशिक्षण लेलनि, किन्तु पारिवारिक कारणवश बीचहिमे चल गेलीह। परन्तु मैथिली भाषा-साहित्यक प्रति हिनकामे जे अनुराग छलनि, तकरहि परिणाम थिक- Assamese & Maithili Verb System: A Contrastive Study.

एहि पोथीक प्रसंग पं गोविन्द झा लिखैत छथि- She came to me to learn some intricacies of Maithili language especially verb forms. And surprisingly I found her quite conversant with Maithilialong with itsall complexties. It is evident throughout the present work. I thank theauther for her work.' ■

मिथिलाक्षर ज्ञान प्रतियोगिता - 6

𑒏𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒧𑒰𑒢

𑒣𑒼𑒐𑒩𑒱 𑒮 𑒢𑒯𑒨𑒪𑒾𑒿 ,𑒑𑓀𑒑𑒰 ।𑒑𑓀𑒑𑒰 ।

𑒥𑒯𑒻𑒪𑒾𑒿।

𑒁𑒡𑒰 𑒡𑒼𑒞𑒲 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒪𑒾𑒿,𑒁𑒡𑒰 𑒡𑒼𑒞𑒲 𑒌𑒜𑓃𑒪𑒾𑒿।

𑒖𑒼𑒞𑒪 𑒏𑒼𑒛𑓃𑒪 𑒐𑒹𑒞 𑒏𑒹𑒩,𑒜𑒹◌𑓃𑒣 𑒊𑒏

𑒮𑒩𑒱𑒢𑓂𑒨 𑒧𑒰𑒿𑒑𑒱 𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒒𑒩 𑒁𑒨𑒪𑒾𑒿।

𑒣𑒰𑒍𑒪 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒩𑒿𑒩𑒠𑒰𑒢।𑒯𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒕𑒲

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 -𑒫𑒰𑒿𑒮𑒲 ,𑒯𑒧 𑒨𑒰𑒔𑒏 𑒣𑒩𑒧 𑒧𑒯𑒰𑒢।

𑒏𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒧𑒰𑒢

𑒣𑓀 𑒏𑒾𑒬𑒪 𑒗𑒰

मिथिलाक्षर चिन्हु आ ईनाम पाबु

अखिल भारतीय मिथिला संघ समस्त मैथिल संस्कृति आ पहिचानक संरक्षण लेल सदिखन प्रयत्नशील अछि। एहि क्रममे नव प्रयास अछि मैथिलजन कें मिथिलाक्षर सं जोरबाक प्रयास।

एहि प्रयासमे तीरभुक्तिक प्रत्येक अंकमे किछु सामग्री मिथिलाक्षरमे प्रकाशित कएल जाएत। जकर देवनागरी लिप्यांतरण पाठकगण सं आमंत्रित रहत।

सर्वश्रेष्ठ लिप्यांतरण कय पठेनिहार पाठक कें अखिल भारतीय मिथिला संघ दिसि सं 500 टाका मूल्यक पुरस्कार प्रदान कएल जाएत।

लिप्यातंरण क' अपन प्रविष्टि teerbhuktimaithili@gmail.com पर ईमेल सं वा संपादकीय कार्यालय (20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली-110001) पर डाक सं पठाओल जा सकैछ।

मिथिलाक्षर ज्ञान प्रतियोगिता (क्रमांक-4 केर विजेता)

नीरज सिंह, 32, माधवकुंज, रोहिणी सेक्टर-9, नई दिल्ली-85

सराहनीय प्रयास : 1. पूनम झा, सी-12, दुग्गल कालोनी, देवली रोड, खानपुर, दिल्ली-62

2. मधु चौधरी, बी-1/644, मदनगीर, नई दिल्ली

आस्ट्रेलियाक दर्शन करबैत डायरी

✍ **रमण कुमार सिंह**

सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहां, जिंदगानी गर मिली तो ये जवानी फिर कहां!!

नेनपन सं ई शेर सुनैत आबि रहलहुं अछि, जाहि मे एकटा प्रच्छन्न अर्थ इहो छिपल छैक, जे घुमबा-फिरबा लेल जवानिये सबसं उपयुक्त समय होइत छैक। मुदा मैथिली केर मूर्धन्य कथाकार सुभाषचंद्र यादव बुढारियो मे दुनिया घूमि अयलाह अछि, आ तेकरे अनुभव हमरा सबहक बीच 'रमता जोगी' पोथी के माध्यम सं बिलहलनि अछि।

डायरी शैली मे लिखल जयबाक बादो ई पोथी एकटा कथात्मक रचनाक आस्वाद प्रदान करैत अछि आ पाठक कें बान्हि के रखबा मे सक्षम अछि।

कोनो पोथी पढ़ैत काल भाषा-शैली, शिल्प, प्रवाह, कथा रस, विजन आदि के अलावे जे सबसं महत्वपूर्ण चीज पोथी मे अछि, ओ थिक-पोथीक ध्वनि। माने पोथी सं की ध्वनित भ' रहल अछि अथवा पोथी की कहि रहल अछि। जरूरी नहि, जे लेखक सब बात स्पष्ट रूपें व्यक्त करय, इहो भ' सकैछ, जे पोथीक ध्वनि अहां के दू पांतिक बीचक खाली जगह सं ध्वनित हुअए। दू पांतिक बीचक खाली जगह पाठकीय रचनात्मकता कें उड़ान भरबा लेल स्पेस दैत अछि। स्वाभाविक पाठक सबहक जिज्ञासा होयत जे एहि पोथी मे की सब सुनाइ पड़ल अथवा पोथी सं की ध्वनित

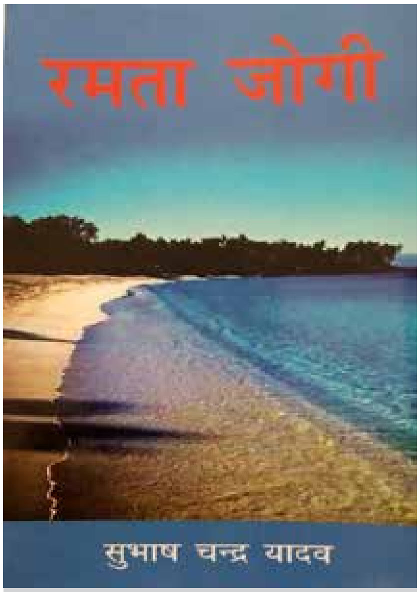

रमता जोगी

रचनाकार	:	सुभाष चन्द्र यादव
प्रकाशक	:	अंतिका प्रकाशन प्रा. लि., गाजियाबाद
वर्ष	:	2019
मूल्य	:	पांच सय टाका
पृष्ठ	:	172
विधा	:	यात्रा वृतांत

भ' रहल अछि।

ई पोथी मे सब सं पहिने जे ध्वनित भेल अछि, ओ ई जे तमाम तरहक हिंसा, क्रूरता, दुख-दैन्य आ विडम्बना केर अछैतो ई दुनिया बहुत सुंदर आ देखनुक अछि। एकर प्रशंसा कयल जयबाक चाही आ एकरा आओर सुन्नर बनेबाक प्रयास कयल जयबाक चाही। मनुक्खक एकटा पैघ गुण थिक करुणा, जेकरा पर बुद्ध सेहो जोर देने छलाह। एहि पोथी मे मानवीय करुणाक एकटा प्रसंग देखल जाए-

'हम सभ रेस्टुरेंटक अढमे एकटा बेंच पर बैसि जाइत छी। एतय रौद त' छैक, मगर हवा नहि। सामने एकटा आस्ट्रेलियाई परिवार नीचामे घास पर बैसल छैक। परिवारक एकटा युवती फ्रेंच फ्राइ फेकि रहलि छैक। पच्चीस-तीसटा चिड़ै के झुंड ओहि पर झपटै छैक। पहिने लागल जेना पड़बाक झुंड छिऐक। लेकिन ओ पड़बा नहि, सीगल रहैक। से सौम्य बतेलथि। तकर बाद झुंडमे एकटा पड़बो आबि गेल। ओकर आकार-प्रकार आ रंगरूप ठीक ओहने, जेहन भारतमे होइत छैक। ओ युवती एखनो फ्रेंच फ्राइ फेकि रहल छैक आ ओहि पर सीगल के लुधकब देखि अति आनंदित भ' रहल छैक।'

प्राकृतिक सौंदर्य के एक उदाहरण सेहो देखल जाय- 'लाइब्रेरीके एकटा भाग एहन छैक, जतय बैसला पर अहांकें झील देखायत। गाछ-बिरीछ देखायत। प्राकृतिक सुंदरता सं भरल एहन रोमांटिक जगह पर बैसि क' पढ़बा-लिखबामे किछु दोसरे तरहक आनंद छैक। तैं ओ भाग कखनो खाली नहि रहैत छैक। पांच टा टेबुल लागल छैक, पांचों भरल रहै

वैचारिक पत्रिका 'समयांतर', प्रतिष्ठित प्रकाशन गृह 'राजकमल प्रकाशन' के संपादन काज केला के बाद टीवी पत्रकारिता आ सम्प्रति 'अमर उजाला' दैनिक केर संपादकीय पृष्ठ पर प्रमुख उपसंपादक पर कार्यरत। एकटा हिंदी कविता 'बाघ दुहने का कौशल' आ मैथिलीमे कविता संग्रह 'फेर सं हरियर' आ 'दुःस्वप्नक बाद' प्रकाशित।

संपर्क : *ऑफिसर सिटी (वन) राजनगर एक्सटेंशन, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, पिन-201017*

मो. *9711261789,* ***ईमेल :*** *kumarramansingh@gmail.com*

छैक। आइ संयोगसं एकटा खाली रहै, जाहि पर हम बैसि गेल छी। बीच-बीचमे जे विराम लैत छी त' परिवेशक सौंदर्य ताजगी आ स्फूर्तिसं भरि दैत अछि।'

मनुक्खक जतेक कार्य-व्यापार अछि, ओकर अंतिम लक्ष्य होइत अछि, सुख प्राप्त करब। घुमक्कड़ियो के उद्देश्य वैह होइत छैक, जे दैनंदिन जिनगीक झंझटि सं फुर्सति पाबि थोड़े क्षणक लेल सुख पाबि ली। यैह कारण थिक, जे जखन पर्यटन समाप्त करि लेखक स्वदेश घुरय लागैत छथि, तें हुनक पुत्रवधु मधु उदास भ' के कहैत छथिन- 'आब फेर सए वैह आफिस, वैह रूटीन!' ई एक पंक्ति के हाहाकार सं ध्वनित होइत अछि, जे अपन प्रियजन सं कनेको दिनक बिछोह कतेक दुखदायी होइत छैक। मुदा जीवन एहिना चलैत छैक। जिनगी आर की, बस मिलन आ बिछोहक कथे त' थिक। आ एही दू ध्रुवक बीच जिनगीक आन कार्य व्यापार घटित होइत छैक।

सुभाष चन्द्र यादव शब्द खर्च करबाक मामिला मे बहुत कंजूस लेखक छथि, मुदा ओ कमे शब्द मे संकेत मे अपन बात कहि दैत छथिन। हुनक लेखन अर्थ गांभीर्य सं भरल रहैत छनि। एहि पोथी मे दुनिया के समक्ष उपस्थित तमाम तरहक चुनौतीक दिस ओ इशारा कयने छथिन, जेना हिंसा, पर्यावरण क्षरण, जारवा जनजाति केर समस्या आदि। वियतनाम मे घुमैत काल हुनका अपन संगी आ मैथिलीक महत्वपूर्ण दिवंगत कवि-कथाकार महाप्रकाश मोन पड़ै छथिन, आ हुनक मुंह सं अनायास एगो हाहाकार बहरायत छनि- 'कतय छैं रे महाप्रकाश?' जेना बाबा यानी यात्री जी कहने छलखिन जे सबसं पहिने मोन पड़ै अछि अपने भूमिक लोक, तहिना सुभाषचंद्र यादव कें बेर-बेर अपन लोक सब मोन पड़ैत छनि। एतय धरि, जे ओ विदेशी होटल मे कोनो व्यंजनो भोग लगबय छथि, ते गामक तीमन-तरकारी सं ओकर तुलना करैत छथि। सिगरेट आ पान खरीदैत काल ओ ओकर मूल्यक तुलना भारतीय मूल्य सं करैत छथि आ ई प्रसंग पढ़ैत काल उदय प्रकाशक कहानी 'राम सजीवन की प्रेमकथा' पाठकक मोन पड़ि सकैत अछि, जाहि मे कथानायक सोचैत अछि, जे हमरा पढाइ मे जतेक खर्चा होयत, ते ओहि मे एतेक अनाज बिका जायत। कने ई प्रसंग देखल जाय- 'लाइब्रेरीसं निकलि क' हम सिगरेट कीनैत छी। भारत सं जे दू डिब्बा अनने छलहुं, से आइ भोरे खतम भ' गेल। एहिठाम पान नहि भेटैत छैक। पान भेटैत त' वैह खइतहुं। सिगरेट बड्ड महग। जे सबसं सस्ता, तकर एक डिब्बाक दाम सत्ताइस

एहि पोथी के पढ़ि इहो ध्वनित होइत अछि, जे पुरुषक तुलना मे स्त्री कोनो चीज कें बेसी बारीक (गंहिकी) नजरि सं देखैत छथि आ हुनक दृष्टि मे वस्तुनिष्ठता होइत छैक। उदाहरण लेल एहि पोथी मे वर्णित हुनक वा हुनक पुत्र आओर हुनक पुत्रवधू केर दृष्टि कें देखल जा सकैत अछि।

डॉलर। मतलब एक सिगरेट के दाम अड़सठ रुपैया।'

एतबे नहि, रचनाकार जीवन-मूल्यो के मामिला मे तुलनात्मक अंतर कें स्पष्ट करैत चलैत छथि। एक प्रसंग- 'आस्ट्रेलियाई लड़की आ महिला अर्धनग्न अवस्था मे छैक। मात्र बिकिनी (कोपीन, बुट्टा) आ ब्रा (कंचुकी) पहिरने। समुद्रतट पर एहन परिधान ओकरा सभ लेल सहज-स्वाभाविक छैक। नैतिकता, अनैतिकता, लाज, संकोच सं ऊपर। निरपेक्ष।'

एहि पोथी के पढ़ि इहो ध्वनित होइत अछि, जे पुरुषक तुलना मे स्त्री कोनो चीज कें बेसी बारीक (गंहिकी) नजरि सं देखैत छथि आ हुनक दृष्टि मे वस्तुनिष्ठता होइत छैक। उदाहरण लेल एहि पोथी मे वर्णित हुनक वा हुनक पुत्र आओर हुनक पुत्रवधू केर दृष्टि कें देखल जा सकैत अछि।

एहि पोथी सं इहो पता चलैत अछि, जे ओ जाहि तरहें सृष्टि के सौंदर्य के सराहना करैत छथि, जाहि तरहें नव-नव जगह, नव-नव चीज देखबाक उत्साह हुनका में बांचल छनि, से हुनक युवापन के परिचायक थिक।

किछु लोक कहि सकैत अछि, जे एत्तेक पाइ खर्च क' के दुनिया घूमि मौज-मस्ती करब, उपभोक्तावादी संस्कृति केर परिचायक थिक, मुदा हमरा बुझने एना सोचब गलत होयत। जाधरि अहां दुनिया नहि घूमब, नव-नव जगह, नव आविष्कार, नवाचार कें नहि देखब, ताधरि अपना घरक कमी आ खराबी नहि देखार होयत। आ जा धरि अपन कमी कें नहि बूझब, ताधरि अपना मे सुधार कोना करब! अपना घर मे बन्न रहि अपन अगल-बगल के बदलाव कें कहां देखि पबैत छी हम! कहां देखि पबैत छी अपन आस्तीन मे छिपल सांप! तें पर्यटन कें सार्थक रूपें समग्रता मे देखल जयबाक चाही। मैथिली सं ल' के दुनियाक विभिन्न भाषा-साहित्य मे पर्यटन साहित्य अछि आ से पढ़लो बहुत जाइत अछि।

हुनक आने पोथी जकां एहि पोथी मे सेहो हरायल-भुतिआयल शब्द आ मोहाविरा के प्रयोग पाठकीय आनंद मे वृद्धि करैत अछि।

किछु उदाहरण देखल जाय-तीमन, कचका, मेघौन, चहटगर, लुधकब, ठोह पाड़ि के कानब, कोपीन, बुट्टा, मलकैत, कजरी, बुनछेक, हाक, धुस-धुस खसब, खखार, फोंड़ी, मठौत, ऊद चढ़ौनाइ, भुटारि, परतार, टाननाइ, चांप, हद्दोघरि आदि।

(शेष पृष्ठ 16 पर)

सामाजिक, ऐतिहासिक आ धार्मिक यात्रा करबैत पोथी

✍ डॉ. सत्येन्द्र कुमार झा

यद्यपि मैथिली साहित्यमे कथा, कविता, उपन्यास, नाटक, बालरचना, लघुकथा आ अन्य विधाक रचना सृजित होइत रहैत अछि आ एम्हर पुस्तककें यदि साहित्य-समृद्धिक सूचक मानल जाए त' ई कहबामे कोनो भांगठ नहि हेबाक चाही जे मैथिली साहित्य अपन सर्वांगीण समृद्धिक दौरसं गुजरि रहल अछि। ई बात सोलहो आना सत्य थिक जे बिनु मौलिक रचनाकें साहित्यक समीक्षा विधा दुबरा जायत आ अपन अंतिम परिणतिकें प्राप्त करत, तें मौलिक रचनाक आवश्यकता छैक आ ई प्रसन्नताक गप्प जे एम्हर पोथीक प्रकाशन बेसी सं बेसी भ' रहल अछि। मुदा एकटा प्रश्न एत' सहजहिं ठाढ़ भ' जाइत अछि जे आखिर एहि प्रकाशनक दौरमे, साहित्य सृजनक दौरमे शोधपरक रचना वा अनुसंधानात्मक रचना किएक नहि सोझां आबि रहल अछि। एकर जबाब आर जे किछु होउ मुदा एकटा उत्तर इहो छैक जे शोधपरक रचना वा अनुसंधानात्मक रचना समय मंगैत अछि, दृष्टि मंगैत अछि, पर्यटक बनबाक खगता महसूस करैत अछि आ विचार-केन्द्र मंगैत अछि आ तकर अभाव यदि शत प्रतिशत नहियो कही त' डिसटिंगक्शन परसेंट सं त' बेसी छैहे।

मुदा किछु रचनाकार मैथिलीक कोषक श्रीवृद्धि मात्र अपन एहि तरहक शोधपरक अथवा अनुसंधानात्मक रचने सभसं निरंतर करैत देखल जाइत छथि, जाहिमे एकगोट विशिष्ट सम्मानित नाम पंचानन मिश्रक छनि। हिनक अनेक पोथी प्रेसक बाटे पाठकक सोझांमे आयल अछि। सभ पोथी किछु कहैत अछि, पाठकक पाठकीय यात्राक पाथेय बनैत अछि। एतबे नहि, बहुत किछु जनतब दैत अछि जाहिसं ज्ञान अपन नव परिचिति बनबैत अछि। हिनक सद्यःप्रकाशित पोथी 'महाकुम्भ' एकगोट विशिष्ट पोथी अछि, जकर प्रत्येक पृष्ठमे किछु एहन बात भेटैत अछि जे ज्ञातव्य नहि थिक। अर्थात् ई पोथी अपन विषयक नव दृष्टिएं समीक्षा करैत अछि आ एहि पोथीक इहो विशेषता सर्वमान्य अछि जे हमरा बुझने एहि विषय पर एतेक प्राचीन आ अर्वाचीन शीर्षकमे संकलित एखन धरि कोनो पोथी अपन भाषामे प्रकाशित नहि भेल अछि।

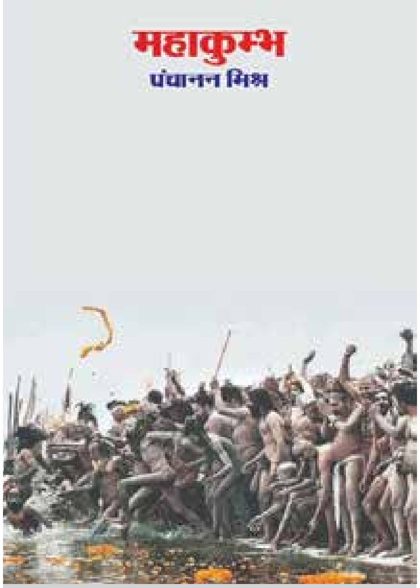

महाकुम्भ

रचनाकार	:	पंचानन मिश्र
प्रकाशक	:	नवारंभ, मधुबनी/ पटना
वर्ष	:	2017
मूल्य	:	₹ 400
पृष्ठ	:	160
विधा	:	यात्रा वृतांत

लेखकीय आ परिशिष्ट मिलाक' ई पोथी उन्नैस शीर्षान्तर्गत बांटल गेल अछि। लेखक अपन लेखकीयमे एकरा एकगोट यात्रा-वृत्तान्त कहैत छथि, मुदा हमरा बुझने ई एकटा शोध थिक जकरा पूर्ण करबा लेल लेखक यात्रा केलनि अछि।

पहिल अध्यायमे प्रयाग महाकुम्भ मेलाक विशद आ व्यापक वर्णन कएल गेल अछि, जाहिमे प्रयाग स्टेशनक बदलैत मुंह-कानसं ल'क' महाकुम्भ स्थल धरि पहुंचबाक वर्णन भेटैत अछि। कुम्भ मेलाक रौनकक वर्णन सेहो कएल गेल अछि आ एतुका जे मुख्य स्नान मकर-संक्रान्ति, माघी अमावस्या, बसंत पंचमी आ शिवराति दिन होइत अछि, ताहिमे कोन तरहक इंतजाम होइत अछि, गंगोत्री धामक पवित्र देवछड़ीक दर्शन लेल कोना श्रद्धालु आफन तोड़ैत रहैत छथि, तकर जीवंत चित्रण एहि अध्याय मध्य कएल गेल अछि। लेखक कुम्भकें

डॉ. सत्येन्द्र कुमार झा दरभंगा स्थित सीएम साइंस कॉलेजमे सहायक प्राध्यापक छथि।
प्रकाशन : 2007 मे लघुकथा संग्रह - 'अहींकें कहै छी' आ 2018 मे कविता संग्रह -'स्वप्नमे इन्द्रधनुष' प्रकाशित।
मैथिली आ हिन्दीक लब्धप्रतिष्ठ पत्र-पत्रिका आ संग्रहमे अनेक रचना सभ प्रकाशित।
संपर्क : सहायक प्राध्यापक, मैथिली विभाग, सी.एम. साइंस कॉलेज, दरभंगा-846 004
मो. 9835684869, ईमेल : satyaprit69@gmail.com

प्राचीन वर्ण व्यवस्थाक पुनरीक्षण आ पुनर्व्यवस्था मानैत छथि जे सत्य अछि। बदलैत परम्पराक दर्शन सेहो एत' भेटैत अछि, जेना जातीय दुर्गंधक आवरणमे लपटायल भारतीय समाजमे जखन कोनो दलित संन्यासीक सम्मान होइत अछि त' महाकुम्भ सन परम्परा अत्यधिक प्रासंगिक भ' उठैत अछि। संगहि किछु अद्‌भुत दृश्य सेहो उपस्थित भेल अछि जेना साधु संग जानवरक सधुक्कड़ि प्रवृत्ति। एकरा संगतिक असरि कहल जाए वा गंभीर प्रशिक्षण मानी वा एहिमे देवत्व स्थापित करी से प्रत्येक माथक पृथक-पृथक सोच भ' सकैत अछि। संन्यासी लोकनिक अखाड़ा, दसनामी परम्परा आदिक चर्च अनभिज्ञ लोकनिकें एहिसं पूर्ण भिज्ञ करबामे सक्षम अछि। संगहि धार्मिक परम्परामे गीतक केहन अनुपम स्थान अछि, से महाकुम्भ यात्राक क्रममे लेखक अनुभव केलनि आ तकर उल्लेख क' पाठककें सेहो गीतनादक महत्वसं अवगत करौलनि अछि। शोधकर्त्ताक एकटा समूहकें एहि क्षेत्रमे घूमब, घूरियायब एहि बातक प्रमाण थिक जे एखन बहुत किछु एहन छैक जे अन्वेषित, अनुसंधानित नहि भ' सकल अछि।

दोसर अध्यायमे शाही स्नानक वर्णन भेटैत अछि। शाही स्नान चारि अवसर पर कएल जाइत अछि, जकर उल्लेख एहि आलेखक पूर्वमे कैल गेल अछि। मकर संक्रान्तिमे शाही स्नान करबाक जे परम्परा छैक, तकर पाछां मकर संक्रान्तिक महत्वे प्रमुख अछि। एहि दिन गंगाजीकें भगीरथ द्वारा पृथ्वी पर आनल गेल छलनि। शाही स्नानमे की पुरुष, की महिला लोकनि, की भारतीय, की विदेशी सभ तरहक लोक भेटैत छथि जे वैश्वीकरणक धार्मिक पक्षकें रेखांकित करैत अछि। यद्यपि एहू आयोजनकें आधुनिकता नहि बकसलक आ तें लेखक ठाम-ठाम धर्म आ धार्मिक आचरणकें नव रंग-ढंगमे देखैत छथि। मुदा सभ किछु बदललाक बादो लोकक विश्वास सुरक्षित छैक, संरक्षित छैक। तें जखन नागा संन्यासीक स्पर्शित बलुआही माटि उठेबाक क्षण अबैत अछि त' लोक अपन आधुनिक विचारकें कातक' माटिक प्राप्ति लेल दौड़ि जाइत छथि। मेलामे संचार क्रान्तिक प्रभाव सेहो दृष्टिगत होइत अछि, जे कतौसं अनसोहांत नहि अछि।

पोथीक तेसर अध्यायमे नागा संन्यासीक सम्पूर्ण चित्रण कएल गेल अछि, जाहिमे अनेक जानकारी प्राप्त होइत अछि। मैथिलीमे नागा संन्यासी पर एहिसं विशिष्ट आलेख एखनधरि पढ़बा लेल नहि भेटल अछि। कतेको नव जानकारीसं युक्त अछि ई अध्याय। नागा संन्यासी बनबाक घोषणा महाकुंभहि केर अवसर पर कएल जाइत अछि। सात राउण्डमे ई प्रक्रिया पूर होइत अछि। नागा संन्यासी लोकनिक जीवनमे भस्मक बड़ महत्व होइत छनि आ भस्म कोना तैयार कएल जाइत अछि, से जानब एकटा रोचक बात थिक। संगहि नागा साधुक संस्कार कोना होइत अछि तकर विशद वर्णन कएल गेल अछि, जे लेखकक गहन निरीक्षण आ व्यापक जिज्ञासासं उत्पन्न प्रश्नक समाधानक रूपें एहि पोथीमे द्रष्टव्य होइत अछि। एकटा रोचक तथ्य आरो छैक जे एखनधरि हमरालोकनि सोलहश्रृंगारक चर्च आ वर्णन सुनैत रहलहुं अछि मुदा सतरहो श्रृंगार होइत छैक से एहि पोथिएक माध्यमसं ज्ञात भेल। नागालोकनि सतरहश्रृंगार करैत छथि। एकर अतिरिक्त अखाड़ामे कोनो बहरूपिया ने आबि क' सन्हिया जाय ताहि लेल कोर्डवर्डक प्रयोग सेहो कएल जाइत छैक, जकरा 'टकसार' कहल जाइत छैक। नागा लोकनि दस गोट पदवी पबैत छथि। एहि प्रकारें एहि अध्यायमे नागा लोकनिक सम्पूर्ण जीवन ओ कार्यकलापक समधानल वर्णन कएल गेल अछि।

मुदा संन्यासिनी लोकनिक मध्य विचरण करैत लेखक एहि निष्कर्ष धरि पहुंचैत छथि जे समयक अनुसार सभ किछु हाइटेक भेल जा रहल अछि, खाहे ओ पुरुष भक्त होथि वा स्त्री भक्त, खाहे ओ संन्यासी होथि वा संन्यासिनी। मायाक प्रति आकर्षण बढ़ल अछि आ से महाकुम्भोमे देखार भ' रहल अछि।

चारिम अध्याय संन्यासी लोकनि पर केन्द्रित अछि, जाहिमे हुनक जीवन ओ अन्यान्य गतिविधि सभक वर्णन भेटैत अछि। लेखक अपन एहि यात्रामे अनेको संन्यासी लोकनिसं परिचित होइत छथि। मुदा लेखककें एकटा बातक बड़ क्षोभ भेलनि जे मिथिलांचलक संन्यासी लोकनि सेहो बाहर जा अपन भाषाक परित्याग क' दैत छथि आ मैथिली भाषासं परहेज करैत छथि। ई बात लेखककें बहुत आहत करैत छनि।

अगिला अध्याय संन्यासिनी पर केन्द्रित अछि, जाहिमे संन्यासिनी बनबाक सम्पूर्ण विधिकें रेखांकित कएल गेल अछि। हुनकालोकनिक सात नियमक उल्लेख भेटैत अछि जकर पालन कइएक' कियो संन्यासिनी बनि सकैत छथि। लेखककें भांति-भांतिक संन्यासिनी सभ भेटैत छथिन, कियो कोनो हाकिमक बेटी त' कियो राधे मां। स्त्री द्वारा पिण्डदानक संदर्भमे एकटा महत्वपूर्ण बात भेटैत अछि जे जत' गृहस्थक शास्त्रीय विधानक अनुसार गयामे स्त्रीकें पिण्डदानक अधिकार प्राप्त छनि, ओतहि एकगोट संन्यासिनी सभ स्थान पर पिण्डदानक अधिकारी थिकी। मुदा संन्यासिनी लोकनिक मध्य विचरण करैत लेखक एहि निष्कर्ष धरि पहुंचैत छथि जे समयक अनुसार सभ किछु हाइटेक भेल जा रहल अछि, खाहे ओ पुरुष भक्त होथि वा स्त्री भक्त, खाहे ओ संन्यासी होथि वा संन्यासिनी। मायाक प्रति आकर्षण बढ़ल अछि आ से महाकुम्भोमे देखार भ' रहल अछि।

लेखक आगां भू-समाधिक वर्णन करैत छथि जे पाठककें एकगोट

अलौकिक संसारक यात्रा करबैत अछि। समाधि लैत देखब आ ओकर विभिन्न रूप सभसं परिचित हैब जतबे लेखकमे छगुन्ता भाव जगौने हैत, ततबे पाठक सेहो एहि तरहक भाव संग यात्रा करैत छथि। वस्तुत: भू-समाधि सेहो एकगोट योग साधने थिकै मुदा ई सभसं संभव नहि भ' सकैत अछि। एहिसं सांस पर अधिकार पाओल जा सकैत अछि। नागा बाबाजी सभक लेल ई बहुत सहज क्रिया अछि।

ई पोथी यद्यपि एकटा महत्वपूर्ण धार्मिक आस्था आ प्रक्रिया पर केन्द्रित पोथी थिक मुदा एकर सभसं पैघ विशेषता ई अछि जे एकर विभिन्न अध्यायमे सामाजिक सरोकार झलकि उठैत अछि। मेहतरानि नामित अध्याय पाठकके एहि लेल चौंकबैत अछि जे कोनो धर्म अथवा धर्मसं जुड़ल यात्रा पोथीमे एहि तरहक प्रयोग पहिले बेर देखबामे अबैत अछि, जे लेखक समाजक ओहि वर्गक कार्यकलापकें सेहो अपन विषयवस्तु बनौलनि अछि, जे अदौसं समाजमे उपेक्षित रहल अछि आ जकर गणना सदैव नेपथ्यक मनुक्खक रूपमे होइत रहल अछि। मेहतरानिक स्थिति-प्ररिस्थितिक सहज आ सटीक वर्णन एहि अध्यायमे कएल गेल अछि आ सामाजिक परिवर्तनक दृष्टिएं हुनक मूल्यांकन कएल गेल अछि। सुलभ इंटरनेशनलक आगमनसं पूर्व हुनक कतेक दयनीय स्थिति छल से सहजहिं अकानल जा सकैत अछि। जकर स्पर्श आ गोहत्या एकहि रंगक अपराधक श्रेणीमे अबैत छल, से आइ मुख्यधारामे आबि गेल छथि, ई सामाजिक प्रगतिक एकगोट ठोसगर उदाहरण थिक।

पोथीमे एकटा आर रोचक अध्याय अछि जाहिमे पाकिस्तानक चारि गामसं आयल लोक सभक वर्णन अछि, जे महाकुम्भमे अपन उपस्थिति दर्ज करैत छथि। ई सभ सिंध प्रान्तक वासी छला जे तें सिंधी छथि। ई सभ मंडली संग आयल रहथि आ एतय रहि शाही स्नान केला आ फेर पूजा-पाठ, प्रवचन आदिमे संलग्न होइत गेला। लेखकक लेल पाकिस्तानक चारि गामसं आयल ई श्रद्धालु लोकनि पाकिस्तानक प्रति एकटा भरोस सेहो स्थापित करैत बुझना जाइत अछि, जे कतबो किछु होमय, पड़ोसीक सहभागिता हेबे करैत छैक।

पोथीमे संक्षिप्तेमे मुदा आत्महत्या पर केन्द्रित एकटा अध्याय सेहो अछि, जाहिमे त्रिवेणीमे आत्महत्याक संदर्भमे जानकारी देल गेल अछि। एत' आत्महत्या करबाक सेहो एकगोट दीर्घ परम्परा रहल अछि। वस्तुत: धार्मिक दृष्टिएं एत' आत्महत्या करब धर्मविरूद्ध नहि मानल जाइत अछि। आत्महत्या वा कही त' आत्मत्यागक उल्लेख अबुल फजलक आइने अकबरीमे

लेखक द्वारा कुम्भसं संबंधित अद्यावधि प्रकाशित पुस्तकक सेहो विवरण ताकल गेल आ उचित स्थान पर एकर विवरण लेखक द्वारा देल गेल अछि, जे आगामी अनुसंधान आ शोध कार्यकें मंजिल धरि पहुंचाबैमे साधक बनत। लेखक एहि पोथीक एक-एक अध्यायक लेखनमे अति सूक्ष्म दृष्टि आ गहन खोजी प्रवृतिक संग उपस्थित भेल छथि।

सेहो भेटैत अछि। संगहि एपीग्राफिया इंडिकामे प्रयागमे शरीर त्यागबाक धार्मिक व्यवस्थाक जानकारी सेहो देल गेल अछि। आनो आन पोथी सभमे एकर उल्लेख आयल अछि। कहबाक अभिप्राय जे एत' आबि अपन प्राण उत्सर्ग करबा हेतु लोक सभ इच्छुक रहैत छला। मुदा आब ई परम्परा समाप्त भ' गेल अछि मुदा लेखक अनुसंधान क' क' एहि परंपराक संदर्भमे पाठककें जनतब देलनि अछि।

तहिना एहि महाकुम्भक मध्य इलाहाबाद स्टेशन पर भगदड़ मचि गेला सं अनेक लोग मारल गेला, से लेखककें बहुत आहत केलकनि। ई घटना कोनो एकबेर नहि भेल अछि, अपितु अनेक बेर भेल अछि, मुदा प्रशासन आदिक सक्रियता जतबा हेबाक चाही ओतेक नहि रहबाक कारणें एहि तरहक दुर्घटना पर पूर्णविराम नहि लागल अछि।

महाकुम्भमे मीडियाक सक्रियता सेहो उल्लेखनीय रहल अछि। प्राय: सभ तरहक इलेक्ट्रानिक मीडियाक जमघट ओत' लागल रहैत अछि। लेखक सेहो सभ मीडियाक अंतर्कथा बुझबाक लेल ओकर इर्द-गिर्द घूमैत रहैत छथि। एहि घूमबाक क्रममे मार्क टुलीसं भेंट होइत छनि, जे एकटा उपलब्धि सन लगलनि। दरअसल मीडिया सेन्टरमे घूमबाक क्रममे लेखक भारतीय ओ विदेशी पत्रकारिताक कार्यपद्धतिक अंतरकें स्पष्ट अनुभव केलनि आ विदेशी पत्रकारक सक्रियता हुनक विश्वसनीयता कायम करबामे सक्षम बनबैत अछि। लेखककें पत्रकारिताक ई स्वरूप रुचिगर लगलनि।

तीर्थस्थल पर निशांपानिक प्रचलन सेहो देखबामे अबैत अछि। महाकुम्भमे लेखककें गांजाक चलन बेसी देखबामे अयलनि। साधु-संतक मध्य गांजा पीबाक बेसी प्रचलन देखाय पड़ल छलनि। लेखक एहूमे अपन शोधयात्रा जारी रखलनि। जे गांजा भरत से आगि नहि लगाओत, दोसरकें दहिने हाथमे चीलम थम्हाओत, चीलममे गांजा पझाइत छोड़ि देब अनुचित बुझत आदि आदि। संगहि एहि अध्यायमे लेखक ओहि स्थान पर पसरल अपराधक मायाजालक सेहो चर्च करैत छथि, जाहिमे नकली नोटक धंधासं ल' क' नशाखुरानी धरिक काज कएल जाइत अछि।

एतबे नहि, लेखक द्वारा कुम्भसं संबंधित अद्यावधि प्रकाशित पुस्तकक सेहो विवरण ताकल गेल आ उचित स्थान पर एकर विवरण लेखक द्वारा देल गेल अछि, जे आगामी अनुसंधान आ शोध कार्यकें मंजिल धरि पहुंचाबैमे साधक बनत। लेखक एहि पोथीक एक-एक अध्यायक लेखनमे अति सूक्ष्म दृष्टि

(शेष पृष्ठ 18 पर)

गामक दस्तावेज आ ग्राम विकासक महत्वपूर्ण अध्याय

✍ **ऋतेश पाठक**

कोइलख

रचनाकार	:	हितनाथ झा
प्रकाशक	:	प्रियदर्शी प्रकाशन, पटना
वर्ष	:	2017
मूल्य	:	₹ 400
पृष्ठ	:	210
विधा	:	ग्रामगाथा

फेसबुक ओना त' बेशी काल अनर्गल बहस आ आरोप-प्रत्यारोपक मंच टा बनल रहैत अछि मुदा कखनो काल ई गंहीर विमर्शक माध्यम सेहो बनैत अछि आ किछु सकारात्मक परिणाम द' जाइत अछि। एकर एकटा उदाहरण अछि जे हम लगभग एक वर्ष पहिने फेसबुक माध्यमे जिज्ञासा केने छलहुं जे मिथिलाक विकासमे महत्वपूर्ण योगदान केनिहार राजनेता सबहक संबंधमे किछु जानकारी भेटय। पछाति, फेर चर्च केलहुं पूर्व केन्द्रीय मंत्री स्व. हरिनाथ मिश्र केर विषय मे किछु जानकारी चाही। तखन बहुत जानकारी नहि भेटल, मुदा ओहि पं. हरिनाथ मिश्र केर संक्षिप्त जीवन वृत्त जाहि पोथी कोइलख मे भेटल, तकर रचना फेसबुक टा पर भेल एकटा नीक विमर्शक आ लेखक हितनाथ झा केर अद्‌भुत परिश्रमक परिणति अछि।

लेखक एहि पोथीक भूमिका मे लिखैत छथि ''किछु दिन पहिने गामक एक युवक सतीश ठाकुर फेसबुक पर गामक सम्बन्धमे सामग्री उपलब्ध करबायबाक अनुरोध कयलनि। 4-5 पोथीक नाम सुझबैत लिखयनि जे ताहि सभमे किछु भेटि जायत। लिखि तं देलियनि, मुदा एहिसं अपनहि संतोष नहि भेल। मनमे भेल, ई सभ वस्तु एकठाम रहितैक तं कतेक नीक होइतैक!

आचार्य सुरेन्द्र झा सुमनक 'प्रकीर्णशतक' कहियो पढ़ने रही, जकरा ओ कोइलख गामकें समर्पित कयने छलथिन, से मोन पड़ि आयल। तकरा फेसबुक पर पोस्ट क' देलिऐक। परिणाम आश्चर्यजनक भेलैक। लाइक, कमेंटक अतिरिक्त पचाससं अधिक शेयर भेलैक। गौआं तं सहजहि, आनो गामक लोकक ध्यान गेलनि। ताहिसं उत्साहित भेलहुं। क्रमश: तथ्य संगृहीत क' पोस्ट कर' लगलहुं।...''

आन ठाम लेखक लिखैत छथि ''तीन मासक अवधिमे हम करीब पांच सय व्यक्तिसं फेसबुकपर जुड़लहुं। गामक नवयुवक वर्गकें एहि पोस्टक कारण हमरा प्रति जिज्ञासा भेलनि आ अपन टिप्पणिसं प्रोत्साहित कयलनि।'' एवं प्रकारेण वर्णन करैत लेखक लिखैत छथि जे एहि पोस्ट सहबक क्रममे मैथिलीक अनेक विद्वान लोकनिसं एहि संदर्भमे विमर्श होइत रहल आ बादमे श्री राजेन्द्रनाथ झा, वरीय अधिवक्ता, पटना उच्च न्यायालय द्वारा पोथी प्रकाशनक दबावपूर्ण प्रस्ताव भेटलनि। एहि तरहें ई पोथी एकटा उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि, जे सोशल मीडिया परक बहस कें कोना सार्थक दिशा देल जा सकैछ।

49 अध्याय आ छौ टा परिशिष्ट लेख संग प्रस्तुत ग्रामगाथा विधाक एहि पोथीकें कोइलख केर 'मिनि गजेटियर' कहल जा सकैछ। हालांकि पोथीमे अधिकांश सामग्री व्यक्तिपरक अछि, किछु संस्था सभपर केन्द्रित सेहो। सबटा आलेख किछु अत्यंत आधारभूत सूचना टा संग्रहीत केने अछि, गजेटियरक भांति जनांकिक सूचना नहि, तथापि एकर शैली गजेटियर सदृश अछि। लेखक स्वयं एकर अनगढ़ स्वरूप कें स्वीकारैत लिखने छथि ''ई बात पुन: स्पष्ट क' रहल छी जे ई कोइलखक इतिहास नहि थिक। ई थिक गामक किछु प्रसिद्ध व्यक्ति पर संक्षिप्त टिप्पणी मात्र। नीक जकां ताकल

ऋतेश पाठक भारतीय सूचना सेवा में अधिकारी छथि।
संप्रति : प्रभारी, क्षेत्रीय समाचार एकांश, आकाशवाणी शिलचर, असम।
संपर्क : ग्राम+पोस्ट : खानपुर, जिला : समस्तीपुर, बिहार,
मो. 9213152822, ईमेल : riteshinmedia@gmail.com

गेलापर पूर्वक किछु आर नाम प्रकाशमे आबि सकैत अछि।''

ई गप फराक थिक जे टिप्पणी सभ कतहु संक्षिप्त अछि, कतहु अतिसंक्षिप्त, तं कतहु विस्तृत। व्यक्तिक कालखंड, परिवार, शिक्षा आ व्यक्तिगत उपलब्धि सम्बन्धित सूचना सभकें संग्रह सबटा आलेखमे करबाक यत्न भेल अछि, मुदा पुरान लोकनिक (प्राय: 19म शताब्दी मे जिनक जन्म) संदर्भमे सूचना अपेक्षाकृत कम उपलब्ध अछि आ पछाति पीढ़ी (अधिकांश बीसम शताब्दीमे जन्म), सं सम्बन्धित सूचना अपेक्षाकृत बेशी उपलब्ध अछि। किछेक पुरान लोकनिक विवरण एकहि पृष्ठ धरि सीमित अछि, जबकि हुनकासं बादक पीढ़िक अधिकांश लोकनिपर आलेख 2-3 पृष्ठक सीमामे प्रस्तुत अछि। साहित्यकार योगानन्द झा आ प्रख्यात चिकित्सक मोहन मिश्र (वर्तमान) पर केंद्रित आलेख चारिम पृष्ठ धरि गेल अछि।

कोइलख गामक जाहि विभूति सभपर केन्द्रित अध्याय सभ एहि पोथीमे अछि, ओ लोकनि छथि : प्रकाण्ड विद्वान महामहोपाध्याय पं. उमापति उपाध्याय, नेपाल महाराजक प्रधान पंडित महामहोपाध्याय पं. कृष्णदत्त झा, व्याकरण आ तंत्रक ज्ञाता पं. मित्रकर झा, महान् वैयाकरण आ ज्योतिर्विद् पं. अपूछ झा, संस्कृत विद्वान पं. खुद्दी झा, शास्त्रार्थी विद्वान पं. लुट्टी झा, ज्योतिरीश्वरकृत वर्ण रत्नाकर कें राष्ट्रीय पटलपर उद्घाटित केनिहार पं. बबुआजी मिश्र, बहुभाषी विद्वान पं. काशीनाथ झा, पंजीकार पं. बबुए मिश्र, पंजीकार पं. लक्ष्मीकान्त प्रसिद्ध डोमाइ मिश्र, बनैली राज (पूर्णिया)क रानी चन्द्रावती, मैथिली विद्वान पं. शिवनन्दन ठाकुर, गामक पहिल ग्रेजुएट पं. इन्द्रनाथ झा, शिक्षाविद् पं. गोवर्धन झा, गामक प्रथम मुखिया पं. कार्तिकेय झा, संस्कृत आ मैथिलीक कवि पं. वेदानन्द झा, पत्रकार पं. श्रीकान्त ठाकुर, कविचूड़ामणि पं. काशीनाथ झा मिश्र मधुप, गामक पहिल इंट्रेंस उत्तीर्ण तथा इंजीनियर उमानाथ झा, पंजीकार पं. कीर्तिनाथ झा, कलकत्ता विश्वविद्यालयक गोल्ड मडलिस्ट प्रो. जयदेव मिश्र, स्वतंत्रता सेनानी आ पूर्व केन्द्रीय मंत्री पं. हरिनाथ मिश्र, प्रख्यात चिकित्सक डॉ. भवनाथ मिश्र, प्राध्यापक एवं प्रशासनिक अधिकारी योगानन्द झा, मुखिया शोभाकान्त झा आजाद, दरभंगा वन प्रमंडलक प्रथम डीएफओ सुन्दरकान्त झा, प्रथम मैथिल सिने कलाकार जितेन्द्रनाथ झा, प्रसिद्ध वकील आ व्यंग्यकार दमनकान्त झा, स्वतंत्र भारतक पहिल मैथिल आईपीएस मिहिर कुमार झा, आकाशवाणीमे मैथिलीक प्रथम कम्पीयरर वीरेन्द्रनाथ झा, प्रसिद्ध मैथिली साहित्यकार धूमकेतु (भोलानाथ झा), देश-विदेशमे अध्यापन व पत्रकारितामे प्रख्यात प्रो. शंकर कुमार झा, अल्पायु आईएएस प्रदीप कुमार झा, न्यायिक सेवाधिकारी श्री सच्चिदानन्द झा, इंग्लैंडमे नौकरी केनिहार पहिल मिथिलानी श्रीमती गौरी मिश्र (हाल ही मे दिवंगत), प्रख्यात चिकित्सक पद्मश्री डॉ. मोहन मिश्र, आईपीएस डॉ. सुधीर कुमार झा, एनआरआई अभियन्ता एवं उद्यमी श्री मोतीलाल ठाकुर आ टीवी तथ बॉलीवुड कलाकार श्री नरेन्द्र झा (हाल ही मे दिवंगत)। एहिमे अधिकांश लोकनि मात्र कोइलखे टा नहि वरन् संपूर्ण मिथिलाक लेल अमूल्य रत्न थिकाह। हिनका लोकनिसं संबंधित एकत्रित जानकारीक लिहाजें ई अनुपम दस्तावेज अछि।

युवक संघक रचनात्मकता, गामक समृद्ध उमापति पुस्तकालय, ओहिठाम तरह-तरह केर खेल, अपन- अपन अभिरुचिमे अनुरक्ति, गामक अपन हस्तलिखित पत्रिका, ताहिमे उत्साहपूर्ण सहभागिता, अनेको विद्वान लोकनिक द्वारा नीक-प्रतिष्ठित नौकरी सभ छोड़ि वा सेवानिवृत्तिक बाद गामक चन्द्रानन्द स्कूलमे सेवादान आदि अनेकानेक प्रसंग बताबैत अछि जे कोना कोनो गाम 'कोइलख' बनि सकैछ।

पोथी व्यक्तिमात्र धरि सीमित नहि अछि अपितु 'ग्रामगाथा' विशेषणकें सेहो सार्थक करैत अछि। व्यक्ति सबहक जीवनवृत्तक वर्णन करैत तमाम ओ प्रसंग सोझां आनैत अछि, जाहिसं गामक सकारात्मक परिवेशक जानकारी भेटैछ। युवक संघक रचनात्मकता, गामक समृद्ध उमापति पुस्तकालय, ओहिठाम तरह-तरह केर खेल, अपन-अपन अभिरुचिमे अनुरक्ति, गामक अपन हस्तलिखित पत्रिका, ताहिमे उत्साहपूर्ण सहभागिता, अनेको विद्वान लोकनिक द्वारा नीक-प्रतिष्ठित नौकरी सभ छोड़ि वा सेवानिवृत्तिक बाद गामक चन्द्रानन्द स्कूलमे सेवादान आदि अनेकानेक प्रसंग बताबैत अछि जे कोना कोनो गाम 'कोइलख' बनि सकैछ। संस्था खण्डक छौ अध्यायमे भद्रकाली संस्कृत विद्यालय, चन्द्रानन्द फ्री मिड्ल इंग्लिश स्कूल, खादी भंडार, युवक संघ आ उमापति पुस्तकालय, हस्तलिखित मासिक 'प्रभात', भद्रकाली नाट्य परिषद्, उच्च विद्यालय आ वनखण्डीनाथ महादेव मन्दिर पर विस्तृत विवरण देल अछि। संगहि एहि सभ संस्थाक उल्लेख व्यक्तित्व खण्डमे सेहो एहि संस्था सबहक उल्लेख अछि। सुरेन्द्र झा सुमन जी केर संस्मरण गामक तकालीन जीवंतता केर सजीव चित्रण क' दैत अछि। मासिक 'प्रभात' पर 'एकल पाठ' सं संग्रहीत मोहन भारद्वाज जीक आलेख ओहि पत्रक गंभीरता, स्पष्ट संपादकीय नीति आदि सं परिचय कराबैत अछि। एतबहि नहि पोथी तत्कालीन जनमानसक सामाजिक मूल्य सेहो उद्घाटित करैत अछि। उदाहरणार्थ पृष्ठ 76 पर पं. हरिनाथ मिश्र

आ शोभाकान्त झा आजादक मध्य संवाद द्रष्टव्य अछि जतए स्वतंत्रता सेनानी, पेंशनक सवालपर आजाद जी कहैत छथि, ''जं हम अपन त्यागक बदला सरकारसं पारिश्रमिक ल' ली तं की ओकरा त्याग कहबैक?''

पोथीमे उद्धृत व्यक्ति सभमे अधिकांश केर मूल (वंश परिचायक) इत्यादिक विवरण सेहो देल अछि। एहिसं ज्ञात होइछ जे कोइलख गाम मे जाति-पांजि केर विधान नीक रूपमे विद्यमान अछि। गाममे कएक विद्वान पंजीकार लोकनिक उपस्थिति सेहो एहि तथ्यक पुष्टि करैत अछि। हालांकि चयनित व्यक्तित्व सबहक विवरणसं इहो भान होइत अछि जे, कि तं गाममे आन जातिक जनसंख्या कम अछि, अथवा गामक विकासमे आन जातिक लोक सबहक योगदान कमतर अछि वा हुनका लोकनिक विवरण जुटाबयमे लेखक चूकि गेलाह। पोथीक आरंभमे देल जनसंख्याक आंकड़ामे गाममे मस्जिद आ ईदगाहक उल्लेख अछि। एहिसं स्पष्ट होइछ जे गाममे मुस्लिम आबादी सेहो अछि। निजी वार्तामे लेखक बतबैत छथि जे गाममे प्राय: सभ जातिक वास अछि आ पोथीमे वर्णित श्री मोतीलाल ठाकुरक सम्बन्ध बरही (बढ़ई) समुदाय सं अछि। आन समुदायसं आर लोकक समावेश अथवा सामान्य धारासं हुनका लोकनिक विलगावक कारण आदिपर चर्चा पोथीक महत्व बढ़ा सकैत अछि।

हालांकि, एतय ईहो तथ्य ध्यातव्य जे लेखक स्वयं सारस्वत परिवार सं छथि। हिनक पिता पं. तारानाथ झा गामक हस्तलिखित पत्रिकाक संपादक छलथि आ वर्तमानमे स्वयं लेखकक अलावा हिनक भ्राता भीमनाथ झा आ भातीज दमन कुमार झा सेहो मैथिली साहित्य मे उल्लेखनीय योगदान क' रहल छथि मुदा लेखक अपन पिता तक पर कोनो अध्याय नहि शामिल कएलाह। ई निरपेक्ष भाव जतय लेखक आ पोथीक स्तरीयता ऊंच करैत अछि, ओतय पाठक कें एकटा महत्वपूर्ण अध्यायसं वंचित सेहो राखैत अछि।

जेना पहिने कहल, आलेख सबहक लंबाई, कथ्य इत्यादिमे एकरूपता नहि अछि। एहि ठाम यदि एक मानकक प्रयोग होइतै तं पोथी आरो सुन्दर भ सकितै। मानक केर कमी आनो ठाम खटकैत अछि, जेनाकि, सन्दर्भक प्रयोग देखल जाए। पृष्ठ सं. 33 पर लेखक पं. बलदेव मिश्र ज्योतिषाचार्यक मिथिला मिहिर मे प्रकाशित लेखक वर्णन करैत छथि तं ओतय दिनांक 4 मार्च 1962 स्पष्ट अंकित करैत छथि, मुदा एहि सं पहिने पृष्ठ 21 पर जखन महामहोपाध्याय पं. उमापति उपाध्यायक जीवनकालक संबंधमे डॉ. रामदेव झाक उद्धृत करैत छथि, ओतय एकर उल्लेख नहि अछि जे ई उद्धरण कतय सं लेल गेल अछि। हालांकि, लेखक भूमिकामे अपन अध्ययनक तमाम स्रोत आ संदर्भक स्पष्ट उल्लेख कयने छथि आ आन ठाम सं हू-ब-हू उद्धृत लेख सबहक अंतमे स्रोतक उल्लेख अछि। मुदा तौं फुटनोट/एंडनोट रूपमे स्रोतक विस्तृत उल्लेख आ संबंधित विस्तृत अध्ययन हेतु संबद्ध ग्रंथ-सूचीक समायोजन पोथीकें आर प्रासंगिक तथा अकादमिक दुनियामे आर उपयोगी बना सकैछ। तथापि ई कहब कोनो अतिशयोक्ति नहि जे ई पोथी कोइलख गामक एकटा महत्वपूर्ण दस्तावेज अछि आ कोनो गामक विकास प्रक्रियाक अध्ययन हेतु एकटा महत्वपूर्ण अध्याय। ■

(पृष्ठ 10 केर शेष)

आस्ट्रेलियाक दर्शन...

एहि यात्रा वृत्तांत मे लेखक मेलबर्न (आस्ट्रेलिया) के सड़क परिवहन, जीवन शैली, प्राकृतिक सौंदर्य, मानवीय आ तकनीकी कुशलता, काम-जीवनक मानवीय आ गरिमामय पक्ष, कामजनित अपराधक न्यूनता, गरीबी के अभाव आदि केर मादे खुलि कें अपन विचार प्रकट कयलनि अछि, संगहि इहो बतौलनि अछि, जे ओतहु किछु लोक भीख मंगैत अछि, ओतहु स्त्रीक प्रति अपराध होइत अछि, भरिसक शराबक खपत दुनिया मे सबसं बेसी आस्ट्रेलिया मे होइत छैक, ओतहु आतिशबाजी के बारूदी खेल चलैत छैक, आदि।

हुनक पुत्र आ पुत्रवधू आस्ट्रेलिया मे बसय चाहैत छथि, जीवन दृष्टिएं आ पाइयक दृष्टिएं, मुदा ओ कहैत छथि- 'एतुक्का सामाजिक आ व्यक्तिगत निस्संगता सं मधु के डर होइत छनि। हारी-बीमारीमे एतय क्यो संग देब' बला नहि।... विदेश मे सब त्योहार खंडित, अपूर्ण आ झुझुआन बुझाइ छै। उत्साह आ आनंददायक परिवेश सं रहित। फिक्का।'

मैथिली मे यात्रा साहित्य सं संबंधित बहुत रास पोथी सब प्रकाशित भेल अछि आ सब अपना-अपना दृष्टिएं विदेशी अनुभवक मादे लिखलनि अछि, मुदा सुभाषचंद्र यादव केर शैली मे नवता अछि, दृष्टि फरिच्छ आ प्रगतिशील छनि आ वर्ज्य अथवा गोपनीय विषय पर खुलि के अपन विचार रखबाक साहस छनि।

कुल मिला के कहि सकैत छी, जे सुभाषचंद्र यादव के ई नव पोथी हुनक रचनात्मकता के नव वितान हमरा सबहक सोझां प्रस्तुत करैत अछि। ■

इतिवृत्त एक गामक

✍ **डॉ. नरेश कुमार विकल**

अदौ सं साहित्य उषा, संध्या, रात्रि, वनस्पति, मेघ, गाछी-बिरछी, चउर-चांचर, पोखरि-धार-इनार आ मातृभूमि आदि मानव-कल्पनाक आत्मीयताक संग मंजुल दर्शन करबैत रहल अछि। खाहे कालीदास होथि वा विद्यापति अथवा कोनो आन-आन शीर्ष साहित्यकार अपन रचना मे कतहु ने कतहु, कोनो ने कोनो रूपें अपन मातृभूमि आ अपन मातृभाषाक अभ्यर्थना, अर्चना, वंदन-अभिनन्दन करब नहि बिसरलनि अछि। कियैक तं एकर तृणमूल अछि मातु। एकरे सं संदर्भित अछि मातृभूमि आ मातृभाषा। मातृभूमि अर्थात् अपन गाम। सुहृदजन ओहि ग्राम्य-सौंदर्यक विपुल मोहकता सं मोहित होइत रहैत छथि। अपन गामक सामाजिक चेतनाक सकल मूल्य सं अवगाहित होइत रहैत छथि। ओकर सोन्हगर माटिक रसवर्षिणी अमृत सं आप्लावित होइत रहैत छथि। कियो-कियो ओहि अनुभूति कें स्वान्त: सुखाय बूझि आनंदित होइत रहैत छथि, मुदा कियो-कियो प्रकृतिक ओहि अभिन्न आत्मीयताक प्रतीतिक व्यंजक कें सर्व सुलभ क' अनुपम प्रत्यक्ष करबैत रहैत छथि- साहित्यक माध्यमे। मुदा श्रमसाध्य आ सापेक्ष शोधात्मकताक, गवेषणात्मकताक, अनवेषणात्मकताक खगता सभ दिन सं, सभ भाषा मे रहल अछि, बेसी डिग्री प्राप्त करबाक लेल, जेना-तेना अपन अपेक्षित उद्देश्यक पूर्ति करबा मे समर्थ भ' जाइत छथि। मुदा, किछु गोटे कें शोध-शीलताक

सुल्तानपुर सौरभ

रचनाकार	:	डॉ. रंगनाथ दिवाकर
प्रकाशक	:	मनोलिता प्रकाशन, लहेरिया सराय, दरभंगा
वर्ष	:	2019
मूल्य	:	₹ 200
पृष्ठ	:	144
विधा	:	ग्रामगाथा

प्रवृति होइत छनि, आसक्ति होइत छनि, ओकराक प्रर्तिएं समर्पण होइत छनि, तें एकरा पाछां सर्वभावेन समर्पित रहैत छथि। मिथिला मे सेहो किछु गोटे एहि दिस पूर्ण रूपेण अग्रसर छथि, जाहि मे एकटा नाम सम्मानक संग अबैत अछि- डॉ. रंगनाथ दिवाकरक।

कारयित्री आ भावयित्री प्रतिभाक दृष्टि-सम्पन्न बहुआयामी साहित्यकार छथि- डॉ. रंगनाथ दिवाकर। समर्पित आ सक्षम शोध-प्रज्ञ, शोधानुत्सुक डॉ. दिवाकर कतिपय सारस्वत समारोहक आयोजक, उत्कृष्ट स्मारिका, गजेटियरक सम्पादक आ परिकल्पनाकार सेहो छथि। 'हिंदी भाषा और साहित्य के विकास मे मिथिला का योगदान' आ 'मिथिला गौरव-कन्दर्पीघाट' मे हिनक शोध-प्रज्ञता, उत्सुकता, सहृदयता, उत्सव सदति बनल रहलनि अछि। 'भखरैत नील रंग' मैथिली कथा-संग्रह मातृभाषाक प्रति हिनक उधिआइत अनुरागक उदाहरण अछि। कन्दर्पीघाट मे हिनका द्वारा स्थापित 'मिथिला विजय-स्तम्भ' हिनक कीर्ति-गाथा कें हिनक प्रशासनिक कार्य क्षमता कें, संस्कृति आ परम्परा कें अक्षुण्ण राखबाक- लगनशीलताक संपुष्ट दस्तावेज थिक।

डॉ. रंगनाथ दिवाकर अपन पांच मास पहिने प्रकाशित पोथी 'सुलतानपुर सौरभ' मे मौलिक प्रतिभाक चमत्कृतिक प्रत्यक्ष करौलनि अछि। अपन गामक रूप-माधुरीक अपूर्वताक आकर्षण भरवाक लेल आलंकारिक रूपात्मकताक आश्रम सेहो लेलनि अछि।

समस्तीपुर जिलाक भगवानपुर देसुआ गामक निवासी डॉ. नरेश कुमार विकल सात कविता संग्रह, पांच कथा संकलन, सात नाटक आ एक दर्जन सं बेसी पोथीक संपादन केने छथि। मराठी उपन्यास 'ययाति', गुजराती उपन्यास 'तत्वमसि' और तमिल उपन्यास 'चित्रप्रिया' केर अनुवाद सेहो ओ केने छथि। कतेक रास फिल्म मे अभिनय संग निर्देशन सेहो केने छथि।

__संपर्क__ : 'विशाखा', बारह पत्थर (जल विहार), वार्ड नंबर-14, समस्तीपुर-848101

__मो.__ 9430244114, 8051986749

एहि पोथी मे मूलत: कर्ण कायस्थ आ सुलतानपुर गामक इति-वृति सं पाठक वर्ग कें अवगत करयबाक सार्थक प्रयास कयल गेल अछि।

सुलतानपुर गाम पुरना दरभंगा जिलाक अभिन्न अंग छल, मुदा दरभंगा तीन भाग मे विभक्त भ' गेल आ ई समस्तीपुर जनपदक अंग बनि गेल। जिला मुख्यालय सं पूर्ब-उत्तर कोन मे अवस्थित बेरि पंचायतक अन्तर्गत एक गोट गाम अछि। निम' ई. क पछाति एकरा पुन: दरभंगा मे सम्मिलित क' लेल गेल। ई प्रसिद्ध धार्मिक स्थल कुशेश्वर स्थान सं सटले अछि।

दिवाकर जी एहि पोथी मे सर्वप्रथम एहि गामक स्थापनाक इतिहास, कायस्थक इतिहास आ मैथिल कर्ण कायस्थक इतिहास पर एहि मे विस्तार सं विचार सेहो कयलनि अछि।

सुलतानपुर कें कोठीपाल वंश सं भाषा वैज्ञानिकक आधार पर तर्कपूर्ण उदाहरण सं सिद्ध क' एहि वंशक विस्तृत चर्चा कयल गेल अछि, जे चौधरी (चातुर्द्धरिक) शब्दक अछि। अपना दिस सं 'आखर' सहित खण्ड (उपशीर्षक) मे ई पोथी विभक्त अछि, जकर अंत 'चित्रावली' सं होइत अछि। 'सुलतानपुरक स्थापना', 'कायस्थक इतिवृति आ मैथिल कर्ण कायस्थक कर्णाटक सं कथित आव्रजन पर विचार', 'कोठीपाल आ चौधरी वंश' कोठीपाल वंशावली, किछु प्रमुख व्यक्ति परिचय', 'सुलतानपुर मे कबीरपंथी', 'सुलतानपुर मे कलाकार', 'सुलतानपुरक शौर्य' आ 'सुलतानपुर सं संबंधित आंकड़ा'।

'आंकड़ा' मे जनसंख्या, साक्षरतादर कुल परिवार, सिंचित क्षेत्र, औसत लिंगानुपात, क्षेत्रफल, प्राथमिक विद्यालय, निजी विद्यालय उपस्वास्थ्य केंद्र आ मंदिरक संख्या, मुखिया, सरपंच, पंचायत समितिक सदस्य, पैक्स अध्ययन आधारित नामक उल्लेख कयल गेल अछि, जे आने आन साहित्यकार लोकनिक लेल प्रेरक ओ अनुकरणीय अछि।

अपन गाम, अपन पुरवाक प्रति अगाध स्नेह-सिक्त समर्पण एहि पोथी मे सर्वत्र व्याप्त अछि। अपन गाम मे अपन पिताक प्रस्तर-प्रतिमाक निर्माण आ स्थापन तकर प्रत्यक्ष-प्रमाण अछि।

पोथी मे प्रवाहत्मकता प्रारम्भ सं अन्तधरि बनल रहैत अछि। कतौ साहित्यिक- ताक एकाग्रता भंग होयबाक अवसर नहि देलनि अछि- विद्वान लेखक। ■

(पृष्ठ 13 केर शेष)

सामाजिक, ऐतिहासिक आ धार्मिक यात्रा करबैत पोथी

आ गहन खोजी प्रवृतिक संग उपस्थित भेल छथि। कुम्भ गेला पर पोथी नहि लिखने छथि, अपितु पोथी लिखबा लेल कुम्भ गेल छथि तेहन प्रतीत होइत अछि। लेखक द्वारा गृहकार्य पूर्ण भेला उपरान्ते स्थल पर जा संदर्भित विषयक अध्ययन करबाक लक्षण देखबामे अबैत अछि।

प्रयागक दर्शनीय स्थलक वर्णन सेहो कएल गेल अछि, जाहिमे अक्षयवट पर विशेष प्रकाश देल गेल अछि। अक्षयवटक इतिहास, पौराणिक ओ धार्मिक मान्यता आदिकें पूर्ण रूपेण स्पष्ट कएल गेल अछि, जे ज्ञानमे वृद्धि करैत अछि, अपन इतिहास आ धर्मसं परिचित करबैत अछि। एकर अतिरिक्त विभिन्न मंदिर सभक जनतब दैत छथि, जाहिमे पातालपुरी मंदिर, बिन्दुमाधव मंदिर, नागबासुकी मंदिर, सरस्वती कूप आदिक वर्णन भेटैत अछि।

प्रयागमे लेखक अमरनाथ झाक स्मरण सेहो करैत छथि आ हुनक ध्यान अबिते ओ विभिन्न स्थल पर जा हुनक कृतित्व ओ व्यक्तित्वक खोज करैत छथि। एहि लेल ओ इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय सेहो जाइत छथि मुदा ओ ओत' सं प्रसन्नचित्त भ' आपस नहि अबैत छथि। वैश्वीकरण आ भूमंडलीकरण शिक्षा आ विद्वताक नव परिभाषा गढ़लक आ बजारवाद तकरा स्वीकृति प्रदान केलक। एहिमे सुच्चा विद्वान कतहु पाछां छूटि गेल प्रतीत होइत छथि। अमरनाथ झाक विभिन्न रोचक प्रसंग लेखककें स्मरण होइत चल जाइत छनि, मुदा वर्तमान संदर्भमे ओकर प्रासंगिकता नहि देखि क्षोभ होइत छनि।

इलाहाबाद आ महाकुम्भक यात्राक दौरान हुनका अनेक विभूतिलोकनिक स्मरण होइत चल जाइत छनि- हरिवंशराय बच्चन आ जयकान्त मिश्रक अनेक पारिवारिक ओ सामाजिक प्रसंग मोन पड़ैत रहैत छनि।

मुदा मोनमे जागल सभ प्रश्नक उत्तर लेखककें भेटिये गेल छनि से बात नहि। अनेक प्रश्न एहन रहल, जकर प्रसंगे ओ अद्यावधि उत्तर नहि पाबि सकल छथि, जेना महाकुम्भ कहियासं प्रारम्भ भेल, कुम्भक आयोजन प्रति बारह बरख पर हेबाक परंपराक संबंधमे स्पष्ट जानकारी नहि भेटि सकलनि। यद्यपि एहि संदर्भमे अनेक पोथी छैक, मुदा से कोनो निश्चित वर्ष सूचित नहि करैत अछि।

अस्तु, महाकुम्भ प्रयागक कुम्भक सम्यक विवरण प्रस्तुत करैत पोथीक नाम थिक, जकर लेखनक क्रममे लेखकक बौद्धिक क्षमता, कठिन परिश्रम, अनुसंधानात्मक प्रवृति आ शोधकर्मक क्षमता जगजियार भ' उठैत अछि आ तें ई एकटा अपरिहार्य आ आवश्यक पोथी बनि गेल अछि। वर्णनक क्रममे यद्यपि कतहु-कतहु कोनो विषयक बेसी विस्तार अवश्य भ' गेल अछि। ■

शिवनगर: इतिहास सं वर्तमान धरि

✍ **हितनाथ झा**

गीत सुनब आ नीक लागब एक बात भेलैक, किन्तु एहन गीत जे अपन मांटि-पानि दिस आकर्षित करैत हो, सुनलाक बाद बाल्यावस्थाक बीतल क्षण स्मरण भ' अबैत हो, नेनपनक धूमिल स्मृतिपटलपर गामक मंदिर, मस्जिद, स्कूल, बाबा -दादा-काकाक पहिरन-ओढ़नक संग शास्त्रीय चर्चा, धार-पोखरि-इनारक चर्चा, बाढ़ि-सुखारक चर्चा, विद्वान-पहलमान, कवि-लेखक, नेता-राजनेता-अभिनेताक चर्चा, 'हरि अनन्त हरि कथा अनंता', गामक महत्ता आ सत्ताक विषयमे सोचबाक लेल विवश क' दैछ, कारण सभ गाममे किछु ने किछु विशिष्ट विशेषता रहिते छैक, जे आन गामसं अंतर स्पष्ट भ' जाइत छैक।

शिवनगर गाम गाथा के लिखबाक पाछां तीन गीत अछि, जकरा सुनैत लेखक अपन गाममे बिताओल समयक सभ बात मोन पाड़य लगैत छलाह आ तकरे प्रतिफल थिक ई पोथी, जकर लेखक छथि, आब स्वर्गीय गिरीश चन्द्र।

ओ तीनू गीत अछि -राजेन्द्र मेहताक 'एक प्यारा सा गांव, जिसमे पीपल की छांव, छांव मे आशियां था, एक छोटा मकां था, छोड़कर गांव को, उस घनी छांव को, शहर के हो गये है हम।

जगजीत सिंहक - 'ये कागज की किश्ती और बारिस का पानी।'

रजनी पल्लवीक - 'चानक इजोतमे गोल- गोल, अपने अंगनामे हम नचितहुं।'

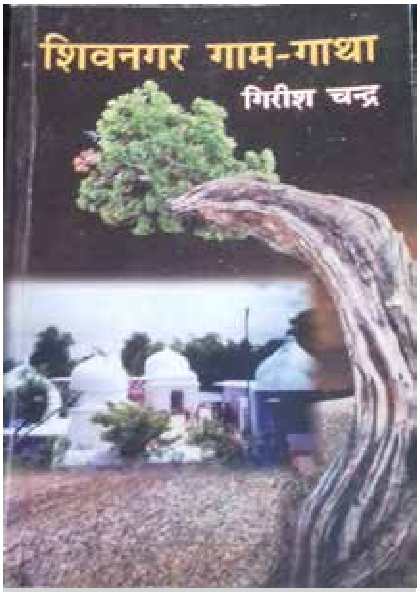

शिवनगर गाम-गाथा

रचनाकार	:	गिरीश चन्द्र
प्रकाशक	:	जानकी महोत्सव समिति, शिवनगर, मधुबनी
वर्ष	:	2017
मूल्य	:	₹ 150
पृष्ठ	:	92
विधा	:	ग्राम गाथा

लेखकक लिखबाक पाछां, भले ई गीत रहल होउ, मुदा जे ई लिखलनि अछि, शोधपरक अछि, तथ्य आ तर्कपरक अछि, व्यक्तिगत सम्पर्क, नेटक उपयोग, करीब चालीस पुस्तकक सन्दर्भसं सुसज्जित मात्र 92 पृष्ठक एहि पुस्तकक भाषा, सामग्री, गामक इतिहासक संग वर्तमानक विवरण आ अनेको चल अबैत मौखिक परम्पराकें लिखित आनि गामक महत्व मिथिलाक मध्य अनबाक जे प्रयास केलनि, से वस्तुत: हिनकर विद्वता आ लेखनीक चमत्कार कहि सकैत छी आ आब अनेको लिखाइत ग्रामगाथाक प्रेरणास्रोतक रूपमे एहि पुस्तककें मानि सकैत छी।

नौ भागमे विभक्त एहि गामगाथाक अनुक्रमणिका एना अछि -

1. गाण्डीवक टंकार सुनलकै गाम
2. पंजी-प्रबंधमे चर्चित हमर गाम
3. नीलहा कोठिक कथा कहैए गाम
4. की दए समदब मैया कमलेसरी हे
5. पग-पग पोखरि हकन्न कनैए
6. नव घर उठय पुरान घर खसय
7. मोन पड़ैए गीत गुंजित गाम अपन
8. ओढ़न-पहिरन हमर गाम के
9. किछु अविस्मरणीय चरित्र-चित्र

ई पुस्तक पढलाक बाद शिवनगर लागत एकदमसं परिचित गाम, भलें अपने ओहिगाम नहिं गेल हो, ओहि गामक लोकसं परिचित नहिं होइ। सम्पूर्णतामे गामक इतिहासक विवरण भेटि जायत, जे निश्चिते सुखद आनन्द देत आ जं अपनेक गामक गाथा नहिं आयल हैत तं निश्चिते लोभ हैत हमरो गामक इतिहास रहैत -अबैत ! ओह!!

शिवनगरक इतिहास पांच हजार वर्ष पूर्वक अछि। महाभारतक समय

इलाहाबाद बैंकक सेवानिवृत्त वरीय प्रबंधक श्री हितनाथ झा कोइलख (ग्रामगाथा) लिखि चर्चित भेलाह। एहिसं पूर्व 'मैथिली इतिहासक रेखांकन'क संपादन कयने छथि। झारखंडक मैथिली साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधिमे सक्रिय।

संपर्क : *जयप्रभा नगर, सेलिब्रेशनक पूर्ब, स्टील गेट, हज़ारीबाग, 825301, झारखंड।*

मो. *9430743070,* ***ईमेल :*** *hitanathjha@gmail.com*

महत्वपूर्ण छल। विस्तृतमे हम नहिं जा पहिल अध्यायक एक-दू अंशक उद्धरणसं एहि गामक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक आ पौराणिक गाम होयब सिद्ध भ' जायत।

'कौरवक सेना पराजित भेल। उत्तम विजयी भेला। जाहिठाम सं अर्जुन बाण छोड़लनि ताहिठाम ओ महादेवक स्थापना कएलनि आ जहां पातालगंगा प्रगट भेलै, तहां कुंड-निर्माण करा शिवलिंग स्थापित कएलनि। यैह दुनू जगह सम्प्रति क्रमशः गांडीवेश्वरनाथ महादेव आ वाणेश्वरनाथ महादेव कहबैए। एही प्रसिद्धि पर लोक अबैत गेल आ गाम बसैत गेल। ई स्थान जोगियारा रेलवे स्टेशन सं 3-4 किलोमीटर उत्तर-पूबमे एही शिवनगर गाम मे अवस्थित अछि। तहिये सं शिवनगर स्थित गाण्डीवेश्वर स्थानक सातत्य एखन धरि कायम छैक।'

एतेक पैघ समयमे उत्थान-पतन अवश्यम्भावी। आगू चिंतन, मंथन करैत प्रमाणक आधार तकैत, अनेको तर्कसं परिचित करबैत लिखैत छथि...' एहि उत्थान-पतनमे सभ सं बेसी विस्मयकारी छै जे एकर सातत्य एखन धरि कायम छै। सएह सातत्य एकर दिव्यता छै। आ दिव्यते त' देवता बना दै छै।'

मिथिलामे दुइये टा सूर्य मंदिर अछि, एक शिवनगर (मधुबनी)मे आ दोसर कन्दाहा (सहरसा)मे।

पंजीप्रबंध मिथिलाक विशिष्ट परम्परामे सं एक छल, जे आब क्रमशः क्षीण भेल जा रहल अछि। काल-पात्रक अनुसार कोनो परम्परा कतेक दूर धरि जा सकैत अछि, जं ओहिमे दुर्गुणक प्रवेश भ' जाइ तं ओकरा ऊघब कोनो समाज लेल उपयुक्त नहिं, अपितु छोड़नाइये नीक, एहू दिस लेखक इंगित केने छथि।

विवाह-दानक लेल ई महत्त्वपूर्ण छल, खास क' ब्राह्मण आ कायस्थ परिवारमे। पंजीकारक महत्व कोनो पैघ विद्वानसं बेसी छल। (आचार्य सुरेन्द्र झा सुमनक आत्मकथा 'मन पड़ैत अछि' आ कोइलख पुस्तकमे द्रष्टव्य)।

लेखक एहि परम्पराक चर्चा करैत, शिवनगरक मूल "कोठिपाल शिवनगर''क चर्चा करैत लिखैत छथि- "1325 इस्वी धरि शिवनगरमे ब्राह्मण नहिं छला आ जं रहितथि तं ब्राह्मण ाेमे शिवनगर मूल रहैत। किन्तु कायस्थ लोकनि तहियो छला किए जे हुनक मूल 'कोठिपाल शिवनगर' आइयो शिवनगर गाममे विद्यमान अछि।''

नीलक खेती अंगरेजी राज्यक अमल (1765-1947) सं पहिनेसं रहैक। बंगाल आ बिहारक खेती छल नील। अंगरेजी राज्यमे एकर आरम्भ तत्कालीन कलेक्टर एकटा उद्योगक हिसाबे विकसित करौलनि। 1793 इस्वी धरि करीब नओ टा फैक्टिरियो बैसि गेलै। 1803 इस्वीमे 25टा नील कोठी भ' गेलै। लेखकक अनुसार कमतौलक एक टा शाखा शिवनगर कोठी रहैक। एहि नील कोठीक कारणे शिवनगरक महत्व आन गाम सभक अपेक्षा अधिक रहैक।

बंगाल विद्रोह आदिक चर्च, मैथिलक स्वभावक अनुसारे मौन रहब, आदिक नीक ऐतिहासिक वर्णन अछि, जे निश्चित रूपसं सामान्य आ इतिहास नहिं जननिहार पाठक लेल ज्ञानवर्धक अछि, पुस्तकके एहू दृष्टिकोणसं महत्त्वपूर्ण बनबैत अछि।

''बागमती नदि तीर के पश्चिम, गंग बहे बुढ़नद की धारा।
ताहि समीप महाप्रभु शंकर, नाम गाण्डीवेश्वर पाप की धारा।।''

बाबा लाल बिहारी दासक उपर्युक्त कविताक उद्धरणसं प्रारम्भ करैत नदीक नीक रूपें वर्णन करैत, मिथिलामे बाढ़िक समस्या आ निदानक वैज्ञानिक ढंगसं प्रस्तुत केलनि अछि, एतबे नहिं, नद-नदीक विवाहक प्रसंग रोचक वर्णन कयलनि अछि। एहि प्रसंग बंगलाक प्रसिद्ध साहित्यकार विभूति भूषण मुखोपाध्यायक 'कूशी प्रांगनेर चिट्ठी' क सेहो चर्चा अछि।

2011क जनगणनाक अनुसार भौगोलिक स्थिति सेहो गामक परिचयमे सहायक अछि।

पोखरि-इनारक संख्या आब गाममे कम भेल जा रहल अछि। पहिने एहिसं लाभ आ चास-बासक लेल अत्यन्त महत्वपूर्ण तं छलहे, से आब समाप्तप्राय होइत देखि क' चिंतित होइत छथि। राजस्व (cash&crop) उगाहीक लेल आ आइ-काल्हि जे जल संचयनक समस्याक निदानक हेतु सरकारक सहयोगक आवश्यकतापर लिखैत छथि, चासक उपजा बढ़ाओल जा सकैए। गामकें सम्पन्न कैल जा सकैए।

गामक शैक्षणिक वातावरण, पुस्तकालय, संस्था, साहित्य आदिक स्वर्णकाल आ अध:पतनक विवरण समयक अनुसारे सविस्तार लिखलनि अछि।

मिथिलाक पाबनि-तिहार, लोक पाबनि शिवनगर गाममे कोन रूपें मनाओल जाइत छलैक, तकर हिनकर मन मस्तिष्कमे ओहिना अमिट छाप छलनि, सेहो एक अध्यायमे ऐतिहासिक महत्वक संग परिचित करयबाक सोच नव तूरकें परम्परासं जोड़बाक प्रयास छल हेतनि।

ओढ़न-पहिरनमे हमरा दू टा वस्तु बेसी आकर्षित कयलक-पाग आ जूता। राजस्थान आ मिथिलाक पागक तुलना एवं जूताक इतिहासक संग जूताक किछु दिलचस्प तथ्य उजागर कयलनि अछि। पढ़ब तं आनन्दित होयब।

पंडित ताराकांत झा एही गामक छथि, हुनकर विषयमे संक्षिप्त किन्तु तथ्यात्मक परिचय तं अछिये, संगहिं मोहम्मद सफदर खयात, रामजी झा, महारुद्र झा, सत्तन झा, पंडित लक्ष्मी नारायण कंठ आ महंथ स्वर्णकारक विषयमे सेहो जानकारी अछि।

कुल मिला क' हम ई कहब जे ई किताब शिवनगरक गामगाथा तं अछिए, मिथिलाक एक टा ऐतिहासिक दस्तावेजक रूपमे स्मरण कयल जायत। ■

कोसी गाथाक डाक्यूमेंटरीक औपन्यासिक अभिव्यक्ति

✍ **वैद्यनाथ झा**

विश्वमे जतेक मानव सभ्यता विकसित भेल, सभटा कोनो ने कोनो नदीक कातमे। असगरे सिंधु आ सरस्वती नदीक कातमे 1500 शहर बसल छलै। अही लगपास हरप्पा मोहनजोदड़ो सभ्यता विकसित भेल छलै। कारण, नदी अपन जलसं आ माटिसं मनुक्खेटाक नहि, गाछ-वृक्ष, चिड़ै-चुनमुन, पशु आदिकें जीवन दइत छैक तं ई जीवनदायिनी सेहो कहबैत छैक। आ सभ्यता बसब बूझू एकटा अर्थव्यवस्था, समाज आ संस्कृति बसब भेल। मुदा कइएक बेर नदी अपन दिशा, दशा, प्रवाह आदिसं अपना सम्पर्कमे आयल भूभागकें तबाहो करैत छैक। एहन नदी शोकनदी भेल। 'ह्वांगहो' नदी चीनक शोकनदी कहल जाइत छैक। तहिना मिथिलांचल (भारत आ नेपालक क्षेत्र धरि पसरल)क शोक नदी कोसी अछि। एकर अथाह जलराशि, मार्ग बदलैत प्रवाह सभ साल साओन-भादव अपन कोरामे बसैत कोसी अंचलक भूक्षेत्र जेना सहरसा, पूर्णिया, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया, मानसी, आदिक गाम सभमे प्रलय मचा दैत छैक। ई दू मास लोकक जीवन नहि, मरण मास सन भ' जाइत छैक। एहि अंचलक लोकक शोकगाथा एतुका बाशिन्देटा अनुभव कए सकैत अछि।

सन् 2018 मे अही कोसीक शोकगाथा, अंचलक लोकक त्रासदी विषय पर एकटा उपन्यास प्रकाशित भेल अछि- 'जलप्रांतर'। लेखक थिकाह पंकज पराशर आ प्रकाशक छथि, किसुन संकल्प लोक, सुपौल। लेखक अही क्षेत्रक निवासी छथि।

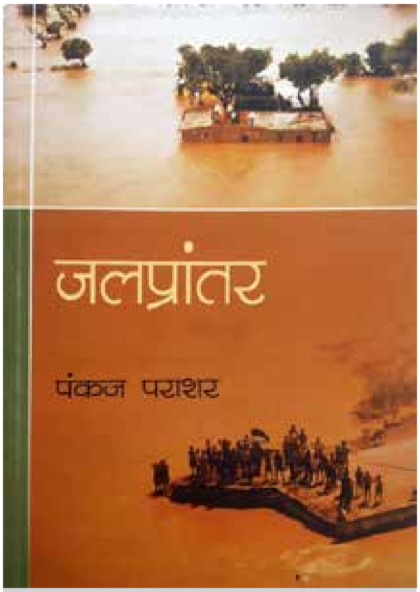

जल प्रांतर

रचनाकार	:	पंकज पराशर
प्रकाशक	:	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
वर्ष	:	2018
मूल्य	:	₹ 175
पृष्ठ	:	144
विधा	:	उपन्यास

बहुत किछु जनैत, बुझैत छथि, देखितो छथि। हुनक ज्ञान, अनुभव एहि उपन्यासमे खूब उतरल छनि।

144 पृष्ठ धरि पसरल एहि उपन्यासक, कथाक कालखण्ड बीसम शताब्दीक छठम आ सातम दशकक अछि। तइयो उपन्यासक प्रासंगिकता एहि लेले बढ़ि जाइत छैक, जे एतेक विज्ञान आ प्रौद्योगिकीक क्रांति आ विकासक बादो कोसीक विकरालता आ ओहि अंचलक संकट कानो तरहे कम नहि भेले।

उपन्यासक शीर्षक 'जलप्रांतर' हिन्दीक कथाकार अरुण प्रकाशक एकटा कथाक शीर्षक सेहो छैक। एहि मादे लेखक अपन भूमिका 'आंजुर भरि शब्द-पुष्पमे स्पष्ट कयलथि जे हुनका एकर पता तखन लगलनि जखन ई पोथी छपयबाक स्थिति मे अयलै- 'हमर उपन्यासक प्रतिनिधित्व इएह शीर्षक क' सकेत छल। तं जे से... शीर्षक हेतु हम अरुण प्रकाशकें आभार प्रकट करैत छिएनि''। (पृष्ठ 123)

एहि उपन्यासक विभिन्न आयाम पर चर्च कएल जाय। सम्पूर्ण उपन्यास पढ़ला पर ई पुष्ट धारणा बनैत छैक जे जलप्रांतर एकटा इतिहास-बोध दृष्टि सं सम्पन्न, विवरणात्मक, सूचनापरक, भौगोलिक सांस्कृतिक जनतबसं भरल जन-उपन्यास अछि। जन-उपन्यास एहि लेल जे एहिमे समाजक कोनो खंड विशेषक गाथा नहि अपितु समुच्चा भूखंडक व्यथा-कथा छैक। एहन प्राकृतिक दंश जे समाजक सभ तरहक लोक भोगि रहल अछि। ई उपन्यास पढ़ैत जाउ आ देशक आन ठाम, आन नदीक बान्ह सभ ध्यानमे आओत। पढ़ैत जाउ आ संगे टिहरी डैम, नर्मदा डैम ई सभक गाथा मोन पाड़ैत जाउ। कोसीक गाथा तें आओरो कारुणिक छैक। पंकज जी लिखैत छथि-

''इतिहासक धार सं जखन कोसी बान्हक भीतरमे बलजोरी ठेल देल गेल तीन सय चारिटा गामक लोकक आकुल पुकार कानसं टकराइत अछि तं दू लाख

वैद्यनाथ झा मैथलीक प्रसिद्ध लेखक आ अनुवादक छथि। हिनक बाल कथा संग्रह खिस्सा सुनु बाउ वर्ष 2018 मे बाल साहित्य पुरस्कार (मैथिली) सं पुरस्कृत भेल अछि।

संपर्क *: 405, बी-ब्लॉक, सेक्टर-56, (हुड्डा प्लॉट) गुरुग्राम-122011 (हरियाणा),* ***मो.*** *9582221968*

जनसंख्याक चारि लाख हाथ ऊपर दिस खींचबाक याचना करैत देखाइ पड़ैत अछि। अपना जन्मोसं पहिने जा कए हम हुनका सभक हाथ पकड़ि लेब' चाहैत छी। हुनकर सभक नोर अपन गमछी सं पोछि देब' चाहैत छी, मुदा समयकें सरकार हमर ठोंठ मोकि देने अछि।'' (आंजुर भर शब्द-पुष्प: पृ.-123)

एहि उपन्यासक विवरणात्मक पक्ष एतेक सटीक आ प्रवाहमान छैक जे बुझाइत छैक जे कोसीक भौगोलिक, सामाजिक आ आर्थिक 'टोपोग्राफी' पढ़ि रहल छी। उपन्यासमे कोसीक पेटमे रहनिहार लोकक जलसं चेहरा साफ देखाइत अछि। सालमे दूबेर सााओन भादो मास लोक मृत्युसं साक्षात्कार करैत अछि। जे दहेला-भासला, से गेला, जे बांचि गेला ओ सभ किछु लुटा-पिटाकर खेत-खरिहान, घर-डीह, माल-जाल कोसीकें समर्पित करैत फेर सं चार छाव लगैत अछि, बलुअहा माटिमे फसील उपजयबाक प्रयास करैत अछि। कतोक गोटय हारी-बेमारी, मुखमरी सं मरि जाइय।

तइयो समाज अपन संस्कृति, परंपरा, संस्कार नहि छोड़ैत अछि, बियाह-दान, उपनयन, मूड़न करिते अछि। बीसो झा, सदाशिव झा, मनसुख सादा, पढुआ कका, लाल भाई, फूलबाबू, भोला चौधरी सन चरित्र उपन्यासकार महोदय स्टडी-टेबुल पर बेसिक नहि गढ़लाह। ई तं सदति उपस्थित प्रतिनिधि, स्वाभाविक चरित्र छैक। पंचगछिया वाली भौजी, कोइलख वाली काकी, सुपौल वाली काकी, अनमनिया-माय, अनमनिया ई सभ प्रतिनिधि स्त्री-चरित्र छथि। एतेक विपति, अभाव मे जिबितो लोक जीवन-मूल्यक निर्वाह सेहो करैय। जत' बीसो झा गामेमे रहिक' कोसीक अभिशाप सहलथि, परिवारक मर्यादा निमाहलथि आ वृद्धावस्थामे पारिवारिक प्रपंचक शिकार भ' अवश होइत छथि, ओतहि सदाशिव झा अर्थोपार्जनकें नब आयाम देबा लेल गाम छोड़ैत छथि, टाटाक नौकरीक सपना देखैत मटिकट्टीमे पहुंचि जाइत छथि, पिता, पत्नी, भाउजक ध्यान रखैत छथि, ई मिथिलाक सामाजिक चरित्र छैक। एहि क्षेत्रक आर्थिक संरचनाक आधार मटिकट्टी सएह छैक। कृषि-उपज तं अनिश्चिते। उपन्यास ई सभ देखाएबमे समर्थ भेल अछि।

उपन्यासक इतिहास दृष्टि सेहो स्पष्ट अछि। कोसीकें बान्हबाक प्रयासक इतिहास उपन्यासमे यत्र-तत्र भेटैत अछि। मिथिला आ नेपालक राजवंशक इतिहास, एहि बतहिया नदीक बान्ह-छेंक करबाक प्रयास, बान्हक पक्ष-विपक्षमे धमर्थन, एकरा बादो मटिकट्टी सं पाइ कमाएब अंचलक ऐतिहासिक सत्य थिकैक। सामान्य पाठक लेल एहने ऐतिहासिक तथ्य नव जनतब भेल, जेना नेपालक हनुमान नगर मे 1140 मी. पक्का बान्हक योजना, उत्फाल करैत कोसीक बाढ़िकें रोकबा लेले 240 किलोमीटर धरि बान्हक योजना, कोसीक उत्पत्ति काल दू करोड़ तीस लाख बर्ख पहिने, कोसीक छाड़न धार-पनार धर, भेंसना कोसी, कारी कोसी, सौरा कोसी, तिलयुगा, धेमुरा धार, ध ंसान कोसी, लोरन कोसी सन कतेक उपध ाराक जनतब भेटैत अछि।

'जलप्रांतर' अपन औपन्यासिक मंच सं अपन बृहत्तर समाजकें ई सनेस दैत छैक जे प्रकृतिक लीलामे हस्तक्षेप नहि करबाक चाही। नदीकें बान्हब ओकर सहजतासं खेलबाड़ अछि। कोसिएक उदाहरणसं ई गप्प कहल गेलैक जे धारके जेतेक बान्हबाक प्रयास कएल जेतैक, ओतैक ओ आरो विकराल भ' जाएत। कइएक ठाम बान्ह टुटलासं सेहो प्रलय मचि जाइत छैक। अहू उपन्यासक अंतमे बान्ह टुटलैक आ कतेक गोटयकें जलसमाधि लेब' पड़लनि।

उपन्यासक भाषिक संरचना आ कलापक्षक चर्च कएल जाय। 'जलप्रांतर' एकटा यथार्थवादी उपन्यास अछि। सरल, सहज, लौकिक/आंचलिक शब्द सं उपन्यास अंटल पड़ल अछि। एतेक देशज शब्द, एतेक आंचलिक फकरा, कहबीसं युक्त वाक्य सभ जे अनुभव होयत अछि जे नव नब शब्द (कइएकटा प्रचलनसं बाहरो होइत बुझाइत) पढ़ि बुझाय जेना भाषाक क्लास क' रहल होइ। उपन्यासक भाषा आ शैलीक संबंध मे एक बात अछि जे एकर भाषिक-संरचनाक सभसं प्रबल गुण संवेदनासं सिक्त व्यंजना छैक। कोसी अंचलक लोकक पीड़ा आ विपतिक प्रति संवेदना सिक्त यैह भाषा पाठककें बेर-बेर कोसिकन्हा संग ठाढ़ करैत छैक।

''भोला चौधरी जाहि दिन पटना दिस विदा भेल छलाह, ताहि राति बान्ह टुटलै। लाल भाइ जाहि दिन बड़की दाय ओहि ठाम लालगंज गेल छलाह, ताहि राति बान्ह टुटलै। बड़का कका जहिया एक मोन चाउर आ एक मोन गहूम कीनि कए सहरसा सं अनने छलाह, ताहि राति बान्ह टुटलै... मनसुख सादा के जमाय कें जहिया गाम अबैय रहनि, ताहि राति बान्ह टुटलै। फूल बाबूकें जहिया गाम अबैय रहनि, ताहि राति बान्ह टुटलै। अनचोक्के मे बान्ह टूटि गेलै आ सब मुंह तकिते रहि गेलाह।'' (पृ. 140)

बेकती प्राकृतिक आपदा अयला पर कते लचार भ' जाइय, निरूपाय, एकर अभिव्यंजना अहि सं बेसी की होएत।

उपन्यासमे दस गोट कहबी/फकरा, दस गोट बेखर गारि (बियाह-दानमे बर/ कनिया पक्ष कें बीध सभमे गायल जाइत) दस तरहक सांप, दस तरहक माछ, दस तरहक काठ (शीशो, सखुआ, कदंब, सागौन आदि) क विवरण भेटैत अछि।

उपन्यासक कथाक्रममे कोनो व्यतिक्रम नहि। बीसो झा, सदाशिव झा, पढुआ कक्का, लाल कक्का, फूल भाइ, मनसुख सादाक बीच बान्ह छेक ल' क' गप्पक शृंखला कथा मे तारतम्यताक कोनो समस्या नहि।

उपन्यास पढ़ला पर धारणा बनैत अछि जे ठोस धरातल पर गढ़ल कथाक्रम आ प्रवाहमान भाषाक बलं मैथिलीमे ई प्रशंसनीय कृति पढ़बा जोग रचना अछि। उपन्यास जगत मे दीर्घकाल धरि ई अपन उपस्थिति बनौने रहत। ■

आम जीवनक सहज कथा

✍ पंकज 'कलमजीवी'

अपन पहिल पोथी 'अरुण स्तम्भ' सं मैथिली साहित्यमे मजगूत डेग रखनिहार दिलीप कुमार झाक दोसर काव्य-संग्रह 'बनिजाराक देसमे' आएल तं हिनक छवि बेस भकरार भ' सोझा आएल ओ एकटा स्पष्टवादी कविक रूपमे देखार भेलथि। मुदा हिनक अभिनव प्रकाशित उपन्यास ''दू धाप आगां'', सें हुनकर नव रूप आगू आयल।

अदौसं मिथिला अपन सभ्यता, संस्कृति, सांस्कृतिक विरासत, परंपरा आ धर्मक लेल जानल जाइत अछि। एहिसं फराक दोसर दिस हम सभ पुरुषवादी मानसकिताक शिकार सेहो रहलहुं अछि। एहिठाम नारीकें प्राथमिकता अबस्स देल जाइत छैक, मुदा समाजमे वा घर-परिवारमे हिनक शोषण भ' रहलैक अछि। हुनका घरक छहरदेबालीसं बाहर जएबाक अनुमति नहि देल जाइत छैक, अधिकार क्षेत्रकें परिमित क' देलासं स्त्रीक सम्पूर्ण विकास सम्भव नहि होइत छैक। किन्तु आब हालति बदलि रहल अछि, नारी हमरा सभहक सोझा आबि रहलीह अछि। ई कहनाए अतिशयोक्ति होएत जे आब नारी सशक्तीकरणक लक्ष्यमे सफल भ' गेलहुं किएक जाधरि स्त्री समाज आ परिवारक बन्हन सं मुक्त भ' स्वयं निर्णय लेबा लेल स्वतन्त्र नहि हेतीह, ताधरि एकर परिकल्पना मोसकिल अछि। परंच नारी आगां बढ़ि रहलीह अछि, ओ डेगमे डेग मिला क' चलबाक लेल अपन धाप बढ़ा रहलीह अछि।

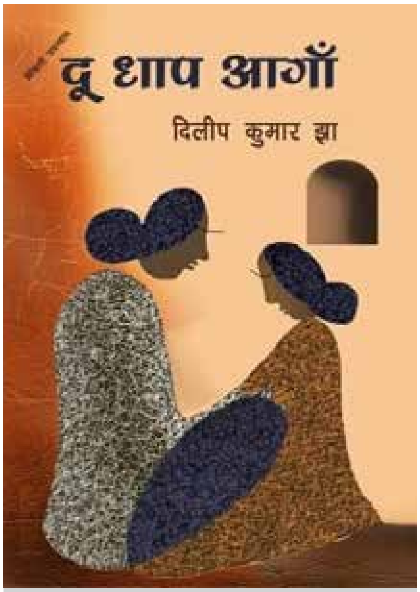

दू धाप आगां

रचनाकार	:	दिलीप कुमार झा
प्रकाशक	:	शेखर प्रकाशन, पटना
वर्ष	:	2018
मूल्य	:	₹ 200
पृष्ठ	:	125
विधा	:	उपन्यास

एकटा गामक बस्ती गोपालपुरसं दू धाप आगांक यात्रा शुरू होइत अछि। जन्म माने उत्सव सएह बुझैत अएलहुं अछि आइ धरि, मुदा ई की बेटीक जन्म लेलासं मातम पसरि गेलैक अछि लालबिहारी आ परमेश्वरक घरक संगहि सगर गाममे। कोना हएत अहांक स्वप्न साकार, जहन हालति एखनहुं बदतर अछि जे बेटाक जन्म पर माछ-भात आ रसगुल्लाक भोज होइत छैक आ बेटीक जन्म पर जेना कोनो सांप सूंघि गेल होइक। किछु तेहने सन स्थिति बुझना जाइत छनि लेखककें। एहन हालतिक लेल सेहो कतहु नहि कतहु हम स्वयं भागी छी। बेटीक जन्मसं दुखी छथि माइ सेहो, मुदा कहैत छथि अपन बेटीक हम पोसब दोसरकें नहि सोचबाक बेगरता छैक। तें कहल जाइत छैक माइ खाली एकटा शब्द नहि संसार थिक।

जन्म तं परमेश्वरक घरमे सेहो दू गोट बेटी परसं फेर एकटा बेटी लेने छलीह, मुदा जाहिठाम लालबिहारीक परिवार एकटा मजदूरक छल ओहिठाम परमेश्वर एकटा सम्बद्ध महाविद्यालयमे व्याख्याता छल, पत्नी सेहो शिक्षिका छलीह। मुदा हालति हिनक सेहो नीक नहि छल, किएक तें परमेश्वरकें दरमाहा नहि भेटैत छलनि। किछु दिन धरि भाइ मदति केलथिन, मुदा आब बेटीक जन्म भेलासं जेना कोनो पहाड़ खसि पड़लनि अछि।

गोपालपुरमे मीरा दीदीकें के नहि चिन्हैत छल? सभहक सभ हुनका खूब मानैत छलनि किएक ते ओ गामसं दूर पटनामे रहि क' सिनेमा आ नाटकमे काज करैत छलीह, दुनू बच्चा सभहक नाम वएह रखलीह अछि। लालबिहारीक बेटीक नाम राधा आ परमेश्वरक बेटीक नाम सुधा राखल गेल।

समय जेना-जेना बीतैत गेल, बेटी

पंकज कुमार (कलमजीवी) पेशासं विद्युत अभियंता छथि आ सम्प्रति उड़ीसा प्रवासमे टाटा स्टीलमे कार्यरत छथि। मातृभाषा मैथिलीमे नियमित लेखन। कविता लेखनमे विशेष अभिरुचि।
ग्राम+पोस्ट+थाना-मधेपुर, जिला-मधुबनी, बिहार, पिन कोड-847408
मो. *: 9658135262/ 7978373160,* **ईमेल** *: kumar.pankaj525@gmail.com*

पैघ होइत गेलीह, पढ़बाक वयस भ' गेल छलनि तें दुनू कें एकहि स्कूलमे नाम लिखा देल गेल आ हुनक पढ़ाई शुरू भ' गेल। राधा आ सुधा दुनू संगहि स्कूल जाइत छलीह, मुदा सुधा शुरूएसं पढ़ए मे तेज छलीह, खूब मोन लगा क' पढ़ैत छलीह, ओहिठाम राधा देखए मे सुन्दर छलीह आ फैशनप्रिय छलीह। हुनका पढ़ाई-लिखाइसं बेसी कोनो मतलब नहि रहैत छलनि। राधाकें मुखियाजीक बेटा अमितसं प्रेम भ' जाइत छनि, दुनू स्कूलोमे खूब अपन मनमानी करैत छल। सभ शिक्षक सभकें ई खटकैत छल मुदा एकटा कहबी छैक जकरे लाठी तकरे भैंस, मुखियाजीसं के दुश्मनी मोल लेत। तें दुनू कें एहि हालमे छोड़ि देल जाइत अछि।

होइते होइते मैट्रिक परीक्षाक परिणाम अबैत छैक, सुधा प्रथम श्रेणीसं आ राधा द्वितीय श्रेणीसं पास भेलीह, मुदा मुखिया जीक बेटा अमित फेल भ' गेल। सुधा आ राधा दुनू एकटा महाविद्यालयमे अपन नाम लिखबैत अछि। अमित सेहो कम्पार्टमेंट सं पास कएलाक पश्चात ओहिमे अपन नाम लिखबैत अछि। सुधा अपन लक्ष्य साधि क' खूब नीकसं पढ़ि रहलीह अछि आ इमहर राधा-अमित प्रेम राग बजबैत मगन अछि।

आजुक समयमे सभसं दुर्भाग्यपूर्ण अछि युवक-युवतीक अनावश्यक उठाएल गेल डेग, जे बिना उचित आ अनुचितक विचार केने ओ उठा लैत छथि। अपन जीवनक कोनो निर्णय साकांक्ष भ' नहि करैत छथि तें अपन परिवार आ समाजक लोकक डरसं गाम छोड़ि क' भागि जाइत छथि। एहिमे देखैत छी जे अमित आ राधा सेहो लोक लाजक चिंता-फिकिर केने बिना गाम छोड़ि क' भागि जाइत छैक। एक बेर फेर पाइक बले मुखियाजी मीडियाक मुंह बन्न करबा दैत छथि, विधायक बनबा लेल विरोधीक विरोधसं बचए लेल अमित आ राधाकें शहरसं ताकि क' आनि लैत छथि। लालबिहारी सन मजदूरक संगहि सौदा क' ओकर मुंह सेहो बन्न क' देल जाइत छैक। एहि ठाम लेखक देखाओलनि अछि जे शोषणक शिकार बेर-बेर एकटा स्त्री भ' रहलीह अछि चाहे अमितक प्रेमिका बनि क' वा आब वर्तमान विधायकक एकटा खेलौना बनि किंवा गोसांइक बेटाक पत्नी बनि जकरा सं चुपचाप बियाह करबा देल जाइत छैक, जे बियाहक मतलब तकसं अनभुआर रहैत अछि आ छोड़िक राधाकें बम्बई चलि जाइत अछि।

बात आगां बढ़ैत अछि, राधा आब राजनीति करए लगलीह अछि, उप प्रमुख सं प्रमुख आ चुनावमे विजयी भेलाक पश्चात विधायिका बनि गेलीह। एकटा मांजल खेलाड़ी जकां राज्यक शिक्षा मंत्रीक पद पर आसीन भ' जाइत अछि। एहि सम्पूर्ण प्रकरणमे लेखक आजुक समाजिक आ राजनीतिक चेतनाक मर्त्य रूपकें सभहक समक्ष राखलनि अछि, जे एकर परिदृश्य केहन छैक, लोक कतेक भ्रष्टाचार, लूट-खसोट, शोषणमे लिप्त छथि। ई क्रमश: सभ पात्रक माध्यमसं देखार कएलनि अछि संगहि चेताओलनि अछि जे एहि हालतिसं लड़बाक बेगरता छैक, तखनहि समाजमे किछु जनचेतना पसारल जा सकैछ।

एकटा शोषित स्त्रीक मनोदशाक चित्रण आ हुनक व्यथा स्पष्ट रूपसं सोझा नहि आएल अछि, से कनी खटकल अछि। हुनक सोंच एहि शोषित समाजक लेल केहन छनि? हुनका नजरिमे आर के के दोषी छथि? ओ स्वयंकें कतेक दोषी मानैत छथि? आदि,

एहिठाम एकटा शोषित स्त्रीक मनोदशाक चित्रण आ हुनक व्यथा स्पष्ट रूपसं सोझा नहि आएल अछि, से कनी खटकल अछि। हुनक सोंच एहि शोषित समाजक लेल केहन छनि? हुनका नजरिमे आर के के दोषी छथि? ओ स्वयंकें कतेक दोषी मानैत छथि? आदि, मुदा लेखक अन्य सहायक पात्रक मादे ई सनेस देबाक प्रयास अबस्स केने छथि, जेना हुनक पिताक आचरण, मुखियाक अतिवाद, गोसाईंक पिताक विवशता।

दोसर दिस सुधा, जे शुरुआते सं हिनक आदर्श पात्र छथि, हुनक माध्यम सं लेखक आजुक लचर शिक्षा व्यवस्था पर सटीक प्रहार केने छथि। सुधा पढ़ि लिखि क' एकटा होनहार बेटीक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि, बीए कएलाक पश्चात बीएड करबाक मनोरथ छनि मुदा एकरा लेल पाइक सेहो बेगरता छैक तें परिवारक हालति देखि क' ओ बीएड करबाक विचारक त्याग क' दैत अछि। किछुए दिन पश्चात एकटा अवकाश प्राप्त शिक्षक पुत्र शरद सं हुनक बियाह होइत छनि जे शिक्षित अबस्स छलाह मुदा चाकरी नहि छलनि। एकटा पोथीक दोकान चलबैत छलाह। बहुत पैघ-पैघ खानदान आ चाकरी बला सभहक रिश्ता आएल छल परंच दहेजक कारण ई रिश्ता सभ नहि भ' सकल। लेखक एहि ठाम फेर एक बेर सचेत केने छथि, जे दहेज समाजकें कोन-कोन रूपसं खोखला केने जा रहल अछि।

एकटा शिक्षित परिवारमे गेलासं सुधाकें एकटा फायदा होइत अछि ओ अपन मोनक आकांक्षा कें पूर्ण करबामे सफल भ' जाइत अछि। बीएड क' लैत अछि। मुदा एहिसं की होएत? लेखक एक बेर फेर शिक्षक बहालीमे होमए बला धांधलीकें सोझा आनैत छथि, पाइक खेल कतेक महत्वपूर्ण छैक से बताओलनि अछि। सुधाक नीक मेरिट रहलाक बादहु बहाली नहि होइत अछि। एहि उपन्यासमे लेखकक आदर्श पात्र सुधा एकटा योग्य स्त्री छथि, जे योद्धा जकां एकसरे एहि युद्धक मैदानमे आगां बढ़ि रहलीह अछि।

(शेष पृष्ठ 33 पर)

नवतुरियाक संघर्ष गाथा

✍ **प्रणव कुमार झा**

कुमार पद्मनाभ एकटा कुशल टेक्नोक्रेट शोधार्थीक संगहि एकटा शब्द सर्जक सेहो छथि। विविध सामाजिक, आर्थिक, व्यक्तिगत मुद्दा पर हिंदी, अंग्रेजी आ मैथिली मे ई ब्लॉग-रचना विविध इन्टरनेट माध्यम सं 2005-06 सं 'आदि यायावर', 'बकवासबाज' आदि नाम सं ब्लॉग लिखैत आबि रहलाए। फेर 'कतेक रास बात' पर सेहो कतेक रास बात कहला। तदुपरांत अपन वेबसाइट पर सेहो अपन शोधक विषय सहित आन आन विषय पर सेहो कतेक बात लिखला। फेर हिनकर एकटा किताब आयल छल 'भोथर पेन्सिल सं लिखल'।

किछु समय पूर्व पद्मनाभ के दोसर किताब जे कथा शैली मे लिखल एकटा कथेतर साहित्य कहल जा सकैछ से अछि, नाम अछि: 'पपुआ ढपुआ सनपटुआ'।

लेखक कहैत छथि जे ओ ई किताब अपन व्यस्त जीवन सं समय निकालि क' कइएक वर्ष मे लिखलैथ। ई हुनकर अपन भाषा सं प्रेम छलैन जे ओ ई किताब मैथिली मे लिखलाह, जबकि ओ अंग्रेजी या हिंदी मे सेहो लिखबा मे सक्षम छथि।

शुरुआत मे कहानी बहुत सपाट लागैत अछि, ओहि मुदा आधा कथा के बाद एकदम सं कथा मे जान आबि जायत अछि आ लगैत अछि जे ई पद्मनाभ जी के रचना छैक। कथा केर

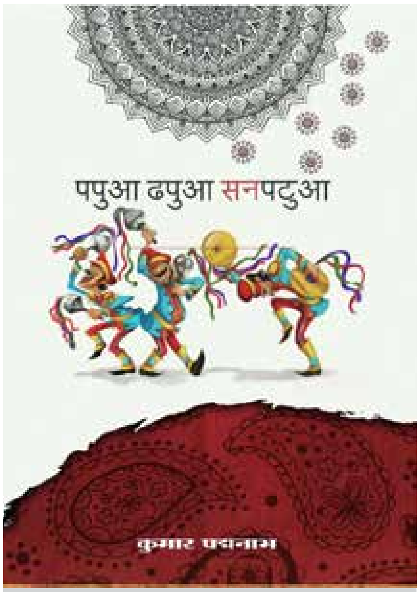

पापुआ ढपुआ सनपटुआ

रचनाकार	:	कुमार पद्मनाभ
प्रकाशक	:	नवारंभ, मधुबनी/ पटना
वर्ष	:	2018
मूल्य	:	₹ 200
पृष्ठ	:	284
विधा	:	उपन्यास

अलग अलग पात्र सभ के जीवन के उतराव-चढ़ाव, दुख-सुख के बीच अंत भला तं सब भला के तर्ज पर कथा के समापन हंसी-ख़ुशी मे भ' जायत अछि।

यद्यपि कथाक नायक आ नायिका अमोल आ वर्षा छथि, मुदा हमरा लेखे एहि कथाक वास्तविक नायक रंजीत छथि। वर्षा शहरमे रहै वाली पढ़ल-लिखल मिथिलानी छथि, अपना के नवीन सेहो बुझैत छथिन, नव युग केर अनुसार सोचे समझै, निर्णय लेबमे सक्षम मुदा तखनो समाज के लेल ओ कोनो एस्सेट जेका नै छथिन।

आईआईटी सं पढ़ल आ पैघ एमएनसीमे काज करै बला अमोल मे सेहो समाज कें आगां ल' जाय बला या अपन परिवार कें अपन दम पर चला लेबयबला हुनर नै छनि। मुदा एकटा साधारण किसान घर सं निकलल आ अपना बूता पर बैंक मे ऑफिसर बनल रंजीत समाज के लेल संपत्ति सन छथि। ओ अपन हिनस्ताय करबा क, बदनाम भ' क', दुखित भ' के, नै खाली वर्षा के मन माफिक विवाह होमय दैत छथिन अपितु अपन भाइ कें करियर बनाब मे सेहो अप्रत्यक्ष सहयोग करैत छथि। ओ ककरो सं बैर आ ईर्ष्या भाव नै रखैथ छथि। क्षमा हुनकर सभसं पैघ हथियार छनि जेकर प्रयोग सं समय बितला पर ओ सब कें हृदय जीति लैत छथि। समाजक कुरीति सब कें खुलि क' विरोध करै केर साहस रंजीत मे छैन्ह ताहि लेल ओ समाज सं कटि क' भले रहि जाइत छथि। क्षमा केर संग हुनकर व्यक्तित्व बहुत सोझरायल आ सूझ-बूझ बला सेहो छैन्ह। जे वर्षा कहियो हिनका दुत्कारने छलीह, समय एला पर ओहि वर्षा केर लगभग टूटि

प्रणव कुमार झा राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, नई दिल्लीमे वरिष्ठ सहायक (सूचना प्रौद्योगिकी) कें पद पर कार्यरत छथि। साहित्यमे विशेष रुचि।

संपर्क : *ग्राम: गोरापुर, जिला बेगूसराय, (बिहार)*

मो. *9312240126,* ***ईमेल :*** *jhapranaw@gmail.com*

चुकल पारिवारिक रिश्ता के ओ अपन सूझ-बूझ सं बचा लैत छथि।

अमोलक बहिन 'विभा' केर कथा मे बेसी स्थान नै मुदा हिनकर व्यक्तित्व, छोट शहर सं देशक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय तक सफर, फेर राजनीति आ एहि सब केर बीच मैथिल समाज के प्रतिकार, आदर्श विवाह लेल डिटरमिनेशन, हिनकर व्यक्तित्व कें मैथिल समाज केर परिप्रेक्ष्यमे नायिका रूपमे स्थापित करैत अछि। ओना विवाह नै करै के निर्णय द' के पिता के दुखी केनाय हमारा लेखे उचित नै छल, मुदा बाद मे विभा सेहो ऐ बात के अनुभव केलखिन आ विवाह के लेल तैयार भेली आ भगवती के कृपा आ पिता के ह्रदय सं देल आशीर्वाद के परिणामस्वरूप हुनका रंजीत सन वर सेहो भेटलैन।

कथा मे इहो बात पर फोकस थीक जे इंजीनियरिंग के पढ़ाइ करय वाली भौतिक सुख-सुविधा के आकांक्षी वर्षा होइथ वा जेएनयू केर शोधार्थी आ क्रांतिकारी विभा, दुनू अपन मनमुताबिक जीवनसाथीके तलाश मैथिले समाज मे करैत छथि। वास्तव मे ई बहुत हद तक ठीको छैक, किएकि बहुत बेसी सामाजिक आ सांस्कृतिक अंतर (जेना खेनाइ-पिनाई-पाबैनि-तिहार-लर-लगन-सर-कुटुम-समाज, भाषा-सोच आदि) भेने परिवार मे एडजस्ट केनाइ बेस कठिन भ जाइत अछि। तैं जाति-पाति आदि सं बेसी रहन-सहन (लाइफ-स्टाइल) मैच करब बेसी आवश्यक अछि एकटा परिवारक ढांचा के मजबूत करै मे। साइत लेखक सेहो एहि तथ्यक स्वीकारोक्ति अपन कथाक माध्यम सं द' रहल छथि।

विमलक व्यक्तित्व कथाक एकटा पावर-पैकेट चरित्र अछि जे कथा मे एकटा नया कोण जोरि दैत अछि। बकौल लेखक, विमलक चरित्र एकटा वास्तविक जीवन के पात्र सं लेल गेल अछि। ओना त' कथाक अन्य पात्र सब सेहो वास्तविक जीवन के बहुत लग अछि आ नब्बे आ दू हजार केर दशक मे पैघ होइत जेनेरेशन के कहानी अछि, ताहि लेल ऐ कथा के कथेतर कहल। विमलक कथा, कोनो पाठकक शोणित केर प्रवाह बढ़ा देतैन, सं हमर विश्वास अछि। ई पात्र पाठकक लेल बहुत प्रेरणादायी सेहो अछि। आ हम आशा करैत छी जे ई पात्र कइएक टा युवा के प्रेरणा देतैन, खास क' रोजगारक जे समस्या वर्तमान समयमे उत्पन्न भेल अछि।

कथाक भूमिकामे लेखक कहैत छैथि जे "कथा के पात्र जेना लगै अछि जे हमरे वास्तविक जीवन के अंग सब अछि, सभसं कतौ ने कतौ जिनगी मे भेंट भेल अछि''। विभिन्न वर्ग आ स्वाभावक

हमारा हिसाबें नवतुरिया लोकनि कें किताब नीक लगतैन आ प्रेरक सेहो हेतैन, तैं हिनका सब कें किताब पढ़बाक चाही। किताब पढ़बाक प्रेमी आ अधवयसु आदमी जे अपन जिनगी मे संघर्ष केलाह तिनको किताब नीक लगतैन। मुदा जे किताब मे पारंपरिक मैथिली साहित्य खोजता तिनका किताब सं निराशा भेंट सकै अछि।

पाठक वर्ग कें सेहो ऐ कथाक पात्र सबमे कतहु ने कतहु अपन या अपन जीवनक आसपरोस केर पात्र सब केर छांह देख लेल भेंट सकै अछि। ई बात सेहो पाठक के कथा से बानहने रहैत छैक। हम अपन व्यक्तित्व मे सेहो रंजीत आ अमोल के चरित्र सब के मिश्रण देखैत छी।

पोथी के कवर पेज मे मिथिला पेंटिंगक झलक अपना लोकनिक सांस्कृतिक पहिचान बताबैत अछि आ ओहि मे उत्तर भारत मे विवाहक अवसर पर हुअ' वला सामान्य नाच जे एहि गप्पक द्योतक अछि जे मिथिला सं बाहर रहय वला लोक स्थानीय संस्कृति सं प्रभावित भ' के विवाह सनक सांस्कृतिक कार्यक्रम मे नहुए नहुएं दोसर संस्कृति कें अपना रहल छथि।

कथाक संपादनमे किछु त्रुटि अवस्से बुझाना जाइत अछि। कथामे कइएक टा पैराग्राफ/कथांश दोहरायल गेल अछि। जकरा सुधार कैल जा सकै छल, जाहि सं कथा आरो बेसी कसल बनी सकै छल। किछु मैथिली शब्द मे सेहो त्रुटि छैक, खैर "नयीवाली हिंदी'' के तर्ज "नव मैथिली'' विधा के रचना कहल जा सकै अछि आ लेखक किएकि मूल रूप सं टेक्नोक्रेट छथि त' ई छूट देल जा सकै अछि। किछु प्रिंटिंग त्रुटि सेहो छैक, जाहिमे एकहि शब्द के किछु अंश उपरका लाइन मे आ बांकी अगिला लाइन मे छैक।

पुस्तक किनका लेलः नवतुरिया लोकनि कें किताब नीक लगतैन आ प्रेरक सेहो हेतैन, तैं हिनका सब कें किताब पढ़बाक चाही। किताब पढ़बाक प्रेमी आ अधवयसु आदमी जे अपन जिनगी मे संघर्ष केलाह तिनको किताब नीक लगतैन। मुदा जे किताब मे पारंपरिक मैथिली साहित्य खोजता तिनका किताब सं निराशा भेंट सकै अछि। ई कथाक पात्र सब टिपिकल ग्रामीण मैथिली चरित्र अथवा पूर्ण साहित्यक कल्पना (फिक्सन) नै भ' क' एकटा आधुनिक मैथिल समाज के पात्र सब, जे विविध माध्यम आ कारण सं ग्रामीण समाज सं उपटि क' देश-विदेश के विभिन्न शहर आ महानगर मे बसै छथि, हुनकर जीवनचर्या के लगिच अछि। कथा के बहुतबेसी ड्रामेटिक सेहो नै बनायल गेल अछि, बेसी फोकस चरित्र सब पर कैल गेल अछि, आ ओय लक्ष्यमे लेखक कामयाब होइत लागैत छथि। ई पुस्तक नव लेखक सब कें बदलैत ज़माना के हिसाब सं नव चरित्र, नव मुद्दा आ नव स्वाद देबय वाला मैथिली गद्य लिखवा के लेल प्रेरित करत। ■

कुहरैत-छटपटाइत मानवीय मूल्य ओ काम कुंठाक कथा

✍ **नारायण झा**

समीक्षक-कथाकार ललितेश मिश्र मैथिली साहित्यमे अपन एक गोट समीक्षा पोथी 'प्रस्तावना'क संग वर्ष 2000 ई. मे उपस्थित भेल रहथि, जे पोथी अपन सामर्थ्यसं बेस चर्चित-प्रशंसित-मूल्यांकित भेल छल। मैथिली साहित्य मध्य ई पोथी कोन रूपें विशिष्ट अछि, से एखनहुं देखल-परेखल जा सकैए। ललितेश मिश्र समीक्षा-कथाक संग कवितो लिखलनि जे विभिन्न मैथिली पत्रिकादिमे प्रकाशित भेल छलनि। ललितेश जी - ललित, राजकमल, सोमदेव, मायानन्द, राजमोहन, सुभाषचन्द्र, धीरेन्द्र आदिक संगहि सातम शताब्दी (1970 क आसपास) सं मैथिलीक विभिन्न पत्रिकामे छपैत रहलथि। कथाकार ललितेश मिश्र किछु बेसी अंतरालक बाद एक गोट कथा संग्रह लए अपन उपस्थिति दर्ज करा मैथिली साहित्यमे नव डेग बढ़ौलनि अछि। पोथीक नाम अछि 'बीच वैतरणीमे', जाहिमे कुल अठारह गोट कथा संग्रहित अछि आ जे 2018 ई. मे पुस्तकाकार प्रकाशित भ' मैथिली पाठकक समक्ष आयल।

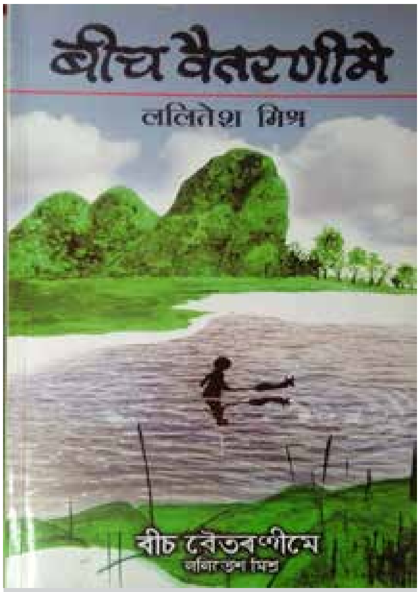

बीच वैतरणीमे

रचनाकार	:	ललितेश मिश्र
प्रकाशक	:	किशुन संकल्प लोक, सुपौल
वर्ष	:	2018
मूल्य	:	₹ 250
पृष्ठ	:	150
विधा	:	कथा-संग्रह

पोथीक प्राय: सभ कथा अपना तेवर-कलेवरमे सम्पूर्ण ओ विशिष्ट अछि, जकर कथा परिवेश ग्राम्य जीवन ओ शहरी जीवन दुनू अछि। कथा सभमे सम्पूर्ण रूपें एहेन विशेषता छैक जाहिसं कथा पढ़बा काल पोथी छोड़बाक इच्छा नहि भ' सकैछ जावत धरि पूरा कथा पढ़ि नहि लेल गेल हो। कथाक आधार तत्वक निरिक्षणक क्रममे लागल जे कथा सभमे फ्रायडीय विचारधाराक उपस्थापन नीक जकां भेल अछि। आजुक समय जेना कपोल कल्पनामे नहि बौआए चाहैत अछि, आडंबरी संसारमे परिभ्रमण क' भ्रमित नहि होअय चाहैए, तें हिनकहुं कथा सभ यथार्थक धरातलपर पुनकैत, पल्लवित-पुष्पित होइत भकरार होइत देखाइत अछि। कथा सभमे मानव मोनक अन्तर्द्वन्द्व, मानवीय यौन पिपासा, विकल्पहीन थकमकी, मानवीय मूल्यक अति क्षरण, मानवक बहुभोगी प्रवृत्ति, कर्त्तव्यहीनता आदि समुन्नत ढंगे आयल अछि। कथाक कथ्य, भाषा, शब्द सौन्दर्य, शिल्प-शैली, नायक-नायिकाक चरित्र, कथोपकथन आदि प्रयोजनीय-प्रमाणिक अछि।

विशिष्ट कथाकारक इहो पैघ गुण होइत छैक जे ओ अपन कथामे औत्सुक्य उत्पन्न कएने, पाठकके‌ं अंत धरि बिनु बोझिल भावे जोड़ि रखैत छैक। तहू दृष्टिएं कथाकार ललितेश दृष्टिसम्पन्नताक बोध करबैत, कथाकें बोझिल नहि बनबैत, पूर्ण सफल कथाकारक रूपमे देखा रहल छथि। कथाक आकार-प्रकार दृष्टिसं सेहो संतुलित कथाक सभ गुण निहित अछि। कथाक कालखण्डक गप करी तं पबैत छी कथा सभ सातम-आठम दशकक कथा अछि, मुदा कथा सभ वर्तमान समयकें प्रतिनिधित्व तं अवस्से क' रहल अछि। कथा कतए-कतए, कहिया-कहिया प्रकाशित भेल छलनि, सेहो कथाक अंतमे लिखल अछि। कोनो-कोनो शब्द-पद जे ओहि समयकें प्रतिनिधित्व करैत अछि ताहि (कालखण्ड) सन्दर्भ जे हमरा खटकल अछि, जकरा अपडेट भ' अएबाक चाही। जेना बिहाड़ि कथामे - "नै रिक्शा, नै टमटम", आगि आ पाथर कथामे - "एगारह टाका आशीर्वादीमे

नारायण झा शिक्षक छथि। एखन तक तीन गोट पोथी प्रकाशित छनि। पहिल पोथी 'प्रतिवादी हम' कविता संग्रह पर साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2015 प्राप्त छनि। दोसर पोथी 2017 ई. मे 'अविरल-अविराम' कविता संग्रह आ तेसर 'मैथिली निबन्ध मालिका' निबन्ध संग्रह 2018 ई. मे प्रकाशित भेलनि।

संपर्क *: ग्राम+पोस्ट-रहुआ-संग्राम, प्रखंड-मधेपुर, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिनकोड-847408*

मो. *8051417051,* ***ईमेल*** *: narayanjha1980@gmail.com*

देल गेल'', कखन हरब दुख मोरमे – "एक सए चौहत्तरि टाका दरमाहा''। हमरा हिसाबे कथा छपि गेल रहैक तकर बादो कथाकारकें एहि बिंदु पर अपडेट क' कथा संग्रहमे सोझां अनबाक चाही। एहि समयक उत्कृष्ट कथा संग्रह सभक पंक्तिमे ई कथा संग्रह ठाढ़ भेल दृष्टिगोचर भ' रहल अछि। एहि कथा संग्रहक सम्बन्ध प्रकाशकीयमे कवि-कथाकार केदार कानन लिखैत छथि- "हिनक कथामे अनुभवक विविध संसार भेटैत अछि। कथाक बहुरंगी दुनियांसं यात्रा करैत पाठककें कतहुं-कतहुं आभ्यन्तरीण दैहिक भावक उच्छवास लागि सकैत अछि।''[1]

ललितेश मिश्र समयक संग, यथार्थक संग, आधुनिक कथाकारक रूपमे समकालीन विषयक कथ्य संग विकट परिस्थिति, मानव मनक अन्तर्द्वन्द्व आ विकल्पहीन परिस्थितिकें उजागर करैत बहुतो बात सतर्कतापूर्वक सामने अनैत छथि। एहि संग्रहक एकटा विलक्षण कथा अछि 'समुद्र', जे फ्रायडीय मनोविज्ञानकें पुष्ट करैत, सुंदर ढंगसं विशिष्ट कथा रूपमे स्थापित भ' जाइत अछि। एहि कथामे कथा नायक स्वयं आ कथा नायिका निरमला रहैत छथि। एहि कथामे दू प्रकारक मोनकें देखाओल गेल अछि। एकटा निरमलाक मोन जे हुनका पतिकें ग्रामीण द्वारा भ्रमित कएला बाद बंगाल ओगरब, तकर बादो निचैन भ' अपन मोनकें संतुलित रखैत छथि भविष्यक आसमे। दोसर जे स्वयं कथा नायककें फ्रायडीय मनोविज्ञानसं उत्प्रेरित मोन, सदिखन काम कुंठाक समुद्रीय ज्वार -भाटामे उथल-पुथल होइत रहैत छनि। कखनहुं शांत तं नहिये होइत छथि आ निरमला भौजीकें डसबा लेल सदिखन दांत निकालैत रहैत छथि। कथा नायकक मोन कखनहुं चेतन, कखनहुं अर्द्धचेतन तं कखनहुं अवचेतनमे भ्रमित होइत रहैत छनि, जकरा कथाकार मनोवैज्ञानिक रूपमे पकड़लनि अछि, जे एहि कथाक एकटा विशिष्ट पक्ष थिक। एहि कथामे एकठाम कथा नायक पुछैत छथिन- "भौजी कनैत किए छी? / बाउ! दुष्ट लोकक कुप्रचार पर हमरा अहां की बुझि लेलहुं? / – "ओ बिकल भेलि थरथराइत कहैत छथि''।[2] एहि प्रसंगसं कथा नायिका निरमला भौजीक मोनक बात स्पष्ट भ' जाइत अछि, जे हुनका मोनक भीतर कोनो परपुरुषक प्रति बिहाड़ि-उत्सुकता, उत्फाल नहि भेल छनि, ओ समयक प्रतीक्षामे दबि क' संयोगल अछि। जाहि ठाम कथा नायक अपन काम लोलुपताक कारणें पापी बनि जाइत छथि। मुदा कथानायिका अविचल रहि प्रतीक्षा करैत छथि थिर मोने। कथा अंत दिस बढ़ैत – बढ़ैत एकटा एहेन बिंदुपर पहुंचैत अछि, जाहि कारणें कथा आओर विशिष्टसं विशिष्टतम दिस अग्रसर होइत अछि। मोन पड़ैत अछि राजकमलक फुलपरासवाली, जाहिमे फुलपरासवाली दियरक भ्रम तोड़ि अपन संस्कृति-मर्यादामे जीवन गाड़िकें रहलीह। समुद्र कथामे तहिना निरमला भौजी भ्रमित नहि भेली,

ललितेशक 'समुद्र' कथाकें राजकमलक कथा फुलपरासवालीसं आगुक कथा कहबामे कोनो अतिशयोक्ति नहि कहल जएतैक। हमरो एहि संग्रहक सभसं उत्कृष्ट कथा यैह लागल।

अपन इज्जति बचा रखलीह, कथा नायकक बहसल मोनपर बज्र खसेलीह। मुदा एहि कथाक अंतिममे जखन निरमला भौजीक पति सात बरख बाद घुरिकें आबि जाइत छनि आ ओ हुनकामे बाझि जाइत छथिन, जे एहि कथाक सभसं विशिष्ट पक्ष थिकै। ललितेश जीक समुद्र कथाकें राजकमलक कथा फुलपरासवालीसं आगुक कथा कहबामे कोनो अतिशयोक्ति नहि कहल जएतैक। हमरो एहि संग्रहक सभसं उत्कृष्ट कथा यैह लागल।

कथा 'फाटह हे धरती' भूख आ काम केर धरातलपर उपजल विलक्षण कथा अछि, जाहि कथाक माध्यमे कथाकार भूखसं त्रस्त भेल एकटा सामाजिक वर्गक कारुणिक यथार्थ परिस्थितिसं अवगत करबैत, ओकर विवशताकें देखबैत छथि। तं दोसर दिस एकटा संपन्न वर्गक काम लोलुपता, बहुभोगी दानवी मनोवृत्ति कोन रूपें अन्नक भुखाएल वर्गक दैहिक शोषण करैत अछि, तकरा सामने अनैत छथि। कथा पढ़लासं बुझबामे स्वत: आबि जाइत छैक जे कथामे परिस्थिति आ ओहि परिस्थितिमे विकल्पहीन विवशताक सुंदर सांगोपांग चित्रण भेटैत अछि। निम्नवर्गीय सामाजिक जीवन लेल बहुतो लेखक कलम उठौलथि जेना किरण जी, सोमदेव आ सुभाष चन्द्र यादव आदि। ललितेश मिश्र एहि कथामे जड़िक पृष्ठभूमि जे भूख छैक ताहि लेल आ कथाक आधा हिस्सा जे काम-लोलुपता छैक ताहि लेल ललित-राजकमले जकां कलम चलौलनि अछि। गरीबक जीवन प्राय: एहिसं किछुए परिवर्तित भेल अछि, एखन जेना देखबामे अबैत अछि। कथामे सुरजा बीमार अछि, भूखसं त्रस्त अछि, तखन ओ उदरपूर्ति लेल बड़ा बाबू ओतए अपन बेटी बुचियाकें भानस-भात करबा लेल छोड़ि दैत अछि। बड़ा बाबूक अन्तर्मनमे बुचियाक देखिते-देखिते उथल-पुथल होअय लगैत छैक। एक दिन बुचियाकें घर घुरएमे देरी होइत छैक। बड़ा बाबू ओहि दिन सांझमे बुचियाकें दैहिक शोषण करैत रहैत छैक, तकरा सुरजा देखि लेत छैक जखन बाट तकैत-तकैत बड़ा बाबूक घर अबैत छैक। कथाक अंश देखल जाए- ''ओ खूब जोरसं चीत्कार क' उठल- ओह... बाप रे... हे धरती माय... आबहु फाटह...।''[3] एहि घटनाक दोसरे दिन सुरजा मरि जाइत अछि। सामाजिक यथार्थक नीक विश्लेषण अछि जकरा अपन कथामे कथाकार अश्लीलता आ श्लीलताक बीच असमंजसमे नहि झूलए देलखिन, जे कथाकारक अपन कथा-कौशल होइत अछि। एहि कथा संग मोन पड़ैत अछि धूमकेतुक विशिष्ट कथा अगुरबान। अगुरबान कथामे जीहलाह ओ अथबल पंडित लेल, पंडित पत्नी ड्योढ़ीमे देह अर्पण कएलथि, ततए 'फाटह हे धरती' कथामे एकटा बेटी अपन अति दुखित पिता लेल विवश भ' शोषित भेलीह, जे बिंदु तुलनात्मक

रूपें एहि कथाकें आओर विशिष्ट बना दैत अछि। मानव संग बहुतो परिस्थिति अबैत छैक, ओहि परिस्थिति संग बहुतो रंगक विवशता अबैत छैक जाहि ठाम मनुक्ख भ' जाइत अछि किंकर्तव्यविमूढ़, से विलक्षणतापूर्वक कथाक उतार कएने छथि।

कथा बिहाड़ि कथ्य, शिल्प-शैली, भाषा-शब्द हिसाबे उत्कृष्ट अछि। एहि कथामे बिहाड़ि जे शीर्षक रूपमे आयल अछि, ओ काम कुंठा वा काम लोलुपताक पर्यायवाची शब्द रूपमे आयल अछि। कथामे कथा नायक स्वयं कथाकार छथि जे एकठाम कहि उठैत छथि- "मनुक्ख तं बहुभोगी अछि।"[4] सत्य एहि कथामे कथा नायकक यौन पिपासा कथा नायककें पशु सदृश्य बना देने छनि, जेना पशुमे यौन पूर्त्ति हेतु कोनो सम्बन्ध नहि होइत छैक, मात्र नर आ मादा होइत छैक तहिना। किएक एकहि संग यौन उन्मादमे मां गायत्री आ बेटी सीता संग यौनाकांक्षा होयब एहि बातक उत्कट प्रमाण अछि। थोड़ेक अनकट्ठल सन दृश्य आबि गेल अछि। एहिसं पूर्व मैथिलीमे ललित, राजकमल, धुमकेतु आ हिन्दीमे मंटो आदि नग्न सत्यकें उघार कएने छथि। मुदा मैथिली साहित्यमे एहेन सन यथार्थ-कल्पना कम आयल अछि तकर कारण अछि मैथिल संस्कृति, मैथिल मर्यादा आदिक अनुपालन। मुदा लेखकीय क्षमता ओहन हेबाक चाही जाहिमे अश्लीलता आ श्लीलताक बीच ओझरोहटि नहि भ' जाए। संगहि निर्भर करैत छैक मैथिली भाषाक पाठकक ग्राह्यता पर सेहो, जे ओकरा ऊपर की 'प्रभाव' होइत छैक। कथामे गायत्री एकटा ओहन स्त्री, जकरा हुनक पति बालकृष्ण द्वारा अवहेलनाक भाव देखल जाइत छैक। ओहि अवहेलनाक कारण अछि बालकृष्ण पर काजक दबाब आ एकटा आओर स्त्री बालकृष्णकें कतहु भेटि जाएब। एकांतमे रहैत-रहैत, पति द्व ारा अवहेलित होइत-होइत, यौन कुंठाक दमित इच्छा जमा होइत-होइत, गायत्री हिस्टीरियाक रोगी भ' जाइछ, आ परपुरुषक आवरण करबा लेल उद्यत होइत छथि। एम्हर कथा नायककें यौन कुंठा, उत्सुकता आ महा बिहाड़ि तेना गछाड़ि लैत छैक जे ओकरा स्वर रहैत स्वरहीन बना दैत छैक। कथा नायककें गायत्रीक यौवन देखि आंखिये नहि कोनो टा अंग हटिते नहि छैक संगहि गायत्रीक बेटी सीताक प्रति सेहो ओहने भावक अंकुरण होमय लगैत छैक। एकठाम कथाकार कथा नायकक भाषामे सीताक सम्बन्धमे कहैत छथि- "नहि जानि, एकरा जहियासं हम देखलिऐक अछि तहियेसं हमरा मोनमे एकटा नाग सांप, विषाह, पैसि गेल अछि। एहि करिया, उपद्रवी नागक दांत हरदम कनकनाइत रहैत छैक। नहि जानि कखन एहि

कथाकार बिहाड़ि कथामे एहि बिंदुपर हुसि गेलाह जे एके संगहि माए - बेटीक उपस्थापन काम-पूर्त्ति हेतु क' देलथिन। सीताक बदला दोसर कोनो चरित्र नायिका होइतैक जे गायत्रीक बहिन वा दियादनी वा आरो कोनो चरित्र गढ़ल जा सकैत छल।

बारह बरखक कोमल, लगुजा सीताकें अनचोकेमे ई नाग डंसि लेतैक। विषसं स्याह क' देतैक।"[5] ई कथा अपन उद्देश्य पर अवश्य पहुंचि गेल अछि। पूर्ण सफलो भेल अछि। कथाक सभ तथ्यक नीक जकां स्थापन भेल अछि। मुदा ऊपरका यैह पांति हमर मोनकें खसा देलक जे कथाकार बहुभोगी मनोवृत्तिक उत्तम परिपाक करबा लए सीता जे बेटी अछि गायत्रीक, तकर चयन किए कएलनि? हमरा हिसाबे कथाकार एहि कथामे एहि बिंदुपर हुसि गेलाह जे एके संगहि माए - बेटीक उपस्थापन काम-पूर्त्ति हेतु क' देलथिन। सीताक बदला दोसर कोनो चरित्र नायिका होइतैक जे गायत्रीक बहिन वा दियादनी वा आरो कोनो चरित्र गढ़ल जा सकैत छल। सभ तरहें एहि कथाकें विलक्षण कहल जा सकैए, से कथामे तागति छैक।

कथा 'बीच वैतरणीमे' एहि संग्रहक शीर्षक कथा अछि। एहि कथाक केन्द्रीय उत्स अछि - ठीक ओहिना जेहेन बीच वैतरणीमे अति कष्टक कल्पनाक प्रसंग आयल छैक, तहिना त्रिलोचनकें अति कष्टक अनुभव होइत छनि। त्रिलोचन अति कष्टकारी कष्टक अनुभूति करैत जीवन आ मृत्युक बीच लटकल छथि, जेना कथा संग्रहक कवर पेजपर एकटा व्यक्ति गाय केर नांगरि पकड़ने अथउथमे लटकल अछि। ताहि कष्टक जड़ि त्रिलोचन अपने रोपि लैत छथि जे अपन कनियां रहैत फेरसं जे मन भरछैत छनि ताहि लेल प्रेमक परदाक पाछां बहशीपन प्रवृत्तिक प्रतिकारमे परदेशमे विजातीय वियाह क' लैत छथि। पुनः बहुत दिनुका बाद साहस क' जखन त्रिलोचन गाम अबैत छथि तं ओतहुं तिरस्कृत होइत अति कष्टक अनुभव करैत छथि। पत्नी देखि घर चल जाइत छनि, माए तं माए होइछ, तइयो ओ पिता लेल जाए कहैत छथिन। घरमे स्वीकार्य नहि होइत छथि। एहि कथाक पिताक चरित्र मायानन्द मिश्रक 'मिझाइत दीप' वा 'चन्द्रबिंदु' सन नहि अछि, एहि कथाक पिता छथि सभ तरहें सामर्थ्यवान। जे पिता त्रिलोचनक किरदानी माफ करबा लेल तैयार नहि होइत छथि, जाहिसं समाजक लेल जीवनमे अराजकताक प्रति विक्षोभक संदेश जाइत अछि। कथाक अंत तहिना मार्मिक भ' उठैत अछि जखन घुरि क' फेर शहर अएला बाद घर बन्द देखैत छथि। घर खोलला बाद घरमे राखल पत्र पढ़ि ओ बीच वैतरणीक भोग भोगए लगैत छथि। तखन मोन पड़ि जाइत अछि ललितक वाणीक मुक्ति कथा। ललितक ओहि कथामे प्रसंग अछि जे वाणी अपन पतिक स्त्रैण स्वभावक कारणें, पतिक परित्याग क' अपन स्वाभिमानी भाव जगौने छलीह, जकरो भीतर काम कुंठा रहल हेतैक वाणीकें, जे बुझबाक बात छैक। मुदा एहि 'बीच वैतरणीमें' कथाक कथा नायक त्रिलोचनक नव पत्नी स्वाभिमानी छथि, से अपना हिसाबे सही छथि। त्रिलोचनक नव

पत्नीक अन्तिम चिट्ठीमे यएह भाव व्यक्त भेल छैक जे अहां कायर, प्रपंची, झुट्ठा, असभ्य, बैइमान छी जे ठकि हमरा प्रेमक लोभ दए वियाह क' लेलहुं। त्रिलोचनक नव पत्नीक कहब यथार्थ छैक जे - जं अहांकें हमरा प्रति पूर्ण समपर्ण नहि रहए तं बियाह किएक कएलहुं? अर्द्ध समर्पण भाव केर कारणें अहां पुन: अपन घर घुरलहुं, तखन एकटा ठोस स्त्री आ स्त्रीक जीवन लेल भरोस केनाइ उचित तं नहिये। समाज लेल एहिसं नीक संदेश की भ' सकैछ। आइ-काल्हि जेना प्राय: प्रेम छैक ओ पूर्ण रूपें वासना मात्र छैक, जाहि ठाम नारीकें सावधान होइबा लेल ई कथा पढ़क चाही। तहिना समाजक पुरुषकें आंखि खोलि लेबाक चाही जे एहेन सन अपराध नहि हो। चेतौनी दैत यथार्थ सन्देश बिलहैत, यथार्थपरक कथा अछि।

एहि कथा संग्रहक एकटा कथा अछि 'निर्वासन', जाहिमे एकटा भावुक पात्र देवदासकें केन्द्रमे राखि मार्मिक कथा रचल गेल अछि। एहि कथामे एहेन मार्मिक परिस्थिति उत्पन्न होइत छैक जे प्राय: हरेक गाममे एहेन देवदास भेटि सकैए जे एकटा निर्वासित जीवन जीबाक लेल बाध्य होइत छथि। देवदासक भैयारी सभक दुष्टता, अति स्वार्थपरकता लग स्वयं देवदास विवश भ' हारि जाइत छथि। कथाक अन्त मार्मिकताक शीर्ष कें छुबैत, अतिस्वार्थी भाव कें उजागर करैत, दुष्टताक प्रमाण प्रस्तुत करैत, सहोदर सम्बन्धक चरित्र उघार करैत, भाइ-भाइ बीच स्नेह खंडित होइत पूर्ण होइत अछि। देखि सकैत छी एहि कथाक अंश- "ले तोंहि सभ समुच्चा राजपाट, ले सभटा धधकल अंगोरा। हम तं तोहरा सभक हड़हड़-खटखटमे नहि रहब। के कपरफोड़ी करए गय। तोहरा सभक दुष्टता अनसहाज अछि। हम तं ईश्वरक सेवक छी। रमता योगी, बहता पानी...।"[6] देवदासकें विवश भ' सभ किछु छोड़ि निर्वासित जीवनक पर्याय बनए पड़लनि अछि। एहि कथाक पात्रोचित भाषा, शिल्पगत विशेषता आ परिवेश तं सही अछिये, एहि कथासं इहो संदेश भेटैत अछि जे परिवार, समाज, देशमे जीवन जीबा लेल सम्पूर्ण रूपें सफल होयब जरूरी अछि। ओहि सफल जीवन जीबा लेल आत्मविश्वास, आत्माभिमान, स्वार्थहीनता, अनुशासन, सामाजिक-पारिवारिक मर्यादा आ आर्थिक रूपें सम्पन्न होयब आवश्यक अछि।

एकटा आओर कथा अछि, जकर पृष्ठभूमि ओही निर्वासन कथासं मेल खाइत अछि - ओ कथा अछि "भीजल आंखि आ अन्हार"। प्राय: एहू कथामे ग्रामीण परिवेशगत पारिवारिक समस्या चित्रित अछि। एक दिस कथा नायक स्वयं पिता आ पत्नीक अस्वस्थताक जालमे घेरल रहैत छथि, तं दोसर दिस दियाद-बादक घृणित मनोदशा, बैइमानीसं आदि पीड़ादायक क्षणसं घेराएल रहैत छथि। मुदा ओ समयसं लड़ैत छथि, हारैत नहि छथि। अपन पारिवारिक दायित्वक निर्वहन हेतु कर्मपथ दिस बढ़ि चलैत छथि। स्कूलसं आबि छुट्टीमे कोनो विशेष नियारल काज नहि क' पबैत छथि आ मात्र दबाइ-पानि करैत समय बीति जाइत छनि। एहि पारिवारिक विवशताक कारणें अपन जमीन-खेत तक कें ठीकसं रक्षा नहि क' पबैत छथि। निर्वासन कथाक दियादी दुष्ट प्रवृत्ति सन दियाद-वाद सभ हिनक बाड़ीमे टाट लगा लैत छनि। एहि स्थिति देखि मोकदमा करबाक मोन होइत छनि, मुदा पारिवारिक अस्वस्थ हालति आ अपन स्कूल घुरि जएबाक बातसं विवशताक बीच घुरियाकें रहि जाइत छथि। पिता आ पत्नीक मोन टनमनाइत छुट्टी बीति जाइत छैक। छुट्टी बितैते पिताकें प्रणाम करैत, नोराएल-भीजल आंखिये बेटाकें संग लगेने बढ़ए लगैत छथि सुच्चा कर्मवीर जकां। भीजल आंखिये अन्हार होइत अपन परिवार आ परिवारक सदस्यकें देखैत जे बढ़ि जाइत छथि कर्मक्षेत्र दिस, तकरा कथाकार कथामे स्वस्थ संदेश देबाक बड्ड चिक्कन प्रयास कएलनि अछि, से नोटिस लेबाक आवश्यकता छैक।

आइ-काल्हि जेना प्राय: प्रेम छैक ओ पूर्ण रूपें वासना मात्र छैक, जाहि ठाम नारीकें सावधान होइबा लेल ई कथा पढ़क चाही। तहिना समाजक पुरुषकें आंखि खोलि लेबाक चाही जे एहेन सन अपराध नहि हो। चेतौनी दैत यथार्थ सन्देश बिलहैत, यथार्थपरक कथा अछि।

एहि संग्रहक कथा 'ठेस' पढ़ि ठीके बहुतो लोककें ठेस लागि सकैत छनि, से हम अति विश्वासक संग कहि रहल छी। एहि कथामे कथाक पात्र चनरदेव मिश्र एकटा ओहन केरेक्टर अछि जकरा हम बौराएल पुरुष कहि सकैत छी मुदा धन-जमीन अरजै लेल अपसियांत रहए वला बताह सेहो कहबामे हर्ज नहि अछि। एहि तरहक लोक एकभग्गु होइत अछि, ओ केम्हरो आन दिशामे नहि ताकि सकैत अछि, चाहे जे बीति जाउ। जीवन जीबाक अर्थ मात्र धन-सम्पत्ति अरजब नहि थिक। गाम हो वा शहरी जीवन, एहि वर्तमान समयमे एहेन सन दृश्यसं बियाह टुटैक बात अबैत छैक वा कतेको परिवारक स्त्रीकें चरित्रहीनक प्रमाण-पत्र भेटि जाइत छैक, एहि संदेशकें संयोगि सकैत छी हम सभ। एहू कथामे फ्रायडक सिद्धांतकें सिद्ध करैत कथाकार पुन: नीक रंग भरलनि अछि। कथाक स्त्री पात्र चनरदेव मिश्रक पत्नी महालक्ष्मी चिक्कन-चुनमुन, देहगरि-दशगरि छथि। मुदा चनरदेव मिश्रकें डराइबरी क' धन अरजबासं आ ओहि धनसं जमीन कीनबासं कखनहुं फुरसत नहि भेटैत छैक, जे एको पल अपन स्त्रीक काया आ स्त्रियोचित मनोभावनाकें निंहारि देखतथि। महालक्ष्मीक मोनमे सेहो आने स्त्री जकां वैवाहिक सभ सुख पबैक आ कोखि भरबाक लालसा छैक। मुदा चनरदेव मिश्रकें कोनो लेना-देना नहि, भांग खा मस्त रहए वला लोक। महालक्ष्मीक एकाकीपन आ ताहि बीच पति-पत्नीक सम्बन्ध बीच बढ़ैत फांकमे बालसंगी लूटन झा जगह बना लैत छैक। महालक्ष्मीक मोन लूटन झा पर भ्रमण करए लगैत छैक। एक दिन संयोगसं गंगास्नान करए जएबाक अवसरि लगैत छैक, महालक्ष्मी आ लूटन झा संगे जाइत छथि आ गंगाक

जलमे रहस्यमय डुबकी लगबैत छथि। गंगास्नान करबाक समय महालक्ष्मी जेना कोनो बंद पिंजरासं खुगि, उड़बाक प्रयत्न करैत छथि। संगे-संग एक-दोसराकें पकड़ि गंगामे डुबकी लगबैत अपन कुंठित जीवनक अनुपम अवसरिमे सेहो डुबकी लगबए लगैत छथि। महालक्ष्मी कहैत छथि- "बाउ, हमरा पानिसं बड़ डर होइए। अहांकें हम पकड़िये क' नहायब. ..। हमरा लेल तं अहीं सभ किछु...।"[7] दूइये मासक बाद महालक्ष्मी बड़ बीमार पड़ि गेलीह आ संसारसं चलि गेलीह। मुदा एहि ठाम कथा कोनो निष्कर्ष पर नहि पहुंचल, से हमरा कथाकारक कमी दृष्टिगोचर होइत अछि। जं एहि ठाम मृत्यु छलैक तखन फेर कोन काज रहैक गंगास्नान करबाक। एहि ठाम (अंतमे) ठोस निर्णयक आवश्यकता छलैए, जाहिसं समाजमे नीक संदेश जएतैक। हमरा मोन पड़ैए 'निकती' समीक्षा संग्रह, जाहिमे समीक्षक रमेश लिखै छथि- "कथाक उद्देश्य मात्र विकृतिक वा संस्कृतिक चित्रण टा नहि होइत अछि। चित्रणकें समाधान-संकेतक चासनीसं बोरबाक कला चाही। जाहि कथाकें कथाकार जनमानस संग जोड़ि पबैत अछि, से कथा चिरायु भ' पबैत अछि।"[8] ओना कथाक प्रारंभिक खंड आश्वस्ति दैत छैक। सभ तरहें सुंदर परिपाक कहल जा सकैत अछि।

एहि कथा संग्रहक एकटा पुनः यथार्थ कथा सोझां आयल अछि ओ अछि आगि आ पाथर। कथाक केन्द्रमे कथा नायिका इन्द्रबाला, जे एकटा सैनिकक विधवा पत्नी छथि। ओ ओही दिनसं भारत सरकारक देल आवासमे रहैत छलीह। पतिक वीरगति प्राप्तिक सूचनासं बेसी विचलित नहि होइत छथि, तखन एहि समाजक किछु लोकक नजरिमे ओ भ' जाइत छथि चरित्रहीन। मुदा एहि समाजमे त्रिभुवननाथ सनक निर्लज्ज-देहलोलुप लोक सेहो रहैत अछि जे मनुक्खक रूपमे एकटा नरपिशाच अछि। जे इन्द्रबालाक जिनगीमे बेर-बेर बिहाड़ि आनि दैत छनि, ताहि लेल ओ एकटा घरमे खिड़की बन्न क' रहय लगैत छथि। कथाक अन्त होइत-होइत इन्द्रबाला ओहि देहलोलुपकें चेतौनी देबए चाहै छथिन, जे अपन चालि सुधारि लौथु, नहि तं बड़का गर्दमिसान भ' जएतैक। कथाकार कतेक नीक ढंगे एहि कथामे समाजक वैधव्य जीवनक बीच स्त्रीक दैनीय हालतिकें देखार करैत ओकर जिनगीमे उठै वला उत्सुकता-बिहाड़िकें सोझा अनलनि अछि। समाजमे एहनो कुलशोधन त्रिभुवननाथ सन लोक जे समाजक लेल एकटा नरपिशाच थिक, जे कतेको जीवनमे उथल-पुथल आनि, असमंजसक खाधि दिस ठेलबाक प्रयास करैत अछि। कथामे एकटा कमी जे अभरल अछि ओ अछि - इन्द्रबालाक काम-आवेगक उत्फाल होयब जकर कारण छथि त्रिभुवननाथ। मुदा त्रिभुवननाथसं घृणा भाव संग काम-आवेगक जन्म, अर्थात एक संगे काम-आवेगो आ धृणा, दुनू कोना संभव? दोसर दिस शर्मा जीक प्रति अनुरागक सेहो दृश्य आयल अछि। जं काम-आवेग उत्फाल भेलै जे यथार्थो छियेक तं तकर सविधि ओकर कल्याणार्थ कोनो ठोस विकल्प देब सेहो आवश्यक छलैए हमरा बुझने। तखन हमरा इहो लगैए जे मानवीय आकर्षण-विकर्षणक मध्य कथा नायिका मैथिल संस्कृतिक आदर्शकें चुनै छथि। मानवीय दैहिक आवेग तं होइत छनि परंच मिथिलाक संस्कृतिक जाहि संस्कारसं ओ सुसज्जित छथि, ताहि कारणें ओ पराभूत नहि होइत छथि। चेतौनीपूर्ण सन्देश बिलहत एकटा नीक कथा अछि आगि आ पाथर।

समीक्ष्य पुस्तक 'बीच वैतरणीमे' केर समस्त कथाक पर्यावलोचनसं यैह बुझाइत अछि जे एहि कथा सभक स्वरूप सार्वभौम अछि आ से सार्वभौम समस्या मैथिल आंखिएं उपस्थापित भेल अछि। कथ्यक गप हो, शिल्प ओ शैलीक बात हो, भाषाक विचार हो, शब्द सौन्दर्यक बात हो, पात्रक भाषाक सहजीकरणक गप हो, कथाक परिवेशक बात हो, सभ दृष्टिएं उत्तम अछि। कथाक कथ्यक अनुकूले कथामे ततेक वास्तविक परिवेशक निर्माण भेल अछि जकरा पढ़बा काल ओ दृश्य मानस पटलपर चलैत देखाइत रहैत छैक। बात ग्रामीण परिवेशक हो वा शहरी परिवेशक, सभक अपन-अपन अलग महत्त्व होइत छैक, से कथा पढ़ि सिद्ध भ' सकैत अछि। कथाकार अपन दूरदर्शिताक नजरिसं, अपन कलाकारीक बलसं कथाक सुस्वादु पाक बना तेना परसलनि अछि, जकरा अंत कएने नहि छोड़ल जा सकैए। कथामे पात्रक समुचित प्रयोग भेल अछि। एकटा कथा अछि नटुआक नांच जकर पात्र अछि पतिया, जे पतिया पात्र कोनो निम्नवर्गीय सवर्ण समाजसं अछि। आओर परिस्थितिक अनुकूले पात्रक चयन तेना कएल गेल अछि, जे चमत्कृत होइत पहिल बेर हमरा एहेन पात्र अभरल अछि। कतहुं-कतहुं लागत जे ई सामाजिक मर्यादाक भीतर अनुशासित नहि छैक, मुदा तकरो कथाकार सुंदर ढंगे यथार्थकें सामने अनबाक प्रयास कएलनि अछि। अधिसंख्य एहेन सन कथा मैथिली साहित्यमे कम आयल छैक, जकरा हिम्मतसं अनलनि अछि, जे आगुक पीढ़ी लेल हिम्मतक काज क' सकत। कथामे सन्देश निश्चित रूपसं छहिये आ कथा सभ कतहुं हुबघट्टु सेहो नहि छैक, सभ छैक अपना हिसाबे अपन सामर्थ्यपर ठाढ़। वर्तनीक दृष्टिकोणे सेहो प्रायः कतहुं गलती नहि देखाइत अछि आओर वाक्य विन्यास सेहो उत्तम। सभ तरहें ई कथा संग्रह 'बीच वैतरणीमे' पूर्ण-सम्पूर्ण ओ विशिष्ट अछि। ■

सन्दर्भ

1. बीच वैतरणीमे : ले. ललितेश मिश्र, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, पृष्ठ सं. - 7
2. बीच वैतरणीमे : ले. ललितेश मिश्र - किसुन संकल्प लोक, सुपौल - पृष्ठ सं. - 68, 69
3. बीच वैतरणीमे : ले. ललितेश मिश्र, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, पृष्ठ सं. 56
4. बीच वैतरणीमे : ले. ललितेश मिश्र, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, पृष्ठ सं. 137
5. बीच वैतरणीमे : ले. ललितेश मिश्र, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, पृष्ठ सं. 133
6. बीच वैतरणीमे : ले. ललितेश मिश्र, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, पृष्ठ सं. 19
7. बीच वैतरणीमे : ले. ललितेश मिश्र, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, पृष्ठ सं. 109
8. निकती : ले. रमेश, नवारंभ प्रकाशन पटना/ मधुबनी, पृष्ठ सं. 63

 ISSN : 2582-1660, वर्ष : 2, अंक : 2

फेरो कुहूकल कोइली

✍ डॉ. नरेश कुमार विकल

समीक्ष्य पुस्तक 'कोइली' डॉ. उमाशंकर चौधरीक सद्यः प्रकाशित कथा-संग्रह अछि। ओना 'कोइली' शीर्षक सं काव्य रचना क' स्वनामधन्य कवि चन्द्रभानु सिंह मैथिली साहित्य मे अजर-अमर भ' गेल अछि आ हुनक ख्याति एहि कविताक माध्यमे बेसी भेल छनि। कोइली पर मैथिली भाषा-साहित्य मे कम लिखल गेल, मुदा कथाक रूप मे दृष्टि-पथ पर कम अबैत अछि। हं, काव्य-रचना कोइली डॉ. नरेश कुमार विकल सेहो लिखने छथि, जे 'मिथिला मिहिर' मे प्रकाशित भेल छनि।

खिस्सा-पिहानीक विकसित रूप कथा मानल जाइत अछि। डॉ. उमा शंकर चौधरी वृत्तियें चिकित्सक छथि। स्वाभाविक अछि किसिम-किसिम कें, विभिन्न जाति, वर्ग, सम्प्रदाय सं, विभिन्न परिस्थितिक विभिन्न गाम सं कारिनी सभक अबरजात रहिते अछि, ओकर प्रवृति, ओकर प्रकृति, ओकर बोली, ओकर भाषा, टोन, स्थिति-परिस्थिति, सर-समस्या, आहार-व्यवहार, चालि-चलन, वेश-भूषा, रहन-सहन, संस्कार-लोक संस्कृति सं हिनका प्रत्यक्ष होम' पड़ैत छनि, ओकरे अनुरूप अपना कें बनाबय, बनऽ पड़ैत छनि।

हृदय सं सरस, सरल साहित्यकार ओकर मनोदशा कें अपन मनक बखारी मे अंटबैत रहैत छथि। पलखति भेटला संता मन मे औनाइल ओहि हृदयस्पर्शित घटना सभकें चुनि क', बीछि क', बेरा क' सगोर करैत छथि आ तकरे अपन स्पष्ट अभिव्यक्ति दैत छथि, लिपिबद्ध करैत छथि।

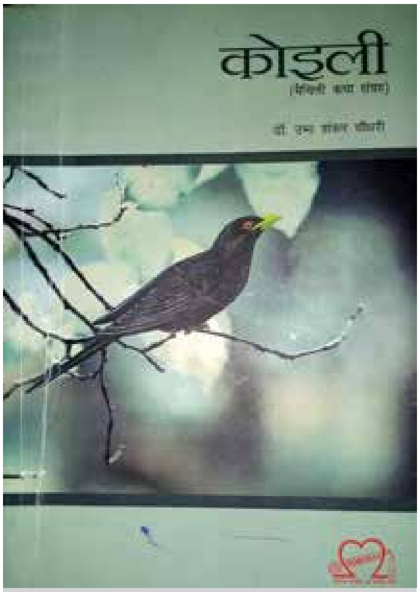

कोइली

रचनाकार	:	डॉ. उमाशंकर चौधरी
प्रकाशक	:	मिथिलांगन, नई दिल्ली
वर्ष	:	2018
मूल्य	:	₹ 150
पृष्ठ	:	112
विधा	:	कथा संग्रह

चौधरी जी वेश-भूषा, बाजब-भूकब, आहार-व्यवहार सं खांटी मैथिलक बोध करबैत रहलाह अछि आ कतेको बरख सं मैथिली भाषा-साहित्यक पाठकवृन्द कें विभिन्न पत्र-पत्रिका माध्यमे अपन रचना सं अवगत सेहो करबैत रहलाह अछि। बहुतो ठाम अपन भोगल यथार्थ सं पाठक कें परिचितो करबैत रहलाह अछि।

डॉ. चौधरी समर्थ आ सचेष्ट कथाकार छथि। अपन कथा सभ मे सदति मनुष्य, समाज, परिवार, ओकर समस्या, ओकर चुनौती आदि के उपस्थापित करैत रहलाह अछि। हिनक लेखकीय सरोकार अपन व्यापक संदर्भ मे जीवनक व्याख्या करैत अछि। ई बाह्य जीवनक जटिल यथार्थ कें जतेक सघनता सं व्यक्त करैत छथि, ओतबे सघनता सं मानवीय मनोभाव सभ कें सेहो संवेदनशीलताक संग आलोकित करैत रहैत छथि। हिनक कथा सभक विषय-वस्तु हमरा सभक लग पास घुरिआइत, घटैत, फड़ैत-फुलाइत ग्राम, संस्कृति, पारंपरिक जीवन-मूल्य रहलनि, स्खलित होइत सामाजिक सरोकार रहलनि, तिरोहित होइत शिष्टता रहलनि। ओना हिनका सामाजिक विषमता, विद्रूपता, उच्छृंखलता कहियो ने अरघलनि। तें हिनक कथा मे लाइ-लपटाइ, गूढ़ी-कपटी, ताम-झाम नहि रहैत छनि। सोझ-साझ ठांहि-पठांहि कहबाक प्रबल समर्थक रहलाह अछि।

हिनक कथा पढ़ला संत ई प्रतीत होइत अछि जे हिनक कथा पर, हिनक शैली पर, कथाक बिम्ब पर ककरो प्रभाव नहि छनि। एहि संग्रह मे कुल 14टा कथा संग्रहीत अछि।

पहिल कथा 'मैथिल आ मैथिलीक संयोग' प्रवासी मैथिलक अपन भाषाक प्रतियें अनुराग सं सम्पृक्त मसूरीक प्राकृतिक हृदयक दिग्दर्शन करबैत अपन भाषा, संस्कृति आ संस्कार कें समर्पित बुझना जाइछ।

'फरिछौट' कथा मे आजुक अपसंस्कृतिक अनुसरण कयनिहार एक गोट दम्पतिक मांझ अहं, स्वत्व आ दंभक स्वाभाविक उपस्थिति भेल अछि। कृष्ण चन्द्र बाबू आ मधुरिमा मांझ

रूसा-फूलीक फरिघौट कथाकार द्वारा कोना कयल गेल अछि, तकर रोचक वर्णन अछि।

'कोइली' शीर्षक कथामे कथाकार आन-आन साहित्यकार सं फराक भूमिकाक निर्वहन कयलनि अछि। रहरहां देखल जाइछ जें बहुलांश साहित्यकार अपन साहित्य मे मात्र समस्याक उपस्थापन करैत छथि, ओकर निराकरण, निवारण पाठक मोन, पाठकक भरोसे छोड़ि दैत छथि। मुदा, एक गोट साहित्यकारक बौद्धिक क्षमता तखने परेखल जाइछ, जखन ओ तकर समाधानो निरूपित करय, निराकरणोक बाट प्रशस्त करय। ताहि मे ई कथाकार धन्यवादक पात्र थिकाह जे समस्याक समाधान, निराकरण आय-उपाय सुझबैत रहैत छथि।

'कोइली' कथा मे एहि देश-समाजक प्रमुख समस्या पति-पत्नीक रंग-वर्ण, शिक्षा-सौंदर्यक विवाद दाम्पत्य जीवन मे माहुर घोरि दैत अछि, सुख-शांति अलोपित भ' जाइत अछि। दुहूक जिनगीक नारकीय भ' जाइछ। कारण खुटखुट अपन कनियां शिखा कें रमेश कोइली कहि क' संबोधित करैत अछि, खौंझबैत अछि। खिसिअबैत अछि। मुदा, शिखा बौक-बताह, गोंग-बहीर बनि मात्र नोर चुअबैत अछि, उपेक्षाक दंशसहैव अछि, औनाइत अछि, कछमछाइत अछि, अहुरिया कटैत अछि आ एहि आगिक धधरा मे घीउ ढारबाक प्रयास करैत अछि 'ओ' अर्थात् रमेशक ऑफिसक गौर- वर्णा राधिका। एकरा सं सभटा पाइ-कौड़ी झोहि लैत अछि, झीटि लैत अछि आ रमेश कें बना दैत अछि खखड़ी।

एहि कथा मे एक गोट अपूर्व विशिष्टता दृष्टिगोचर होइछ, जे समाज मे पुतोहु कें सासुक विपक्ष मे आ सासुकें पुतोहुक विपक्ष मे ठाढ़ कयल जाइछ, मुदा शिखाक सासु ओकरे पक्ष मे आबि समाजक एक गोट मिथक कें भंग करैत अछि। बेटे कें फज्झति करैत अछि। दुहूक जिनगी मे सं ओहि स्त्री कें निष्कासित क' सुखमय जीवन बनबैत अछि।

एहि संग्रह कथा सभमे यत्र-तत्र सुधारवादी आ उदारमना चरित्र मे जीवनक धड़कन कें सुनबाक सार्थक प्रयास कयल गेल अछि। एहि मे कतेको पात्रक चरित्र सामान्य होइतहुं असाधारण बुझना जाइछ।

कोइली मे सतर्कताक पर्याप्त निर्वहन कयल गेल अछि। वर्तमान तंत्र मे अपन अस्तित्वक लेल संघर्षशील मनुष्यक बिम्ब अछि जे बहुतोरास नीक-अधलाहक मध्य उचित आ नीकक लड़ाई लड़ि रहल अछि। अन्य कथा- लोअर बर्थ, अपर बर्थ, दृगशूल, छिरदानी, ढकपन, शृंगार स्वरूप इडली, ताड़क गाछ खजूरक गाछ, सीतामान, कगुआक हिलकोर, अष्टावक्र आ यैऽ यैऽ यैऽ अछि।

विविध रागात्मकता, विविधता सं सम्पुट ई सभटा कथा तत्कालीन समाजक प्रतिबिम्ब बुझना जाइछ। एकर शिल्प रचना, भाषा, पात्रक गढ़न, परिपक्व अभिव्यक्ति बुझना जाइछ। ■

(पृष्ठ 24 केर शेष)

आम जीवनक सहज कथा...

सुधा सभ तरहे न्यायक लेल प्रयासरत रहैत अछि। एहि मध्य ओ समाजमे पसरल राजनीतिक दबंगता, कुरीति, भ्रष्टाचार, शोषण सभसं परिचित होइत अछि, अंतमे न्यायालयक दरबज्जा खटखटबैत अछि आ ओहिठाम अपन अर्जी दैत अछि। इमहर बच्चा सभकें शिक्षादान करैत छथि, एकटा विद्यालय खोलबाक आकांक्षा सेहो मोनमे रहैत छनि जे अपन पति आ ससुरक मदतिसं पूर्ण होइत अछि, ई एकटा सामाजिक आ पारिवारिक बदलाव दिस धिआन आकृष्ट करबा रहल अछि जे जहन एकटा पढ़ल-लिखल स्त्री किछु नीक डेग उठबैत छथि तं हुनका मदति भेटक चाही। विद्यालयमे नि:शुल्क शिक्षा व्यवस्था आ मेधावी विद्यार्थी सभकें प्राथमिकता सेहो शिक्षा व्यवस्थामे बदलाव दिस इशारा क' रहल अछि।

समय बीतल, सुधाकें न्यायालयसं डिग्री भेटि गेलैक, आब एकटा सरकारी इसकुलक शिक्षिका सेहो भ' गेलीह, जाहिठाम गेलीह कायाकल्प क' देलीह। सरकारी स्कूलक शिक्षा प्रणालीमे सार्थक परिवर्तन भेल। एहि काजमे राधा सेहो सुधाक संग आबि अपना दिस सं आवश्यक परिवर्तन केलीह।

एहि उपन्यासमे लेखक देखाओलनि अछि जं अहांक समाजमे कोनो परिवर्तनक बेगरता अछि ओहिक लेल जं कोनो एक टा डेग आगां बढ़त तं संघर्षक बलसं हुनका देर-सबेर सफलता अबस्स भेटतनि। उपन्यास हमरा सभहक सोझामे कतेको प्रश्न ठाढ़ करैत अछि, जकर उत्तर हमरा आ अहांकें देमए परत।

कमी बेसी आ नीक- अधलाह एकटा फराक वस्तु थिक। ई हिनक महान कृति नहि छनि, मुदा लालबिहारी आ परमेश्वरक संगहि राधा आओर सुधाक माध्यमसं आम लोकक गप आ धारणाकें सोझा रखबामे सफल भेलथि।

कोनो उपन्यासमे लेखक जखन अपन पात्रक जीवनक समस्याकें पृष्ठभूमि सं जोड़िक पाठकक सोझामे एकटा प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करबामे सक्षम होइत छथि तखन ओ उपन्यास आ लेखनी दुनू सफल मानल जएबाक चाही ताहि दृष्टिकोणसं लेखक एकटा आम पाठकक लेल सोझराएल उपन्यास लिखबामे सफल भेल छथि। ■

ISSN : 2582-1660, वर्ष : 2, अंक : 2

मैथिलीमे महाकाव्य विधाक पुनर्जीवन

✍ चन्द्रेश

श्री बुद्धिनाथ झा विरचित मैथिलीक महान ग्रंथ 'ॐ महाभारत' तीन खण्ड। हम पहिने स्पष्ट क' दी जे मैथिलीमे महाभारत लिखबाक प्रयास कविवर ईशनाथ झा, उपेन्द्र नाथ झा व्यास आदि कयलनि। मुदा, दुनूक अपूर्ण रहल। एकटा कें द्रौपदीक विवाह-प्रसंग धरि (1887 ई. मे), तं दोसरक दू खण्ड अर्थात् 1994 ई. मे आदि पर्व आ दोसर खण्ड 2000 ई. मे सभा आ वनपर्व प्रकाशित भेल। श्री बुद्धिनाथ झा जीक जांतिक' वा लागि-भीड़िक' कहीं तं अथक-प्रयासबलें 2019 ई. मे सम्पूर्ण महाभारत कें तीन खण्ड मे प्रकाशित क' अपन संकल्पित योजनाकें पूर्ण कयलनि। ई पोथी मैथिली साहित्यक भण्डारकें श्रीवृद्धि, तं करिते अछि जे अनुपम धरोहर थिक। एकटा बात हम पहिने स्पष्ट क' दी जे बुद्धिनाथ झा अपन कर्मठता बलें केहनो ठानल काजकें पूर्ण क' लैत छथि। ओ मंचक कवि छथि आ मैथिली कविमंचक सफलतम उद्घोषक। हिनक संचालकत्वमे कवि मंच स्वत: मर्यादित भ' जाइत अछि से गछबामे कतहु कोनो असौकर्य नहि अछि। खासक' मंच पर उपस्थित कविलोकनि परिचय काव्यात्मक रूपमे देब हिनका आशुकविक रूप मे उपस्थापित करैत अछि। ताहि पर 'ॐ महाभारत' महाकाव्य ग्रंथ लिखि ओ महाकविक पद पर स्वत: आसीन भ' गेल छथि।

कहल जाइत अछि जे जाहि घर मे महाभारत होअय, पाठ होमय ताहि घर मे झगड़ा होयबे करय से जनश्रुति अछि। अहां मानी वा नहि, विज्ञानक छात्र एहि

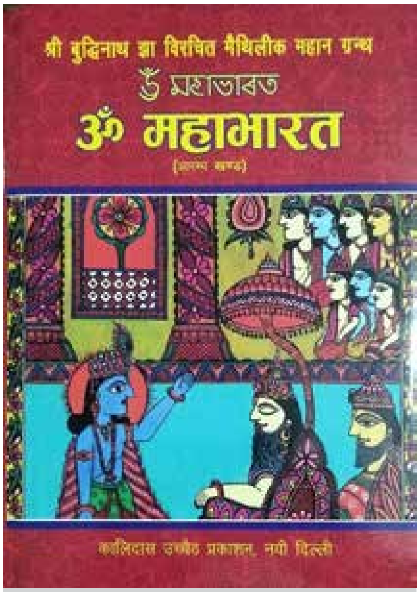

ॐ महाभारत

रचनाकार	:	बुद्धिनाथ झा
प्रकाशक	:	कालिदास उच्चैठ प्रकाशन, दिल्ली
वर्ष	:	2019
मूल्य	:	₹ 2495 (तीन भाग मिलाक')
पृष्ठ	:	खण्ड-1 : 578 खण्ड-2 : 508 खण्ड-3 : 490
विधा	:	महाकाव्य

बातकें प्राय: मानितो नहि अछि आ अंध विश्वासक खिल्ली उड़बैत अछि। बुद्धिनाथ झा जी स्वयं विज्ञानक छात्र रहथि तें ओ लिखलनि। ई लिखब हुनका बेस यशस्वी बना प्रतिष्ठा दियौलकनि।

महाभारतक सर्वप्रथम रचना देवगुरु बृहस्पतिक पौत्र पराशर मुनि आ मत्सगंधाक पुत्र कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास कयलनि। जनतब जे मुनि शक्तिक संस्कृत मे उक्ति अछि- 'यदि हास्ति तदन्यत्र यन्ने हास्ति न तत् क्वचित'। स्पष्ट अछि जे एहि ग्रंथ मे नहि अछि से अन्य ग्रंथ मे नहि भेटत। अनगिनत उपदेशसं भरल-पुरल ई ग्रंथ अनमोल रत्नक खजाना थिक। श्रीमद्भगवद्गीता सेहो एही रत्नागारक जाज्वल्यमान रत्न थक। गीताक संबंधमे द्रष्टव्य थिक- 'अविभक्तं विभक्तेषु य: पश्यति स पश्यति।'

महाभारत मे धर्मक गति गहनतम अछि। तें स्पष्ट अछि, महाभारत- 'अविरोधी तु यो धर्म: स धर्म: परकीर्तित:'। आत्मरसक समीकरणे समरसता थिक आ समरसता संस्कृति अछि। 'महाभारत' - 'नहि मानुषात्श्रेष्ठतरं हि किंचित्' अर्थात् सृष्टिक दुर्लभतम कृति मनुक्ख थिक।

जे किछु, संस्कृत महाभारत मे सार्वभौमिकता पर जोर दैत अछि जखन कि लोकमहाभारतमे स्थानीयता पर जे नवीन अन्तर्दृष्टिकें उभारैत अछि, तें वर्णव्यवस्था आ साम्राज्यविरोधी बुझाइत अछि। महाभारत कें पांचम वेद सेहो कहल जाइत अछि। एहि ग्रंथक परंपरा लिखित आ वाचिक दुनू रूप मे रहल अछि। एकर परंपरा आरंभेसं बहुवचनात्मक रहल अछि। जं एकवचनात्मक रहितय तं विभिन्न रूपक नहि बनितय। रामायण आ महाभारत दुनू आख्यायनपरक रूपमे सुप्रतिष्ठित अछि। मुदा, महाभारत एकटा संहिता थिक। वाल्मीकि रामायण संहिता

चंद्रेश मैथिली साहित्यक चर्चित समीक्षक छथि।
संपर्क : *मनमती कुटीर, राजपूत कॉलोनी, मौलागंज, दरभंगा-846004 (बिहार),* ***मो.*** *9430640883*

नहि थिक। कारण, विभिन्न स्रोतसं जमा कयल सामग्रीकें जं एकठाम संग्रहीत क' एकट्ठा क' देल जाय तं एहि अर्थमे ई संग्रहात्मक ग्रंथ संहिता थिक।

भारतीय परंपरा मे ई उपजीव्य महाकाव्य थिक। महाभारत परंपरा शास्त्रीय तं अछिए, लोकपरंपरा मे सेहो अछि। एकटा बात स्पष्ट क' दी जे इस्लामिक परंपरा मे रामायण ओ महाभारत नहि अछि, मुदा जैन, बुद्ध, अर्थात् बेसिए परंपरामे मान्य अछि।

विभिन्न क्षेत्र-विशेषमे महाभारत आयल अछि। पंडवानी गाबयवला सेहो महाभारतक कथाक उपयोग करैत अछि। मेवाड़क बीच प्रचलित महाभारत 'पंडूनक कड़ा' (1665) अछि। गुजरात मे 'भीलक भारथ', राजस्थानमे 'राजस्थानी लोक महाभारत', उत्तराखण्डक आदिवासी 'पाण डव लीला' आदि अछि।

सम्पूर्ण महाभारतक संस्कृतसं अनुवाद काशी नरेशक निर्देशन मे गोपीनाथ आ मणिदेव केर अथक परिश्रमसं 50 सं बेसिये वर्षमे 19म सदी मे नवल किशोर प्रेस सं 'महाभारत दर्पण' ब्रजभाषा मे 2000 पृष्ठ सं बेसियेमे प्रकाशित भेल। एहिसं पहिने 1676 ई. मे कुलपति मिश्र जेहोण पर आधारित छल, से प्रकाशित भेल।

लोक परंपरा मे रचित महाभारतक स्थानीय गंध अछि। तें कथा-सूत्रमे सेहो अंतर अछि। जं 'हिडिम्बा' कें राक्षसिनी कहल गेल अछि तं हिमाचल प्रदेशक हिडिम्बा मंदिर जे कुल्लू राजवंशक कुलदेवी आ कालीक अवतार रूपमे छथि, से आइयो श्रद्धा-भावें पुजाइत छथि।

वर्तमान महाभारत मे सभसं विशिष्ट, अद्वितीय आ गौरवमयी चरित्र श्रीकृष्णक अछि। सम्पूर्ण महाभारतक सूत्रधार श्रीकृष्ण छथि। एकटा बात स्पष्ट क' दी जे महाभारतमे जे राजनैतिक चरित्र सभ उभरिक' आयल अछि, ताहि दृष्टिए' एतेक तं अबस्से कहल जायत जे जं राजनीति सीखबाक होअय ते बिनु महाभारतकें अध्ययन-मनन ओ चिंतन कयने से संभव नहि अछि। कही तं ई राजनीतिक-चिंतनक महासागर थिक। तें ई ग्रंथ राजनैतिक जागरूकता कें जन्म दैत अछि। एहि ग्रंथ कें 'साहित्यक'क अपेक्षा साहित्य-शास्त्रीय कहब विशेष उपयुक्त होयत। एहिमे अदम्य सौंदर्योल्लास, स्वच्छन्द प्रणयन, वैवाहिक प्रगतिशीलता, साहस, सौंदर्य आ योद्धाक बीचक स्वार्थक युद्ध आदि निहित अछि। धर्मक परीक्षाक अन्तर्गत श्रीकृष्णक चरित्र तं सहजहिं, आनो पात्र सभक चरित्र-चित्रण विकसित समय आ परिबेशगत दाबमे होइत रहल। शास्त्रीयता अथवा आध्यात्मिक तत्व कें ल'क' लोकग्राहक रूप मे ढारबाक हेतु जे संस्कार देल गेल अछि, से सांस्कृतिक जागरूकता अबस्से लोकमानसमे नव संस्कारसं संस्कारित करैत अछि।

वस्तुतः ई महाग्रंथ मनुक्खक जीवनकें सुव्यवस्थित ओ जीवन-क्रमकें क्रमबद्धता प्रदान करैत सुस्थिर रूप द' व्यक्तित्व कें सार्थकता प्रदान करैत अछि। तें एहि कृतित्वबलें महाकवि बुद्धिनाथ झा अमरत्व प्राप्त क' अपन जीवनकें सार्थकता प्रदान करैत महत्तम ऊंचाई पर आसीन क' लेल अछि।

'ॐ श्री गणेशाय नमः' सं प्रारंभ 'ॐ महाभारत'क विशिष्टता मिथिला-मैथिलक वैशिष्ट्य ओ चरित्रगत संस्कारक दृष्टिबद्धता मे अछि। एकटा कथन कतेक मार्मिक आ सटीक उक्ति मे अछि - 'रूपहि रिपु भेल द्रौपदी के, से बाजथि बाबी (आदिपर्व-3)'। ततबे नहि, स्वयं महाकवि स्पष्ट कयने छथि-

'सभक मूलमे चक्र सुदर्शन, हुनकहि हाथ चलैए (4)'।

बुद्धिनाथ झाक कवि-हृदयक उद्गारो तं एहि भाव-भूमिपरक अभिव्यक्तिमे सार्थकता प्रदान करैत अछि-

जन-जन बनब कृष्ण आ अर्जुन,
तकरे टा अछि आस
जागओ भारत, ॐ महाभारत,
तकरहि थिक प्रयास। (14)

कथारम्भ 'राजा ययाति' सं अछि। तकर बाद तं सत्य-असत्यक द्वंद्व अभरिक' युद्ध क्षेत्रमे परिणत भ' जाइत अछि। ओना, एहिमे वंशावलीक संगहि अतीतसं सीख लैत वर्तमानक दुरुक्खा पर भविष्यक चिंतन अछि। मुदा, केंद्रबिन्दु मनुक्ख थिक। भाग्य आ कर्मक वशीभूत होइतो कर्मक प्रधानता अछि।

एकटा बात स्पष्ट क' छी जे संस्कृत महाभारत मे शास्त्रीयबद्धता अछि। मुदा, बुद्धिनाथ झाक महाकाव्य 'ॐ महाभारत' जे महाकालोचित गुणसं फराक, शास्त्रीयबद्धतामे नहि होइतो लौकिकतामे अछि। ई मूलतः आ प्रकृतितः मूल महाभारतक अनुवाद सेहो नहि थिक। ई तं अनुभवसम्पन्नता मे लोकसंस्कृति कें जग-जियार करैत दृष्टिसप्पनता मे रचित भेल अछि। कही तं मिथिला-मैथिलीक अस्मिता ओ अस्तित्वपरक संघर्ष-क्षमता नेने अपन आधुनिकता आ सम्पूर्ण राष्ट्रीय चेतनाबोधक क्रममे आयल अछि। जेंकि मनुक्खक जीवनसं अन्तर्संबंध बनबैत सम्पूर्ण संसारकें जोड़बाक क्रमवद्धता मे अछि, तें एहि महाकाव्यक प्रणयनसं अबस्से एहि गौरवग्रंथक महत्ता जीवन साहित्य थिक आ साहित्ये जीवन थिक ताहिमे सन्निहित भेल अछि। वस्तुतः महान साहित्य सं जीवनबोधक बनि जीवन-संघर्षसं जूझैत जीवनक दुरुक्खा पर ठाढ़ भ' अतीत आ वर्तमानकें गुनैत-घुनैत स्वर्णिम भविष्यक पाथेय बनैत अछि। जेंकि कोनो साहित्यकार अपना स्तर पर अपना ढंगे सांस्कृतिक विराट प्रतिभामे योग दैत अछि। से एहि ग्रंथक प्रणेता समष्टि भावना मे लोकजीवनक सार्थकता कें महत्ता प्रदान

(शेष पृष्ठ 38 पर)

मैथिली-मिथिलाक विभूति सभक आह्वान

✍ हितनाथ झा

दसो दिशा कें पालन कयनिहार देवता भेलाह दिक्पाल। जेना पूब दिशाकें इन्द्र, दक्षिण दिशाकें यम, उत्तर दिशाकें कुबेर, पश्चिम दिशाकें वरुण आदि आनो दिशाक आन-आन देवता, तहिना देश - समाजकें दिशा-निर्देशन कयनिहार, अन्हारसं इजोत दिस अननिहार, सभ कालमे, सभ क्षेत्रमे, विकासक मार्ग प्रशस्त कयनिहारक अवतरण होइत आयल अछि आ आगुओ होइत रहत।

मिथिलामे सेहो, हजारो वर्षसं महापुरुष होइत आबि रहलाह अछि, एखनो छथि, आगुओ रहताह। मैथिली साहित्यमे सेहो, जाहिपर हमरालोकनिकें गर्व अछि, आन-आन भाषाक समकक्ष वा बहुतो भाषासं विकसित रूपमे अपनाकें पाबि जे हमरालोकनि गर्वक अनुभव क' रहल छी, ओहि हेतु सेवा, त्याग, तपस्या, साधना कयनिहारक जं संस्मरण नहिं करी, हुनकालोकनिक उल्लेखनीय कृतिक वर्णन नहिं करी, हुनकर साधनाकें जं समाजक सामने प्रस्तुत नहिं करी, हुनकालोकनिक व्यक्तित्व, कृतित्वक चर्चा नहिं करी, तं हमरलोकनिसं पैघ कृतघ्न के?

जे हमरालोकनिक रक्षा करैत छथि, ओहि देवी देवताकें तं नित्य पूजैत छी, किन्तु जे ज्ञान, विज्ञान, भाषा- साहित्यक अमूल्य धरोहर परसैत छथि, तनिकर विषयमे लिखब बहुतो एकरा हीन बुझैत छथि। दरबार -कलाक सिद्धहस्त मानैत छथि। एकरा स्पष्ट करैत प्रोफेसर भीमनाथ झा लिखैत छथि -

''हमरा कने लागल। फेर विचारल - आखिर हम हिनका लोकनिक प्रशस्तिमे लिखलहुं कियैक? कियैक तं एहिमे अपन-अपन क्षेत्रमे (बेसी तं साहित्यके क्षेत्रमे) उल्लेखनीय योगदान छनि, तपस्या छनि, सेवा छनि, त्याग छनि। जे एतेक महान अवदानसं हमर साहित्य आ समाजकें गौरवान्वित कयलनि, की से समाज हुनक अभ्यर्थनो करबामे अपन हेठी मानय? की तनिक प्रशस्तिमे की दू टा शब्द-पुष्पो अर्पित करब अनसोहांत थिक!

हमरा तं से नहिं लगैत अछि। हम आर दैए की सकैत छियैक अपन साधककें श्रद्धा छोड़िकें? श्रद्धा देबाकें जं केओ अश्रद्ध मानथि, तं मानथु।'' (पृष्ठ 123-24)।

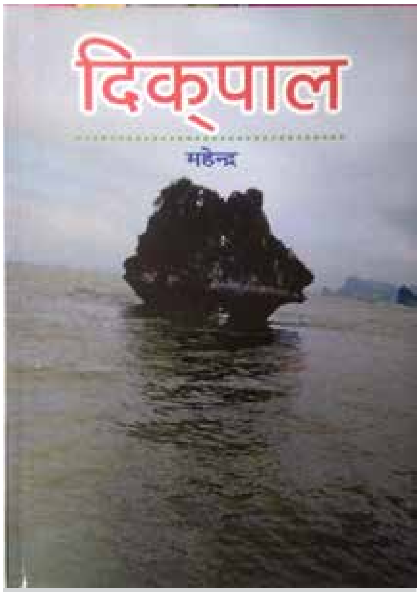

दिक्पाल

रचनाकार	:	महेन्द्र
प्रकाशक	:	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
वर्ष	:	2019
मूल्य	:	₹ 250/-
पृष्ठ	:	152
विधा	:	संस्मरण

से संस्मरणक संग व्यक्तित्वक चरित्र-चित्रण, समाजक प्रति निष्ठा, साहित्यक प्रति समर्पण आ अवदान, जं साहित्यकारे द्वारा वर्णित हो जे साहित्यमे सेहो एक सशक्त विधा अछि, तं उक्त व्यक्तिक प्रसंग नीक जकां जानल जा सकैत अछि। मैथिली साहित्यमे सेहो सौ वर्ष ऊपरेसं संस्मरण विधा महत्वपूर्ण अछि। 'हमर जेल यात्रा' पंडित छेदी झा द्विजवर, 'किछु देखल, किछु सुनल', गिरीन्द्र मोहन मिश्रक संस्मरण, किछु हद तक आत्मकेन्द्रित संस्मरण अछि, किन्तु तत्कालीन समाज आ पहिलुक व्यक्ति/समाजक वर्णन तं अछिये। 'काल सारथी' पंडित बलदेव मिश्रक संस्मरणक अमूल्य निधि अछि। प्रो. भीमनाथ झाक संस्मरण साहित्य सभसं समृद्ध आ फराक अछि, 'मन आंगनमे ठाढ़' केर अतिरिक्त 'विविधा' आ 'काल-पात्र' मे सेहो संकलित अछि। स्मृति यात्राक एकान्तमे (कीर्ति नारायण मिश्र), तुम चिर सारथि (तारानंद वियोगी), स्मरणक संग (विभूति आनन्द), ओ लोकनि (पंचानन मिश्र), अधरतियाक चान (गंगानाथ गंगेश), दिक्पाल (प्रो. महेंद्र), भाइ साहेब माने राजमोहन झा (गौरीनाथ) आदि।

प्रोफेसर डॉक्टर महेन्द्र मैथिली जगतक चिर-परिचित यशस्वी नाम छथि। कविता, गीत, कथा, संस्मरण, संस्मरणात्मक-समीक्षा, सम्पादन, अनुवाद कलामे निष्णात। लिखबाक, कहबाक आ गयबाक कला विलक्षण। हिनकर पहिने 'मेटायल पतापर अबैत चिट्ठी' आयल छलनि, एहि वर्ष 'दिक्पाल' (संस्मरण) अयलनि अछि। दिक्पाल एक एहन पोथी थिक, जे मात्र उल्लखित व्यक्तित्वक

संस्मरण टा नहिं, इतिहास, भूगोलक संग सम्पूर्ण तात्कालिक गतिविधिक लेखा-जोखा, व्यक्तित्वक सटीक चित्रण, कहबाक शैली एहन जे संस्मरणीय व्यक्तिक एक टा कविता उठा, हुनकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व/कृतित्व सामनेमे आनि दैत अछि, आ हुनकर कृतिक संग व्यक्तित्व अहांक मन मस्तिष्कमे नाचय लागत, लागत जे ई सामनेक बात थिक, हुनकहु विषयमे, जिनका अहां बहुत दिनसं चिन्हैत छियनि, पढ़ैत छियनि, सुनैत छियनि। एतय एक-दू मात्र उदाहरण, तखन बादमे विस्तारसं।

"बाबूसाहेब चौधरी भाषणक हेतु उठलाह, माने मैथिली आन्दोलनक झण्डा उठि गेल। चौधरीजी शनैः शनैः माइक दिस बढलाह, माने कुहेसक अभिनेता बढ़ि गेल, चौधरीजीक भाषण गति पकड़लक, माने बीतल आन्दोलनक गतिविधिक तमाम शब्द ओ पगध्वनि अनुगुंजित भ' उठल - भाइ लोकनि जाधरि हमरा हमर भाषा मुंह दुसैत रहत ता धरि हम समर्थ नहिं भ' सकैत छी।" (पृष्ठ31) की जे लोकनि चौधरीजीक विषयमे जनैत छी, देखने छियनि, सुनने छियनि, हुनका चौधरी जी सामनेमे ठाढ़ नहिं लगैत छथि!

1964 क सहरसाक विद्यापति पर्वक अवसर आ अमरजीक उपस्थितिक वर्णन एना केने छथि, राति भरि चलल कवि सम्मेलनमे हरिमोहन बाबूक 'ढाला झा', मधुपजीक 'घसल अठन्नी', अमरजीक 'युगचक्र', मायानंद मिश्रक 'नभ आंगनमे पवनक रथ पर', किसुनजीक 'इज्जति कोन पदार्थ', आ रवीन्द्र नाथ ठाकुरक 'चलू चलू बहिना', आदि सभ समुपस्थित श्रोताकें सभ रसक स्वादसं आप्यायित करैत रहलैक। एहि सत्रमे अमरजी 'मैन ऑफ द मैच' भेल रहथि, से ओहिना मोन अछि। (पृष्ठ 49)

से, महेन्द्रजी स्वयं दिक्पालक काज कयलनि अछि। संस्मरणमे सभसं पैघ खतरा होइत छैक, ओहि व्यक्तित्वक बहाने स्वयंकें महिमामंडित करब। एहिसं ई कोसो दूर छथि आ धोखोमे एकरा सटय नहिं देलनि अछि, एहिसं हिनकर चरित्र, उदारवादी व्यक्तित्व, विनम्रता आ विद्वताक परिचय सहजहिं भेटि जाइत अछि।

दिक्पालमे जाहि साहित्यकारकें वा हुनक कोनो पुस्तक उठा कोनो एक कविता/भाषण या ओकर अंशकें विस्तारसं या क्षेपक रूपें प्रस्तुत कैल गेल अछि ओ मधुपजीक संस्मरण अछि 'दूध बेचनीक थिक' आधार मानि लबान्न, घसल अठन्नी, कोरथुक यात्रा, कवि सम्मेलन, देवकांतजी चर्च ढंग पूर्वक कैल गेल अछि। ई लेख मधुपजी पर केन्द्रित पुस्तक 'अमर कीर्ति कवि तोर' मे छपल छनि आ एही लेखसं एहि विधामे प्रवेश कयलनि।

दिक्पाल एहन पोथी थिक, जे मात्र उल्लखित व्यक्तित्वक संस्मरण टा नहिं, इतिहास, भूगोलक संग सम्पूर्ण तात्कालिक गतिविधिक लेखा-जोखा, व्यक्तित्वक सटीक चित्रण, कहबाक शैली एहन जे संस्मरणीय व्यक्तिक एक टा कविता उठा, हुनकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व/कृतित्व सामनेमे आनि दैत अछि, आ हुनकर कृतिक संग व्यक्तित्व अहांक मन मस्तिष्कमे नाचय लागत।

प्रोफेसर हरिमोहन झाक भेंट 'लिय' फलकें सुफल करू' आ मायानन्द मिश्रक जवाब, प्रोफेसर हरिमोहन बाबुक पत्नीक मृदुल हंसी सभ बहुत सुंदर ढंगसं प्रस्तुत अछि।

'मुट्ठी-मुट्ठी आखर' मे सुमनजीक निधनक खबरि सुनि सहरसा कोना शोकाकुल भेल तकर विवरण तं अछिये, अंतिम समयमे लेखकक सुमनजीसं दरभंगामे भेंट सेहो वर्णित अछि।

'मैथिलीक दिक्पाल' मे बाबूसाहेब चौधरीक आंदोलन कर्ताक रूपमे तं चित्रण अछिये, साहित्यक कृतिक सेहो आ बनगांव परिसरक साहित्यक वतावारणकें परिभाषित बहुत सुंदर ढंगे कयलनि अछि।

छेदी झा द्विजवरसं संक्षिप्त साक्षात्कार, राजकमलक प्रति धारणा, मैथिली पत्रिकाक नहिं चलबाक कारण बहुत सहजतासं कहि गेलखिन, 'गदहबेरमे द्विजवरसं साहित्यक भेंट' मे।

किसुनजीक मैथिलीक प्रति समर्पण एना दर्शउने छथि- "सुपौलक साहित्यक साम्राज्यक एकांत साधक। साहित्यक, सामाजिक जीवनक स्वयंमेव संस्था। संस्कृत, हिन्दी ओ मैथिलीक आधिकारिक विद्वान ओ मुखर प्रवक्ता। दुर्लभ पुस्तक सभक संग्रहकर्ता। कुशल शिक्षक। प्राचीन पत्रकार। गद्य ओ पद्यक सधल अक्षर पुरुष। गंभीर शोधकर्ता। सारगर्भित वक्ता ओ विलक्षण उद्घोषक, संचालक।" 'आत्मनेपद' पर विस्तृत चर्चा।

मन पाड़ैत श्री अमरजीक 'युगचक्र' सं लय युग- युगक साहित्यक निष्णात साधक, विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न लोकक जे संस्मरण लिखलनि अछि, से अमरजीक चित्र सामने आबि जायत, बेर-बेर पढ़बाक मन होयत।

प्रबोध बाबूक सहरसा पदार्पणक बहन्नासं सहरसाक सम्पूर्ण साहित्यक गतिविधि, चांगुर पत्रिकाक प्रकाशन, मायानन्द मिश्रक सम्पादनमे अभिव्यंजनाक प्रकाशन आदि आ प्रबोध बाबूक पूरा जीवनी बहुत संक्षेपमे समेटने छथि 'अनवरतमे एक सांझ' शीर्षकमे।

'से ओहि दिन' रामदेव बाबूसं तं भेट भेवे कयलनि, कबिलपुरक मैथिली साहित्यमे अवदानक चर्चा कयने छथि आ 'कबिलपुर अपन नामक अनुरूपें जस्टिफाई करैत रहल अछि। पढ़ल - लिखल ओ विचारवान लोकक संगहि मैथिल संस्कृतिक संरक्षिका महिला समाजक सहज बानगीक खजाना भेटत एत।'

फणीश्वर नाथ रेणुक दोसर मैथिली कथा 'जहां पमन को गमन नहिं' पत्रिका लेल भेटब आ ओहूसं रोचक हुनक दर्शन अपूर्व ढंगे वर्णन अछि।

पंडित राजेश्वर झाक साहित्यक अवदानक विस्तारसं लिखल अछि, मुदा

व्यक्तित्वक वर्णन एना अछि– 'राजेश्वर झाक सम्पूर्ण प्रकाशित पोथी आ हिनक व्यक्तित्वकें तराजुक दुनू पलड़ा पर रखलासं हिनक व्यक्तित्व, साहित्यसं भरिगर होयबाक मुख्य कारण अछि मातृभाषा आ साहित्यक उत्थानक निमित्ति प्रेरित करबाक शक्तिक प्रचुरता।'

कवि/कथाकार धीरेन्द्र, सोमदेवक वर्तमान कष्टकर जीवन, कलानंद भट्टक गजलक वर्णन तं अछिये, हुनकर जैबक कतेक कारुणिक दृश्य उपस्थित कयलनि – "53 वर्षक अवस्थामे जाइत तं देखलियनि, अबैत नहिं।"

प्रो. मायानन्द मिश्र आ प्रो महेन्द्र बहुत दिन धरि एक संग रहलाह, हुनकर वृत्तिक, व्यक्तित्वक, कृतित्वक साक्षी रहलाह, तैं विस्तारसं तीन अध्यायमे बहुत जानकारीक संग संस्मरण छनि स्वाभाविक रूपें, विलक्षण प्रतिभवान विद्वान, साहित्यकार, उद्घोषक आ किछु हास्य रसक रोचक प्रसंग,प्रत्युत्पन्नमतिसं भरल मायानन्द मिश्रक।

'भावांजलि' कें साहित्यक नव विधा कहैत, प्रो भीमनाथझाक व्यक्तित्व -परिचय सेहो देलनि अछि।

भारतक प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसादक बाल्यावस्थहिमे दर्शन आ हुनक संक्षिप्त प्रभावशाली भाषण एखनो धरि मोन छनि। ललित बाबूक 'करइत कर्म विदेह भेला ओ' मे रवींद्रनाथ ठाकुरक ई गीत–

दिन बिनु सूरज
राति बिनु चान
ललित बिनु मिथिला
एक समान

महेन्द्रजी एहि गीतकें एहि तरहें लैत छथि – 'जा ई गीत रहत, ललित बाबू कहियो मरि नहिं सकैत छथि।'

अंतिम, भारती मंडनक कवर पृष्ठ पर महाप्रकाशक फ़ोटो, सभसं कम वयसक महायात्राक पहिल रथी। डॉक्टर महेन्द्रे नहिं, मैथिली साहित्य जगत स्तब्ध छल। हुनकर विषयमे प्रोफेसर महेन्द्र एना लिखलनि – 'महाप्रकाशक निधन, अंत्येष्टि आ जमुनामे भसियायित हुनक अस्थिक संग श्राद्धकर्म-एकादशा-द्वादशाक बाद मासे-मासे होइत छाया, सहरसाक संस्कृतिकर्मी ओ मैथिली साहित्यकारक बीच कालजयी रचनाकारक स्पष्टवादिता ओ बहसक प्राणवायुता सभकें किछु ने किछु सोचैत रहबाक लेल विवश करैत रहल आ एखनहुं करैत रहैत अछि।'

किसुन संकल्प लोक (सुपौल)सं प्रकाशित एहि पोथीक छपाइ, सफाइ त्रुटि रहित अछि, सुन्दर आ आकर्षक अछि। ■

(पृष्ठ 35 का शेष)

मैथिलीमे महाकाव्य...

करबामे भरिसक कलम चलाक' सार्थक योगदान देल अछि। कही तं कैक स्थल पर मैथिलक दृष्टिसम्पन्नतामे स्वभावगत चिंतनपरक सूझ अबस्से विचारक लेल देश, काल ओ स्थिति-परिस्थिति विशेष कें देखैत कयल अछि। ओ कैक स्थल पर यथार्थक मूलवत्ताक प्रश्न सेहो उठौलनि अछि तं तकर समाधानो तदनुकूले करबाक सचेष्ट प्रयास कयल अछि। स्पष्टत: चिंतन मे स्पन्दन करब महाकवि बुद्धिनाथ झाक दक्षता और क्षमताकें प्रदर्शित करैत अछि।

हिनक भाषा अबस्से टकसाली अछि। अर्थात् जनसामान्यक लेल जे सभ केओ बुझि जाय। कतहु-कतहु बौद्धिकतामे कनेक गम्भीर भ' आयल अछि तं तकरो नकारल नहि जा सकैत अछि जे हिनक चिंतन क्रममे गहनताबोधक संग अछि। मुदा, लोक बुझय से सुगमतापूर्वक हिनक दृष्टि रहल अछि। भाषा तं अभिव्यक्तिक माध्यम अवश्य थिक, मुदा एकर सार्थकता मनुक्खक इच्छा, आकांक्षा, विचार-विनिमय, सभ्यता-संस्कृति आदि धरिक संवाहक बनि ज्ञान-विज्ञानक क्षेत्र मे दम-खमक संग समाजी आ संवादी बनि समाज, राष्ट्र ओ विश्वक उन्नति आ विकास माध्यम बनय ताहिमे सन्निहित अछि। से अबस्से ई ग्रंथ मैथिलीक शब्दकें अपनामे समेटैत मानवीय मूल्यबोध सं संस्कारित करैत अछि। कैक ठाम खांटी मैथिलीक शब्द-संदर्भ अर्थवत्ताक संग आयल अछि जे जीवन रससं भरल-पुरल जीवन-दृष्टिकें विकसित करबाक क्रम मे अछि। सत्य पक्षक स्थापना एहि महाकाव्यक उद्देश्य अछिए, जाहि सं मानवीय संवेदनासं ओत-प्रोत भ' भारतीय संस्कृतिक विराट चेतना दिगदर्शित होइत अछि। हमरा तं एहिमे मैथिली-मिथिलाजन्य संस्कार परिवेश, वातावरण आदिक माध्यमे जे एहि ठामक सभ्यता संस्कृतिकें परोसल गेल अछि आ माटि-पानिक दर्द मे जे भाषा-साहित्यक संगहि अस्मिता ओ अस्तित्वबोधकें संरक्षित राखल गेल अछि, से विशेष प्रभावित करैत अछि। तखन के नहि चाहत जे महाकविक अनुभवसम्पन्नतामे अरसे दृष्टिबोध गहनतमबोधमे होइतय तं अवस्से नीक भ' आबितय। इतिहास भूगोलक संगहि ज्ञान-विज्ञानक विकासक क्रम मे सांस्कृतिक समृद्धि हैब अबस्से सार्थक महत्ता प्रदान करैत अछि। धर्मपरक ई ग्रंथ कर्मक साक्षी थिक, से स्पष्ट भेल अछि। हमरा जनैत धर्म स्वयंमे एकटा जीवन-दर्शन थिक, जे मनुक्खक स्वभावमे मानवीय गुण सं सत्यकर्म बलें सत्यपथ पर चलबाक प्रेरणा दैत अछि। तें अन्त:प्रेरित धर्म हृदयक कलुषित विचारकें बदलिक' जीवन-पथक पाथेय थिक। वस्तुत: ई महाग्रंथ मनुक्खक जीवनकें सुव्यवस्थित ओ जीवन-क्रमकें क्रमबद्धता प्रदान करैत सुस्थिर रूप द' व्यक्तित्व कें सार्थकता प्रदान करैत अछि। तें एहि कृतित्वबलें महाकवि बुद्धिनाथ झा अमरत्व प्राप्त क' अपन जीवनकें सार्थकता प्रदान करैत महत्तम ऊंचाई पर आसीन क' लेल अछि। ■

अस्तित्वक संधान करैत निवेदिता झाक काव्य-संसार

✍ डॉ. ललितेश मिश्र

अंग्रेजीक विख्यात् जॉर्जियन उपन्यासकार जेन ऑस्टीन (1775-1817) अपन प्रसिद्ध उपन्यास 'प्राइड एंड प्रेजुडिस' मे अपन एक गोट मुख्य चरित्र एलिजाबेथ बैनेट सं कहबैत छथि- "ही इज ए जेंटिलमेन एण्ड आई एम ए जेंटिलमेन्स डाउटर। सो फार वी आर इक्वल" अर्थात् ओ एकटा भद्र पुरुष छथि आ हम ओहि भद्रपुरुषक पुत्री छी। एतए धरि हमरालोकनि समान छी। एहि कथन मे उपन्यास लेखिका अपन नायिकाक द्वारा लैंगिक समताक भाव प्रकट करबैत छथि। मुदा, एहन उक्ति तं सर्वतोभावेन 'इच्छा जनित विश्वास वा अभिलाषा' मात्रहि थिक, जकरा मनोविज्ञान मे 'विशफुल थिंकिंग' कहल जाइत अछि।

जेन ऑस्टीनक समय मे पितृसत्तात्मक व्यवस्थाक अंतर्गत महिला वर्ग कें लैंगिक आधार पर निजी अथवा सार्वजनिक स्तर पर समानताक अधिकार नहि छल, यद्यपि नारीवादी आन्दोलनक प्रथम चरण, जाहि माध्यमे पुरुषक समकक्ष सामाजिक, आर्थिक ओ अन्य सभ अधिकार प्राप्ति हेतु सिद्धान्तक प्रतिपादन भेल, तावत् धरि प्रकाश मे आबि चुकल छल। तथापि, ताहि काल खंड मे स्त्रीक स्वर महत्वक नहि बूझल जाइत छल। यैह अस्वीकार्यता शनैः शनैः आक्रोश, विद्रोह रूप मे तत्कालीन सामाजिक संरचनाक विरुद्ध एक गोट पैघ चुनौतीक स्वरूप मे भास्वर होमए लागल।

उक्त उपन्यास मे लेखिकाक नायिका दोसर स्थल पर कहैत छथि: "आइ एम रिजोल्वड टू एक्ट इन दैट मैनर व्हिच

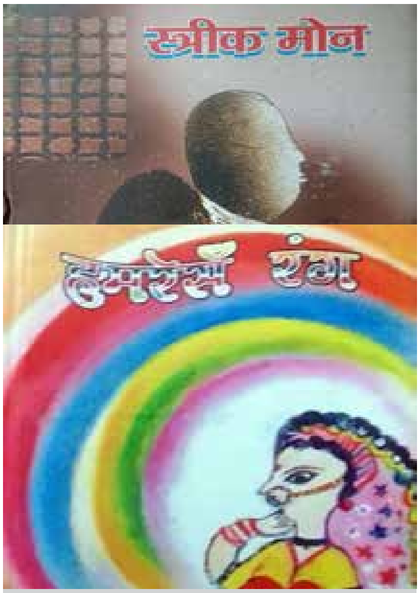

स्त्रीक मोन/हमरेसं रंग

रचनाकार	:	निवेदिता झा
प्रकाशक	:	शेखर प्रकाशन, पटना
वर्ष	:	2017/2018
मूल्य	:	₹ 250/200
पृष्ठ	:	84/112
विधा	:	कविता संग्रह

विल इन माई ओपिनियन कंस्टीट्यूट हैप्पीनेस" अर्थात् हम संकल्पित छी ओहि रूपें कोनहु कार्य करबाक लेल जे हमर दृष्टि मे हमरा लेल प्रसन्नताक संघटन करत।

एहन स्वातंत्र्य चेतनाक स्वर विगत बीसम शताब्दी धरि अबैत-अबैत नारी मुक्ति आन्दोलनक दोसर चरणक क्रम मे बेस प्रखरता सं उद्भासित होमए लागल। 1949 ई. मे फ्रेंच अस्तित्ववादी सिमोन द बोउआर क पुस्तक 'सेकेंड सेक्स'क प्रकाश मे अएलाक पश्चात् नारी स्वतंत्रताक विषय सभ प्रकारक सामाजिक ओ अकादमीक विमर्शक केंद्र मे विशेष रूपें आबि गेल। एहि पोथी मे बोउआर विश्वक सभ समाज मे नारीक प्रति पुरुषवादी सामाजिक व्यवस्थाक अमानवीय, हिंसक, क्रूर पक्ष के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे यथातथ्य उपस्थापित क' कहल जे- "मदरहुड लेफ्ट वीमेन रिभेटेड टू हर बॉडी लाइक एन एनीमल एण्ड मेड इट पॉसिबुल फॉर मैन टू डोमिनेट हर एण्ड नेचर" अर्थात् मातृत्व क्षमता स्त्री कें एक पशु सदृश अपन शरीरहि धरि सीमित ओ जकड़ल रहए देलक जे पुरुष वर्ग कें ओकरा तथा ओकर प्रकृति पर प्रभुत्व स्थापित करब संभव बनौलक।

एहि मे सन्देह नहि जे बीसम शती मे तर्काधारित नारीवादी चेतनाक स्वर एतेक प्रबल ओ तीव्र होअए लागल, जे लिंग भेदी सामाजिक व्यवस्था ओ परम्पराक कम्पित-प्रकम्पित होएब स्वाभाविक भ' गेल। कारण स्पष्ट अछि जे अदौ काल सं स्थापित वर्चस्ववादी पौरुषपूर्ण सत्ता जे अविवेक पर आधारित छल, ओ विभिन्न स्तर पर नैतिक मान-मूल्य तथा परम्पराक आश्रय मे नारीक मेधा, श्रम आ शक्तिक प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण सं आपूत छल, तकरा पहिले बेर एहि प्रकारक चुनौती अथवा आघात भेटल छल। मुदा सत्य तं

डॉ. ललितेश मिश्र बी.एन. मंडल विश्वविद्यालयक अंग्रेजी विभागाध्यक्ष, मानविकी संकायाध्यक्ष, छात्र कल्याण संकायाध्यक्ष पद कें सुशोभिक क' सेवानिवृत छथि। 'प्रस्तावना' (समीक्षापरक मैथिली निबंध संकलन), 'बीच वैतरणीमे' (कथा संग्रह) प्रकाशित।

संपर्क : ग्राम+पोस्ट-बनगांव, सहरसा, बिहार-852212, मो. 8877999199, 7217729290, ईमेल : mishralatitesh@gmail.com

यैह अछि जे विवेक सम्मत अथवा विवेक रहित कोनहु सभ्यताक इतिहास, परम्परा, समाज ओ साहित्य कें परिवर्तित करबा मे बहुत श्रम, साहस, धैर्य ओ समयक प्रयोजन होइत छैक। अनायासे किछु नहि होइत छैक। कतोक पीढ़ीक स्वर्गस्थ भेलाक उपरान्त अमेरिका सदृश विकसित देश मे रंग-लिंग भेदाचारित व्यवस्थाक अतिक्रमण क' नारी कें 18 अगस्त, 1920 ईश्वीयक पश्चात्‌हि मताधिकार (राजनीतिक) देल गेल। परन्तु समाजक मनोविज्ञान तं कदाचित एखनहु हठधर्मीए अछि।

पितृसत्तात्मक अथवा पौरुषपूर्ण सत्ताक विकृत स्वरूप देखि क' अफ्रीकी-अमेरिकी उपन्यास लेखिका टोनी मॉरीशन अपन एक गोट आलेख मे सिमोन द बोउआर सं आगां बढ़ि कहल जे - ''बायोल्जी एण्ड बायगोट्री आर द हिस्टोरिकल एनेमीज - द वुमन हैभ लौंग अंडरस्टूड देम एज द टारगेट इफ सेक्सीज्म इजटू बी अपरूटेड'' अर्थात् जीव अणु एवं कट्टरता ऐतिहासिक शत्रु थिक नारीक लेल आ से पहिनहि, सं बूझि नारी तकरा अपन लय बनौने छथि उन्मूलनक हेतु जाहि सं लिंग भेदी आचरण, व्यवस्था कें जड़ि-मूल सं उखाड़ल जाए सकैक।

नोबेल पुरस्कार सं सम्मानित टोनी मॉरीशन जातीय ओ लैंगिक असमानताक आधार बनाए स्त्री (विशेषतया अश्वेत) क अमानवीय शोषण, अस्तित्वक संकट आदि कें अपन कतोक उपन्यास, यथा, द ब्लूएस्ट आइ (1970), सुला (1973), टार बेटी (1951) मे चित्रित क' स्थापित सामाजिक व्यवस्थाक चेतना कें झकझोरलनि अछि। आनहु भाषा-साहित्य मे एहि विषयक अनुगूंज बेस सक्षमताक संग ध्वनित भेल ओ भ' रहल अछि।

मैथिली साहित्यहु मध्य नारी विमर्श गत शतीक तेसर-चारिम दशक मे उद्‌भासित होइछ, मुदा से अल्पहि रूप मे। ई विमर्श पुरुषवादी सत्ताक दृष्टिकोण सं उच्चरित भेल अछि जाहि मे नारीक प्रति करुणाक भाव नि:सृत तं होइछ, परंच, हुनक सामाकि, राजनैतिक, सांस्कृतिक समतामूलक अस्तित्व स्थापन ओ स्वीकार्यताक विषय विचारणीय नहि होइछ, कारण जे से पितृसत्तात्मक-सामाजिक संरचनाक विरोध मे जाइत छैक। एहन समाज बोध मे कोनहु नारी जीवकान्तक कथा 'वस्तु'क नायिका सं बेसी किछु नहि बूझल जाइत छथि।

मुदा, 200 ईशवीयक पश्चात् स्त्री-समता- चेतनाक उहापोह मैथिली लेखन मे किछु बेसीए भास्वरताक संग प्रकट भेल अछि। ई एक गोट उल्लेखनीय विषय अछि जे एहि कालावधि मे महिला रचनाकारक बहुलांश लैंगिक समता, वर्तमान वर्चस्ववादी पौरुषपूर्ण सत्ताक निर्मम स्वरूप ओ प्रतिगामी शक्तिक प्रतिरोध, स्त्री जनक कुंठित दशा-दिशा कें सबलता सं स्वर दैत प्रतीत होइत अछि।

एहि कालावधि मे महिला रचनाकारक बहुलांश लैंगिक समता, वर्तमान वर्चस्ववादी पौरुषपूर्ण सत्ताक निर्मम स्वरूप ओ प्रतिगामी शक्तिक प्रतिरोध, स्त्री जनक कुंठित दशा-दिशा कें सबलता सं स्वर दैत प्रतीत होइत अछि।

मैथिली साहित्य संसार मे अपन दुई गोट महत्वपूर्ण काव्य-संग्रह - 'स्त्रीक मोन' (2017) आ 'हमरे सं रंग' (2018) क संग आविर्भूत भेल निवेदिता झा रहने एक गोट प्रतिनिधि कवयित्री छथि, जनिक काव्य संसार स्त्री वर्गक चिन्ता, तनाव, दुविधा, अपूर्ण कामना, दबल विद्रोह भाव, सुंदर-असुंदरक द्वंद्वात्मक संघात सं उत्तप्त ओ गतिमान स्थितिक परिचय करबैत अछि। हिनक काव्य आत्मिक यथार्थक कलात्मक पुनर्सृजन थिक ओ हिनक रचना मे व्यापक रूप सं प्रेम, दु:ख, विक्षोभ, नैराश्य ओ दैनन्दिन स्त्री-जीवनक बहुविध रंगहु बेस प्रतिध्वनित होइत अछि।

मैथिलीक प्रतिष्ठित कवि नारायण जी हिनक काव्य सृष्टिक प्रसंग कहैत छथि: ''स्त्रीक पीड़ा, व्यथा, संकट आ साहस कें एकटा स्त्री जतेक स्वाभाविक विश्वसनीयताक संग उजागर क' सकैत छथि, ततेक पुरुष नहि। से निवेदिता मिश्रा झा अपन कविता सभ मे स्त्रीक मोन कें समय सं सजग एकटा निरपेक्ष स्त्रीक आंखि सं स्त्रीक तन्नुक भावनाक संग तादात्म्य स्थापित क' बुझबाक सफल यत्न कयलनि अछि।'' नारायणजीक एहि विचार सं यैह बोधगम्य होइछ जे एक गोट स्त्री कवयित्रीक रूप मे निवेदिता झाक स्त्री-चेतनाक अभिव्यक्ति वैयक्तिक नहि भ' सामाजिक सरोकार सं संबद्ध अछि।

'हमरेसं रंग' काव्य-संग्रहक भूमिका मे 'अपन बात' शीर्षकान्तर्गत कवयित्री सेहो कदाचित परोक्ष रूपें एहि विषय कें एना कहल अछि: ''दुपहरियाक नितांत एसगर मे औनायल मोनक परिणाम अछि हमर कविता, भोरहरबा मे सभक हेतु प्रार्थना करैत अछि, सांझ मे प्रेमक बाट तकैत अछि हमर कविता।''

तहिना 'स्त्रीक मोन' काव्य संकलन मे अपन काव्यक चरित्र कें ओ आओरो स्पष्ट करैत कहैत छथि: ''हम एसगर नहि छी समस्त स्त्रीक प्रतिनिधि छी, एक दर्पण छी...। एहि मे समाहित सबटा कविता कतौ ने कतौ हमरे इर्द-गिर्द मे उपस्थित समाजक सरोकार आ हमर अनुभव सं जुड़ल अछि।''

उपरोक्त कथन सभहि सं कवयित्रीक काव्य सृजन आ तकर सौद्‌देश्यताक प्रसंग प्रतिबद्धता तथा संघर्षशीलताक उद्‌घोष होइत अछि। कोनहु ने कोनहु रूपें 'स्त्रीक मोन' ओ 'हमरे सं रंग' काव्य-संग्रह मे निवेदिता झाक यैह वैचारिक प्रतिबद्धता, प्रगतिशीलता आ सामाजिक सरोकार अपन यथार्थमूलक अस्मिताक संघानक क्रम मे सूक्ष्म अनुभवक माध्यमे अभिव्यक्त भेल अछि। इहो कहल जाए सकैछ जे स्त्रीवर्गक अस्तित्वपरक नियमित सामाजिक इतिहास हुनक काव्य मे कोनहु गाथा सदृश ग्रंथित नहि भए, जेन ऑस्टीन सदृश आशा-आकांक्षा कोनहु आदर्शवादी कल्पना नहि भ' परिवर्तनकामी आत्मसंघर्षक परिचायक अछि।

'स्त्रीक मोन' काव्य-संग्रह मे

कवयित्री कहैत छथि:

''कतेक राति कतेक सांझ
आयल चल गेल
के करतै हिसाब
के बुझौतनि हुनका
एकटा जिनगी तैयार होअय मे
कतेक युग बीतै छै आ
ओइ मे चक्की पिसाइत अछि स्त्री।''

(चक्की जकां पिसाइत स्त्री)

पुनः दोसर ठाम :

''स्वप्न टूटल, गृह छूटल
प्रेम बदलल विलाप मे
गाम छूटल, प्राण टूटल
आकाश अपन अलाप मे
अमर रहल चिन्ह जेना
हृदय मे अंकित युगे-युगे
प्रखर रहल कामना
दमित क' भावना
बहैत नवरंग, नव किसलय जगत मे
मुंह बनौने अनमना
हम गाबैत निर्गुण पराती
जीवन जीबैत संताप मे''

(निर्गुण)

लैंगिक समताक पक्षपाती कवयित्रीक एहि पांती सभ मे नारीक अस्तित्वपरक नियतिक यथार्थ, सामाजिक इतिहास, परिवर्तनक प्रखर कामना ओ दमित भावनाक मध्य झूलैत संताप बनल जीवन चित्रित अछि। एहि कविता संग्रह मे निबद्ध, अधिकांश कविता यथा, 'पुरुष', 'रीतल छी', 'मौन', 'हारल छी', 'स्त्री', 'धी-बेटी', 'नगर विभूषण' आदि स्त्रीक मोन भाव विकलता आ पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था मे असमानता दंशक कथा कहैत अछि। परन्तु, प्रतिरोधक स्वर कतहु असाधारण रूप सं प्रखर नहि प्रतिबोधित होइत अछि। दबल, दमित भाव सं सामाजिक व्यवस्थाक विरोध जं कतहु सांकेतिक रूप मे परिलक्षित होइतहु अछि तं एहन प्रतीत होइछ जे रचनाकार अपन विचारक उद्देश्य प्रति कदाचित संदिग्ध छथि, पूर्ण आश्वस्त नहि छथि। ओ कहैत छथि:

''आब तं सब कहै छथि
पुरुष स्त्री बराबरी पर
तखन
हम सब नइं चाहैत छी
अस्तित्व विलीन भ' क' जीबी
फेर सं अन्हार
कतौ नइं किछु पड़ैए देखाय
घुप्प-घुप्प
मुदा कोना?''

(आस)

अथवा,
''नीक भेल जे
सबटा राज्य बंटि गेल
विदेह, अवध, मिथिला
मुदा,
फेर अवध सं कोनो
राजकुमार होइतथिन विदा
प्रेम मे पड़ि जइतथिन

लैंगिक समताक पक्षपाती कवयित्रीक एहि पांती सभ मे नारीक अस्तित्वपरक नियतिक यथार्थ, सामाजिक इतिहास, परिवर्तनक प्रखर कामना ओ दमित भावनाक मध्य झूलैत संताप बनल जीवन चित्रित अछि।

कोनो राजकुमारी
दू टा विकल्प
अग्नि वा धरती।''

(दू विकल्प)

'अन्हार घुप्प घुप्प', 'दू टा विकल्प', 'अग्नि वा धरती' सन शब्दावली सभ सं कवयित्रीक परिवर्तनकामी भाव अथवा मुक्तिक कामना अनिश्चित अभिवृत्तिक कारणें स्थापित सामाजिक व्यवस्थाक शरणापन्ने भेल बूझि पड़ैत अछि। समधानल प्रतिरोध तं दृष्टिगोचर नहि होइत अछि।

मुदा, 2018 ई. मे प्रकाशित 'हमरे सं रंग' मे निवेदिता झाक सामाजिक चिन्ता ओ राजनीतिक चेतना निश्चयेन सघन ओ व्यापक भेल अछि। एहि मे सड़ैत-गलैत व्यवस्था, परम्पराक प्रति स्पष्ट विक्षोभ अछि, प्रतिरोध अछि, मुदा एतहु आक्रमकताक स्वर मद्धिम अछि, राग-उपराग, चेतौनी सदृश अछि, क्रियाशील विद्रोह नहि अभरैत अछि।

विक्षोभक स्पष्टता, जे हुनक पूर्ववर्ती काव्य मे कदाचित अमूर्त प्रतीत होइत छल, हिनक एहि संकलनक निम्नस्थ पंक्ति मे प्रखरता सं उद्बोधित भेल:

''कतेक युग बीतल
कतेक सभ्यता आयल गेल
लिखल गेल लिपि ग्रंथ कि कविता
कतेक राति टुक टुक ताकि रहल
नदी अपन गति मे रहल मगन
तरेगन कें गिनबाक जुगत
मुदा नइं बदलल तं
भाग्य स्त्रीक''

(भोरक बाट तकैत स्त्री)

अथवा,
''जेना भाप बनि जाइत छैक पानि
ओहिना शरीरक सबटा पोर
अकस्मात् नोरे झोर
मोन आंगन बहुतेक बेर
गंगोत्री यमुनोत्री बनल
पार उतरलहुं एकछत्र ओहि पर अहां
चामर डोलबैत खबासक जमात
बिना कोनो ना नुकुर
हम तं हमहीं छलौं
स्त्री''

(अपना लेल की?)

एहि मे संदेह नहि जे 'हमरे सं रंग' एक गोट विचार प्रधान काव्य-संग्रह थिक, जाहि मे मूल रूप सं पारंपरिक सभ्यता-संस्कृति कें परिवर्तित करबाक प्रयोजन, मनुष्य रूप मे नारीक अस्मिता कें सामाजिक संरचनाक केन्द्र मे स्थापित करबाक औचित्य पर तर्कसंगत गंभीर विमर्श अछि। परन्तु, पौरुषपूर्ण सत्ताक विरुद्धक संघर्ष आक्रामक नहि दृष्टिगोचर होइत अछि। अपितु रचनाकार अपन विरोध-प्रतिरोध भाव इतिहासक अवलंबन सं सामाजिक जागृति लेल नारी अस्तित्वक महत्व आ गौरव ख्यापन द्वारा करैत छथि। ओ कहि उठैत छथि:

''हम तं सृष्टि छी

हम छी अपना नाम नेने
हमरो आब एकटा गाम
हम लिखने छी अपन पृष्ठभूमि
हमर एकटा अस्तित्व
हमरे सं जग संगीतक जीवन
मर्यादा, धर्म, धरतीक आक्षांश
जत' सं इन्द्रधनुषी आभा निकलि
ओझल होइत छैक
जीवनक उत्थान पतन
जय पराजय पर जे बिना विचलित भेने
जे संग रहैत छथि सर्वदा
हम स्त्री छी
हमही छी प्रेम आ
हमरे संग रंग।''

(हमरे सं रंग)

ओ आगां पुन: कहैत छथि:

''स्त्री कश्मीरक होथि कि जनकपुरक
ईराक कि वैशाली
अपन कोखि मे सृष्टिक उद्‌गम रखैत अछि
रचैत अछि जीवन अपना सर्वस्व समर्पित क'क'
कोनो खूंट कोनो काल कोनो युग मे''

(ओ मात्र स्त्री नइं)

एहि सभ पांतीक भाव स्पष्टत: उद्‌बोधनात्मक अछि। जड़ भेल पुरुषवादी समाज-सत्ताक कुंभकर्णी निद्रा भंगक मात्र आयास अछि एहि मे। आक्रोश आ प्रतिरोध सेहो अभिव्यंजित भेल अछि एतए किन्तु आक्रामकता सुसुप्त भेल बूझि पड़ैछ जेना गोइठाक छाउरक भीतर आगि। कखनहु एहनो बूझि पड़ैछ जे आन्तरिक संघर्ष ओ विकलताक अछैत कवयित्री यथास्थिति कें मोन भावें स्वीकार क' लेने छथि। एहि पंक्ति मे एहन स्थिति कें सहजहि देखल जाए सकैछ:

''नइं चाही हौ महादेव हमरा पारिजात
बड़बड़ाइत उठलौं
राघवक पप्पाक ओ बजनाइ
सुनू अहां वर्तमान मे रहू
कने टैरेस पर देखिऔ मनीप्लांट
जे सूखल जा रहल अछि
धिपल पर नून छिरिया देने होथि जेना।''

(हठ)

तथापि एतबा अवश्य स्वीकार कएल जएबाक चाही जे एहि सभ पांती ओ पोथी मे संग्रहित कतोक अन्यहु कविताक अवलोकन सं ई अवश्य प्रतिबोधित होइछ जे कवयित्री स्त्री-वर्गक चेतना कें धार देलनि अछि, नव आयाम प्रदान कएलनि अछि जाहि सं एहि विषयक हुनक प्रतिबद्धता उजागर होइछ।

हिनक प्रतिबद्धता, आशा-आकांक्षा अत्यधिक प्रबलता ओ मुखरता निम्नस्थ पंक्ति मे एहि रूपें अभिव्यक्त भेल अछि:

''आंखि मे समुन्दर
मोन मे धरती जेहन हुब्बा
पांखि मे उड़ान
आकाशक नीलापन
वनक जीवंत उपस्थिति
चिड़ै जेहन आजादी
बिना पेंचक हंसी
बालक जेहन बोधपन
एतबे टा चाही
आर किछु नइं।''

(एतबे टा चाही)

आ,

''स्त्रीक धमनी मे बहैत शोणित
कहि रहल अछि जे
दिअ' हमरा अनुमति
निकलि हम विस्तार ली...''

(चरित्र)

निवेदिता झाक एहि काव्य संकलन मे किछु रचना एहूक अछि जे पौरुषपूर्ण सत्ता सं संघर्षक भूमिका तैयार करैत अछि, यथा, अधोलिखित पंक्ति सभ कें देखल जाए सकैछ:

''नइं चाही मात्र अंगना
मोन सं कएल जाइत छै इज्जत
जोर जुलूस सं उठैत रहै छै विद्रोह
हम सब सियाक उत्तराधिकारिणी
धनुष उठा सकैत छी,
प्रत्यंचो जनैत छी चढ़ायब...''

(जोर जुलुम सं उठैत छै विद्रोह)

फेर दोसर ठाम कहैत छथि:

''सृष्टि विनाशक मध्य
एक बेर विचार क' लिअ'
हम ठाढ़ छी बिगुल बजबै लेल
अहां कने बदलू, कने करू विचार...''

(समावेश)

आ,

''कहिया धरि ओ चुप रहत
बनैत रहत अहिल्या कि द्रौपदी
पृथ्वी सेहो त' स्त्री मानल गेल छथि
याद होयत भूकम्प... सब गोटा कें।''

(समयक कोन दोष)

उपर्युक्त पंक्ति सभक अनुशीलन सं यैह परिलक्षित होइत अछि जे ई कोनहु निर्णायक विरोध अथवा संघर्षक घोषणा नहि अछि, अपितु, ऐतिहासिक घटना कें पुनर्स्मृत कराए एक गोट चेतौनी अछि। इतिहासक पुनरावृति केर संभावनाक द्योतक अछि।

एहि प्रसंग एहि विषय कें रेखांकित करब आवश्यक अछि जे सीता, अहिल्या, द्रौपदी तं त्याग, समर्पण ओ अपरिमित सहिष्णुताक विलक्षण प्रतीक छथि। ओ लोकनि स्वयं तं कोनहु संघर्ष नहि ठानल। मुदा, संघर्ष अथवा युद्धक कारण अवश्य भेल छथि।

ओना ई मानबा मे कोनहु आपत्ति नहि होएत जे कवयित्री आत्म संघर्ष कें बेस सक्षमता सं अपन रचना मे केन्द्रीय विचारक रूप दैत प्रत्यक्ष आ परोक्ष - दूहू रूपें - सामाजिक व्यवस्थाक विसंगति, पुरुष-सत्ताक आत्मतुष्टि, तटस्थता पर तिक्ख प्रहार कएने छथि। हिनक रचना मे ने केवल राजनीतिक चेतनाक संग-संग सामाजिक चिन्ता उद्‌भट रूप मे प्रकट भेल अछि, प्रत्युत् केंद्रीय विचारक यथार्थता कें सेहो नव आयाम प्रदान करैत अछि।

निवेदिता झाक काव्य संसार वस्तुत: स्थापित सत्ताक छद्‌म सिद्धान्त, प्रपंच, क्रूरता, षड्यंत्र ओ संवेदनहीनता आदि सं मानव, खास क' स्त्री-वर्गक अस्तित्व कें बचएबाक लुब्ध आकांक्षी अछि।

निवेदिता जी हिन्दी मे सेहो यशस्वी रचनाकारक रूप मे समाहित छथि। मैथिली मे अपन दुई गोट नवीन वर्ग-चेतना अर्जित क' मैथिली काव्य-साहित्य कें वृहत्तर आयाम प्रदान कएलनि अछि। हिनक काव्य भाषा मैथिल समाज जीवनक निकट तं अछि, परंच, हिन्दी शब्दावलीक उपयोग, मैथिलीक समानार्थी शब्द-सम्पादक रहैत अखरैत अछि। ओ त्याज्य थिक जाहि सं हिनक मैथिली रचनाक भाषिक सौंदर्य अनाहत रहए। ■

व्योममे शब्दक कारीगरी

✍ गंगा नाथ 'गंगेश'

केदार काननक कविता-संग्रह 'व्योम मे शब्द'। छोट-छोट हल्लुक शब्द बिम्ब आ भाषाक संक्षिप्तता व्योम-व्यापी भ' जाइत अछि आ यैह आकर्षण अछि एहि संग्रहक। ओना व्यक्तिगत रूप सं हमरा नम्हर-नम्हर कविता आ भरल-पुरल शब्द-विम्ब कनि बेसी पसिन्न पड़ैत अछि। ई कविता सभ जीवकान्तक कविताक स्मरण करबैत अछि। ओ अपन पूर्वार्द्ध मे कविता मे बौद्धिकताक बात करैत छलाह, उत्तरार्द्ध मे 'थियोसोफिकल' आ संक्षिप्त होइत गेलाह। ओ अपन शुरुआती काल मे 'प्रेसिजन' आ 'एकुरेसीक' बात बेशी करैत छलाह। ओ ई 1970 मे एकटा किताब देने छलाह पढ़बाक लेल, जाहि मे साहित्यक भाषाक संप्रेषणीयता पर विशद मंथन छल। किताबक शीर्षक द' निश्चितता नहि भ' पबैत अछि। मुदा, तैयो 'war of words' सन किछु मोन पड़ैत अछि।

ओना केदार कानन बड़ थोड़ लिखलनि जे भूमिका-लेखक ललितेश मिश्र सेहो कहैत छथिन। मुदा लिख' सं बेशी अपन वरीय लेखक सं लिखौलनि आ से अधिकारपूर्वक। हिनक पिता पंडित रामकृष्ण झा 'किसुन' नव कविताक एकटा पीढ़ी संगठित कयलनि। आ ईहो तहिना वरीय लोकनि सं लिखबौलनि आ से शिशु-कौतुहल संग। ओना केदार कानन सहर्ष जीवकान्तक शिष्य अपना के मानैत छथि। इलियटक प्रभाव त' नवकविताक पूरा पीढ़ी पर पड़ल, किएक तं ओ भारतीय दर्शनक मर्म बुझल जे हमरा लोकनि निद्रा मे विस्मृत क' चुकल रही। हुनक नवता

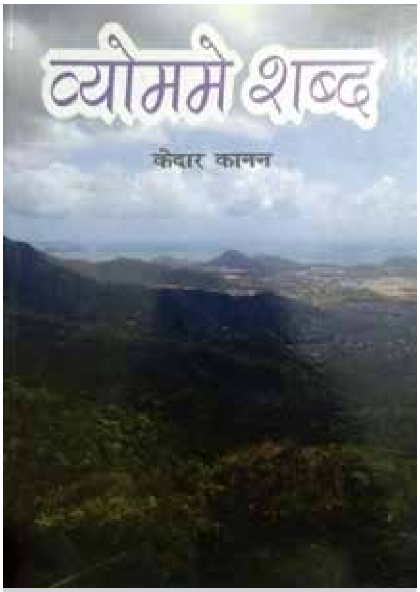

व्योम मे शब्द

रचनाकार	:	केदार कानन
प्रकाशक	:	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
वर्ष	:	2019
मूल्य	:	₹ 100
पृष्ठ	:	120
विधा	:	उपन्यास

मे भौतिक जगतक निस्सारताक व्यापक सुगंध छल। हुनक 'वेस्ट लैंड' आ 'द हौलोमेन' क एहने निस्सारता सभकें आकृष्ट कयलक। प्रथम विश्व-युद्धक सघन वा दुरूह बिम्ब सभ छल। जेना 'पाथर क छांह', 'सहमल आ भयभीत धूलि-कण' आदि आदि। एहि युद्ध मे जे जीतल, से विध्वंस देखलक। जे हारल, से हानि उठौलक आ टूटल मनोबल। एहि विषय पर विद्वान भूमिका-लेखक ललितेश मिश्र विशद भाषा-भाव मे लपेटैत छथि, जकर किछु अंश उद्धृत करब उपयुक्त हैत।

'अपन विषय-वस्तु कें स्पष्ट करबा मे अपन काव्यक महत् उद्देश्य के रेखांकित करबा मे जैह कार्य टी.एस. इलियट, डब्ल्यू. बी. यीट्स, राबर्ट फ्रास्ट आ एजरा पाउन्ड अंग्रेजी आ अमेरिकन साहित्य मे कएने छथि, तहिना तं राजकमल चौधरी अपन 'स्वर-गंधा'क भूमिका मे, सोमदेव अपन 'काल-ध्वनि'क सहजतावादक व्याख्या मे, मायानन्द मिश्र 'अभिव्यंजनावाद'क स्थापना करबा मे सेहो कएल अछि, जकर उद्देश्य आधुनिक नव काव्य कें बुझबा मे सहायता करब छल। अंग्रेजी साहित्य मे इलियट के आलोचनाक अंतर्भूत भ' 'फुटनोट्स' अपन 'वेस्टलैंड' नामक काव्य-कृति के बुझयबाक लेल लिखए पड़लनि।

औद्योगीकरण आ भौतिकतावादक कारणे जीवन-मूल्यक अवमूल्यन कें जन्म देलक, आस्था क विखंडन कएलक, जीवन मे जटिलता उत्पन्न कएलक, ताहि सभ आघात सं जीवन-मूल्य आ संवेदनाक स्तर सेहो परिवर्तित भए गेल। एहने परिस्थिति साहित्यो मे प्रकट भेल। भावाभिव्यक्ति असम्यक् ओ सांकेतिक भेल। एहने अनुभवक अंतर्गत काव्यकार लोकनि अपन भाषा साहित्य कें अर्थवान बनएवाक लेल कतहु दन्तकथा, कतहु प्रतीक, कतहु सादृश्य-असादृश्य तकनीक, कतहु प्रकृति आदिक आश्रय लेल।

गंगानाथ 'गंगेश' बिहार अभियंत्रण सेवाएं सेवानिवृत्त छथि। जीवकान्त पर हिनक संस्मरणात्मक का समीक्षापालक पोथी 'अधरतिया चान' वेश चर्चित रहल। पूर्व मे असमाहि हाथ आ समय सारथी नामक दू गोट कविता संग्रह प्रकाशित छनि।
***संपर्क** : 201, कैलाश पैलेस, मजिस्ट्रेट कालोनी, जागृति नगर, आशियाना रोड, पटना-800014, **मो.** 9006007015*

काव्यक जे स्थापित प्रधान विषय-आनन्द अथवा रसोद्रेक-से अप्रधान भए गेल।'

'प्रेसिजन के सटीक उदाहरण अछि हिनक कविता 'आकांक्षा'। एकर शब्द-विम्ब 'लक्ष्मी कुम्हार' के अर्थ के कोना पसारैत अछि, से द्रष्टव्य अछि।

तैयो हाथ सं/छिटकि-छिटकि पड़ाइत रहल/ मोनक आकांक्षा आइ मोन पड़ल/ अकस्मात कतेक पुरान बात/जे हमर दोस लक्ष्मी कुम्हार/कोना सानैत अछि माटि/दैत अछि मांटि कें आकार/वैह तं हमरो मोनक आकांक्षा थिक/एतेक दिनुक बाद हठात् मोन पड़ल आइ।

अभिव्यक्तिक संकट सं ग्रस्त नवकविता हिचकोला खाइत रहल सातम-आठम दशक धरि। ओना संकटक ई काल बहमूल्य अछि, जाहि मे कते अनाम कवि अपरिचिति आ अभिव्यक्तिक खतरा सं संघर्ष कयलनि। सभ अपन-अपन क्षमताक अनुसार। किछु विद्वान पुरोधा पारंपरिक कवि एहि नव कविता के 'बैरक आंठी' कहलनि। धीरे-धीरे अस्सीक बाद रस्ता सुगम आ चिक्कन होब' लागल। एही प्रौढ़ काल मे केदार काननक वैचारिक गंभीरता, अभिव्यक्ति मे सहजता, संक्षिप्ता आ व्यापकताक संग चमत्कृत करैछ। ओना संक्षिप्तता हिनक कविताक दुर्गुण सेहो अछि, जे कतहु सपाट तं कतहु उत्थर हैबाक आभास दैत अछि। मुदा वस्तुत: ईहो कविता सभ पूरा मनोयोग सं लिखल गेल अछि आ अपन छटा पसारिते टा अछि। इलियट अंत-अंतधरि 'वेस्टलैंड' पर आपत्ति आ निराकरणक बाट जोहैत रहलाह। हुनक अमेरिकी महिला मित्र बेर-बेर सुधार आ तकर विरोध करैत रहलथिन। ई महिला मित्र छलथिन एजरा पाउन्ड।

अभिव्यक्तिक संकट सभ दिन रहल अछि आ से समय-सापेक्षताक कारण होइत अछि। कोनो मनमौजी कवि समयक एहि आवरण कें चीरि 'चैतन्य' क सहारा लेबा लेल बाध्य होइत छथि। आ से मैथिलीक विचित्र आ विशिष्ट कवि राजकमल आ सोमदेव संग सेहो भेल। राजकमल 'मुक्ति' आ सोमदेव 'सहजतावाद' क मार्ग चुनलनि। भगवान महावीर अपन समाधि मे आ ईशामसीह अपन मोक्षक बाद समय कें अदृश्य होइत देखने छलाह। रजनीश कहैत छथि, जे सामान्यत: हम सभ 'चैतन्य के अनुभव नहि क' पबैत छी। सदिखन निन बजाओल संग रहैत अछि, तें ओकर महत्व नहि बुझैत छी।

केदार कानन 'समय' कविता मे एहि

अभिव्यक्तिक संकट सं ग्रस्त नवकविता हिचकोला खाइत रहल सातम-आठम दशक धरि। ओना संकटक ई काल बहमूल्य अछि, जाहि मे कते अनाम कवि अपरिचिति आ अभिव्यक्तिक खतरा सं संघर्ष कयलनि। सभ अपन-अपन क्षमताक अनुसार। किछु विद्वान पुरोधा पारंपरिक कवि एहि नव कविता के 'बैरक आंठी' कहलनि। धीरे-धीरे अस्सीक बाद रस्ता सुगम आ चिक्कन होब' लागल।

बात कें अपन सहज भाषा मे लपेटैत छथि।

मुदा जतय सं
ई समय हमरा बन्हैत अछि अपन पाश मे
ओतय हम पहिने सं बेशी ऊर्जावान
आ सशक्त भ' उभरैत छी
जेना धमन भट्ठी लग ठाढ़
एक कर्मठ लोहार

रजनीश एक ठां कहैत छथि- 'जं अहां कविता कें तर्क सं सुनब, तं आन्हर भ' जायब। जेना कान सं क्यो देखबाक प्रयत्न करैत हो। कविताक लेल तर्क नहि, अपितु प्रेम, भावना वा अनुभूति चाही। तर्क कहियो कोनो बात कें सहज आत्मसात नहि कर' देत। तर्क बुद्धिक सुरक्षा-कवच अछि, जकरा हराओल जयबाक चाही। बिना तर्क के पछाड़ने अहांक अंदर घुसब सुगम नहि अछि। जं तर्क हारियो गेल तं ओहि बात कें हृदय धरि नहिए भरिसक प्रवेश कर' देत आ अहां कें संवेदनहीन बना देत।'

हमरा एहि संग्रह क 'कानब' कविता सभ सं उत्कृष्ट लागल।

जेना क्यो कनैत रहैत अछि
हमरा भीतर मे ताकि कहां पबैत छी ओकरा
बर्खक बर्ख बीति गेल
ताकिये तं रहल छी गाछी-बिरछी,
बाध-बोन मे ई बुझैत जे
हमरे भीतर तं कानि रहल अछि क्यो
तैयो तकैत रहैत छी आन-आन ठाम

समाज, धर्म व राजनीति व्यक्ति कें विभाजित करैत अछि, से पीड़ा मोन मे सुगबुगाइते रहि जाइत अछि आ ओ कनिते रहि जाइत अछि। खासक' आजुक विश्व-व्यापी प्रतिस्पर्द्धा मे। रजनीश एकरा अंश कें पूर्ण सं पृथक रखबाक षड्यंत्र कहैत छथि। आ एहने भाव-भूमिक कविता सभ अछि। मुदा एते संक्षिप्त अछि, जे लक्ष्यधरि रूपांतरित हैबा सं पूर्व आयल पानि गेल पानि भ' जाइत अछि। मुदा एक सं एक, जे उल्लेखनीय अछि।

आब केदार कानन क 'समुद्र' कविता देखू आ थाह लगाउ, जे कते गंहीर अछि। कविता मे अंश कें पूर्ण मे समाहित हैबाक कते व्यग्रता अछि, से द्रष्टव्य।

देखि लेलहुं अंतत: खजुड़ा गेलहु
अंतस धरि भरिपोरल
भरि आंखि समुद्र कें

मुदा कोना भ' सकब समुद्र
तुच्छता आ क्षुद्रता कहां छोड़ैत अछि
संग कखनो, जेम्हरे-तेम्हरे
हमरा सं आगा वैह रहैत अछि बेसीकाल

सीप मे बन्न हमर प्राण
कटैत रहैत अछि अहुछिया
तोड़ि देब' चाहैत अछि

सभटा देबाल सभटा बन्हन
प्राण होब' चाहैत अछि समुद्र

'चिंता' कविता सेहो एही मनोभावक पूरक कविता अछि।

काछि कें फेकैत छी जुमाक'
समुद्रक अतल तल मे चिन्ता कें

कतेक करैत छल दिक्
सोचय नहि दैत छल आन किछुओ
सार्थक आ संभावना सं भरल भविष्यक बारेमे
मथैत रहैत छल दिमागक नस-नस कें
जेना दुहिया भरल थन के दूहि
नि:स्व क' दैत छैक
मुदा बज्र थेत्थर ई
कोनो अगत्ती नेता जकां
घरैत रहैत अछि एकक बाद एक

एहिना 'अंतरिक्ष' कविता मे असीम (transcendent) सं मिलनक तीव्र आकांक्षा व्यक्त होइत अछि।

तावत भने पड़ल छी
चुपचाप एहि झोंझ मे

कोनो चिड़ै जकां
कहियो फुर्र सं उड़ि जायब
पांखि मे भरैत छी ताकति
मोन मे रोपैत छी संकल्प
आइ ने तं काल्हि उड़ब
निश्चये उड़ि जायब अंतरिक्ष मे।

'समय' कविता दोबारा आयल अछि। एकटा भिन्न रंग मे। भिन्न असार-पसार मे।

समय बनबैत अछि पाथर
जे ने बाजि सकैछ ने हिलि सकैछ
ने डोलि सकैछ ने हवा मे
अपन विद्रोही हाथ उठा सकैछ
हम ओहि पाथर मे भरय चाहैत छी चेतना
जे आइ ने तं काल्हि
ओ तनि सकय अन्यायक विरुद्ध

एहिना 'शब्द' कविता मे कवि क predictments अछि, जे संग्रह क शीर्षक 'व्योम मे शब्द' धरि व्याप्त अछि। बड़ छोट-छोट शब्द सं व्योम धरि पसरबाक कारीगरी अछि।

किछु रहि जायत अदृश्य
देखि नहि पायब जकरा
किछु रहि जायत अस्पृश्य
छूबि नहि पायब जकरा
किछु पड़ल रहि जायत विस्मृति क
गर्भ मे मोन नहि पारि सकब जकरा
किछु पहाड़ किछु नदी किछु समुद्र
आइ धरि देखि पौलहुं जकरा
तकरे की क' लेलहुं हम
अव्यक्त अछि बड़ बेसी बड़ बेसी
थम्हू दोस! एखन
रूपान्तरित भ' रहल छी शब्द मे

एहि संग्रह मे ढेर रास कविता अछि, छोट-छोट चुटपुटिया। अंग्रेजी कवि विलियम वर्ड्सवर्थ आ मैथिली कवि जीवकान्त दुनूक प्रभाव-क्षेत्र मे चकमक करैत। ई जीवकान्त सं जबरदस्ती लिखबैत छलाह। जीवकान्त कहैत छलथिन- 'आब हमरा बुते नहि लीखल पार लगतह।'

ओहिना छोट-छोट हल्लुक शब्द प्रेसिजन आ एकुरेसीक संग बिना वृहद् अर्थ-भार लेने रूपान्तरित होइछ। एहने एकटा कविता अछि 'तरकटबा गाम मे जीवकान्त'।

तरकटबा गाम मे बसल जीवकान्त
रचि रहल छथि जीवनक छंद
जोहि रहल छथि ओहि भाव कें
जे आयल नहि एखन धरि साहित्य मे
अपन दीर्घ अनुभवक संसार कें
तहिया-तहिया क' एक-एक क'
सजा रहल छथि पंक्ति मे

मुदा तरकटवे गाम मे
रचैत-बसैत अछि सोहर-समदाउन
बटगमनी आ मलार
कुटिया-पिसियाक मद्धिम स्वर-संधान

जीवन-शैली बदलि रहल अछि। लोक बदलि रहल अछि। गाम आ टोल बदलि रहल अछि। संस्कार बदलि रहल अछि। जीवकान्त एहि परिवर्तनक संग तटस्थ भावे रहैत छलाह, जीवन आ अखड़ियल मुद्रा मे। विलियम वर्ड्सवर्थ अपन कविता 'ईमिटेशंस ऑफ इम्मॉर्टलिटी' मे कहैत छथि-

परिवर्तनशील पृथ्वीक हे मधुर नवागन्तुक!
तोहर अपन अस्तित्व पहिनहुं छलौक
आ एहि सं पूर्व मानव माता-पिता
तोरा आशीर्वाद देने छलौक

अंत मे एहि संग्रहक एक कविता 'वली दकनी' क चर्च कएने बिना केदार काननक वृहद् दृष्टि झांपले रहि जायत। गुजरात दंगाक पृष्ठभूमि मे किछु एहन घटना भेल, जे कम प्रचारित भेल आ विस्मृतिक गर्भ मे चलि गेल। आ से किएक ने हो एकटा उर्दूक आदिकविक मकबरा सड़क मे मिला देल गेल। आ से दू-तीन सए बर्ख पुरान। जांच मे आयल एडिटर्स गिल्ड कें तुष्टीकरणक पक्षपाती कहि नकारल गेल। फरवरी 2002 मे परिघटित ई सुप्त बेमजा घटना एहि भौतिक जगतक विडंबना दर्शबैत अछि। खुसरो, रहीम आ रसखानक परंपराक ई 'वली दकनी' गुजरातक छलाह। ई 'दिल्लीक दिल' लूटि क' गुजरात मे दफन भेल छलाह। दंगाई कें तं एहि प्रेम आ दर्दक शायर सं प्रेम नहिए छल, दोसर पक्ष कें सेहो कोनो दर्द नहि भेल। आ केदार कानन शायद 'वली दकनी' कविता मे अपन दर्दे बयां करैत छथि। जेना बीटल्सक युग मे (सत्तर क दशक) कोनो बीटल झूमि-झूमि क' मंडली मे गाबि रहल हुए।

जेना क्या कुहरैत अछि
राति-राति भरि
क्यो पढ़ैत रहैत अछि
आदिकवि वली दकनीक शेर
सुन्न राति मे अबैत अछि
सधल सुर मे आवाज
कोन बर्बर युग मे
सुनगि रहल छी हमसभ
जेना एकदम लगीच सं अख्यासैत छी
तं लगैत अछि हमर कोनो पुरखा
सुना रहल छथि दर्द सं भरल कोनो शेर
जाहि मे भरल अछि जीवन-रस
भरल अछि उल्लास
मुदा दर्द सं भीजल अछि स्वर
थोड़ेक उदास, थोड़ेक हताश। ■

 ISSN : 2582-1660, वर्ष : 2, अंक : 2

सपनाक बाट पर चलैत कवि नारायणजी

✍ रमण कुमार सिंह

नारायणजीक कविता पर लिखब एगो चुनौतीपूर्ण काज थिक, कियैक ते हुनक कविता कें जौं सरसरी तौर पर पढ़ल जाय, ते भ' सकैत अछि, जे पहिलुक बेर मे किछु बूझय मे नहि आबय। पहिल पाठ मे एहनो भ' सकैत अछि, जे अहां कें ओ अतीतक मोह सं ग्रस्त कवि बुझेयताह, जे एखनो अरिपन, सोहर, गोसाउंनिक सीरा आदिक गप करैत छथि। मुदा वास्तव मे नारायणजी ओहन अबूझ कवि नहि छथि।

हुनक कविता गंभीर पाठ केर, धैर्य केर मांग करैत अछि। नारायणजीक कविता एतेक सरल नहि थिक, जे अहां सरसरी तौर पर पढ़ि गेलहुं आ अहां के सबटा गप बुझा गेल। हुनक कविता के आस्वाद लेबा लेल हुनक काव्य-ध्वनि कें निस्सीम एकांत मे गुनय-बूझय पड़त, जेना शास्त्रीय संगीतक आस्वाद लेबा लेल ओकर बुनियादी ज्ञानक संग संगीत-रस मे तल्लीन भ' जाइ बला मिजाज जरूरी अछि, तहिना नारायणजीक कविताक असली आनंद पयबा लेल काव्य-रस मे डूबब आवश्यक। जौं आदरणीय कांचीनाथ झा 'किरण' जीक शब्दावली उधार ल के कही, ते हुनक कविताक वास्तविक अर्थक आस्वाद लेबा लेल पाठक लग 'मैथिल आंखि' यानी मैथिल दृष्टि हेबाक चाही। हमरा सभक अतीत सं जुड़ल उपरोक्त चीज-वस्तु सभ जौं ओ अपन कविता मे अकल्पित अनुरागक संग आनैत छथि, ते ओकर ई मतलब नहि जे ओ अतीतक प्रति मोहग्रस्त छथि, अपितु ओकर कारण हमर निजी पाठबोधक मुताबिक, ई अछि जे ओ मैथिल समाजक लोक-जीवन आ लोक-चेतना कें कम सं कम कविता मे जरूर बचाय के राखि

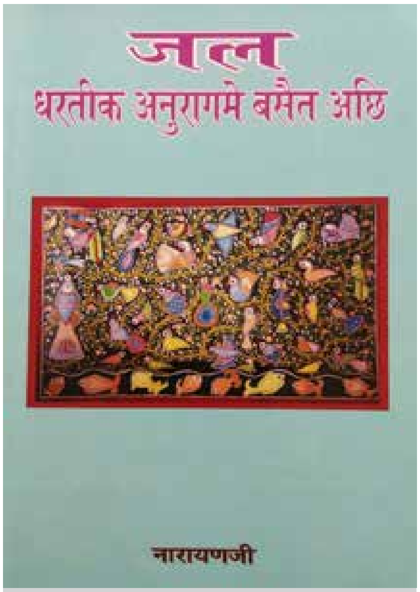

जल : धरतीक अनुरागमे बसैत अछि

रचनाकार	:	नारायण जी
प्रकाशक	:	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
वर्ष	:	2019
मूल्य	:	₹ 100
पृष्ठ	:	96
विधा	:	कविता संग्रह

लेबय चाहैत छथि। एकर कारण ई थिक, जे मौजूदा दौर मे सभटा मूल्य क्षरित भेल जा रहल अछि आ समाजक स्वस्थ परंपरा विघटित भेल जा रहल अछि। एहना मे लोक-चेतना आ लोक-जीवन सं जुड़ल चीज आ मूल्य-परंपरा के बचेबाक ब्योंत कवि नहि करत ते आन के करत? सामीक्ष्य कविता संग्रह (जल धरतीक अनुराग मे बसैत अछि) केर पहिल कविताक एहि पांति के देखल जाए-

'कतेक दुखद थिक-
अन्हार मे डूबि रहल अछि एकटा वर्तमान
एकटा परिचय मेटाओल जा रहल अछि।'

आब एहि पांति कें मोन मे राखि मौजूदा समयक भाष्य कें पढ़बाक कोशिश करू आ देखियौ जे हमरा सभक रोजमर्राक जिनगी मे कोन-कोन चीज सभ अलोपित भेल जा रहल अछि आ चौबगलीक वातावरण मे कोन-कोन संकट सभ गहराय रहल अछि। ई पांति हमरा सभक देश के मौजूदा दशा-दिशा कें रेखांकित करैत अछि आ पाठकक ध्यान ओहि संकट दिस ल' जाय चाहैत अछि, जे अपन फासीवादी रूप मे आबि तुलायल अछि। दुनिया भरि मे भारत केर पहिचान एकटा सर्व समावेशी, बहुलतावादी, विविधता मे एकताक अनुपम समन्वय के उदाहरणक रूप मे रहल अछि, मुदा की मौजूदा भेदभाव बला राजनीति आ भीड़तंत्र के खूनिमा दौर मे हम तकर दावा करि सकैत छी? एहन समय मे जखन कि समूचा देश कें एक्के रंग मे रंगबाक सुनियोजित प्रयास चलि रहल अछि, भिन्न-भिन्न विचार राखै बला लोक कें देशद्रोही केर सर्टिफिकेट बांटल जा रहल अछि, लोकक खान-पान, रहन-सहन, पहिनावा-ओढ़ावा, बोली-विचार के आधार पर ओकर देशप्रेम आ देशभक्ति केर परीक्षा लेल जा रहल अछि, एहन समय के प्रति पाठक कें अपन कविताक माध्यमे चेतौनी देब कोनो कविक प्राथमिक कर्तव्य बनि जाइत अछि। ओ सूत्र वाक्य मे स्पष्ट चेतौनी द' रहल छथि, जे देशक जे एखन धरि धर्मनिरपेक्ष आ सर्वसमावेशी छवि रहल अछि, ओकर ओहि पहिचान कें मेटाओल जा रहल अछि आ फासीवादी संकट देहरि पर

आबि तुलायल अछि।

आब जल शृंखला के एकटा आर कविता के एहि पांति कें देखल जाय-

'पाथर बनि गेल शिखर
तेआगैत अछि जल
चूमैत अछि धरती
धरतीक भरिपोख हवा
धरतीक प्रान-रेख
चूमैत जल
धरती कें दैत अछि उष्मीय आवेश
घोरैत अछि
धरतीक करेज मे अकल्पित अनुराग।'

कवि नारायणजीक कविताक यैह विशेषता थिक, जे हुनक कविताक अर्थ शब्द मे नहि, ओकर ध्वनि मे फूटैत अछि। एहि कारण बहुत रास पाठक गच्चा खा जाइत अछि। हमर अपन पाठ बोध कहैत अछि, जे ई कोनो प्राकृतिक कविता नहि, अपितु विशुद्ध प्रेमक कविता थिक। ओना प्रेम कविता सेहो प्राकृतिके कविता होइत अछि, बिल्कुल स्वाभाविक, एक्कोरत्ती कृत्रिमता नहि। ई जल केर धरती सं एहन अनुरागक कविता थिक, जेकर कल्पनो नहि कयल जा सकैछ! कवि नारायण जी एतय कबीरक एहि पांति कें अपना ढंगे स्वर दैत छथि, जे-

'कबिरा यह घर प्रेम का
खाला का घर नाहीं।
शीश उतारे भूईं धरै
सो घर पैठे माहीं।।'

कवि नारायणजी उपरोक्त पांति मे यैह कहि रहल छथिन जे प्रेम पयबा लेल स्वयं के पूर्णत: समर्पित करय पड़ैत छैक। पाथर बनि गेल शिखर मने ऊंचाई जे संवेदनहीन बनि गेल अछि, ओकरा प्रेमक लेल त्याग करय पड़ैत छैक, तखने जल धरती कें चूमि सकैत अछि आ ओकरा अपन उष्मीय आवेश द' सकैत अछि। आ एहि क्रम मे जल शिखर (जे संभवत: ओकर उत्पत्ति स्थल सेहो थिक) सं अंतर्युद्ध लड़ि एकटा ऐतिहासिक जीत हासिल करैत अछि, मुदा शिखर कें अर्थशून्य नहि बनबैत अछि, अपितु ओकर एकटा अर्थपूर्ण इतिहास रचैत अछि। एहि तरहें कविता कें बेकछा के विश्लेषित करबाक पाछां हमर मात्र एतबे उद्देश्य अछि, जे नारायणजीक कविता बोधगम्य अछि, भने ओकरा बूझय लेल कने बेस गंभीर पाठ केर आवश्यकता होइत छैक। जौं विषयांतर नहि बूझल जाय, तें एहि तरहें एहि किछु पांति कें बेकछाबैत हमरा मोन पड़ल यात्री जीक ओ बहुचर्चित पांति-नवतुरिए आबओ आगां। आ सहजहिं मोन मे ई प्रश्न उठल जे, की यात्री जी एहने नवतुरिया केर कल्पना कयने छलाह, जे शिखर (अपन श्रेष्ठजन) सं अंतर्युद्ध लड़ि ऐतिहासिक जीत पाबि गेलाक बादो शिखर कें अर्थशून्य नहि बनबय, बरू ओकर एकटा अर्थपूर्ण इतिहास रचय!

सुजाता एहि संग्रहक दोसर शृंखला

सुजाता एहि संग्रहक दोसर सीरीज थिक, जाहि मे स्त्री जीवन, ओकर मातृत्व, ओकर संघर्ष, ओकर स्वतंत्रता आ मुक्तिक संग-संग एकटा ऐतिहासिक पात्र सुजाता (जे महात्मा बुद्ध के खीर खिओने रहथि) के जीवन संघर्ष के सेहो कविताक विषय बनाओल गेल अछि।

थिक, जाहि मे स्त्री जीवन, ओकर मातृत्व, ओकर संघर्ष, ओकर स्वतंत्रता आ मुक्तिक संग-संग एकटा ऐतिहासिक पात्र सुजाता (जे महात्मा बुद्ध के खीर खिओने रहथि) के जीवन संघर्ष के सेहो कविताक विषय बनाओल गेल अछि।

'चढ़ैत दिनक धाह पिबैत सुजाता' शीर्षक कविता मे कवि केशौर्य सं युवावस्थाक देहरि पर पैर रखैत कन्याक मनोदशाक मनोरम काव्यमय विश्लेषण कयने छथि। ई कविता एतेक सरल-सहज अछि, जे सामान्यो पाठक एकरा बुझि सकैत अछि-

चढ़ैत दिनक धाह पिबैत सुजाता
लोकेक मोन मे बसए चाहैत छथि
लोके लेल अपना कें प्रस्तुत करैत छथि
लोके मे रचि बचि जीवन पबैत छथि
...
चढ़ैत दिनक धाह पिबैत सुजाता
सृजनक अनिवार्य संभावना छथि।

मिथिला मे दहेज एगो बहुत पुरान कुरीति थिक, जाहि सं आइयो लोक कें पलखति नहि भेटल अछि। एहि विषय कें अपन कविता 'बीच बाजार मे खपैत सुजाता' मे कवि कहैत छथि-

'बीच बाजार मे
जतए रंग-रंगक
वरक बाप सभ
लगाए रखने अछि दोकान
रंग-रंगक
सुजाता कतए जएतीह?
...
कटएबाक छनि हुनकर पिताकें
अपन गेंठ
...
सुजाताक रूप-गुणक कोनो मोल नहि।'

सुजाता कतए जएतीह?-ई एकटा एहन प्रश्न अछि, जे मात्र सुजाताक नहि, संपूर्ण भारतीय स्त्रीक अस्तित्वक समक्ष ठाढ़ अछि। एहिना 'खुट्टा पर बान्हलि गाए ते नहि छथि सुजाता' स्त्री स्वतंत्रताक कविता थिक। मैथिली कविताक शुरुआती चरण कें देखल जाय, ते स्त्री स्वतंत्रता, स्त्री चेतना आदिक कविता लगभग नहिए भेटैत अछि। यात्री-राजकमल सं शुरू भेल ई परंपरा इलारानी सिंह के बाद ज्योत्सना चंद्रम, सुस्मिता पाठकक पीढी मे विस्तार पओलक आ आब कामिनी, निवेदिता, विभा कुमारी, शारदा झा, रोमिशा झा सं होइत स्वाती शाकम्भरीकं कविता मे अपन संपूर्ण तेज, त्वरा आ तेवरक संग हमरा सभक सोझां उपस्थित अछि।

वसंत शृंखला केर कविता सभक स्वर ओना ते एहि विशिष्ट मौसम केर विशिष्टता कें रेखांकित करैत अछि, मुदा एहू कविता सभ केर ध्वनि कें जौं अकानल जाय, ते दैनंदिन जिनगीक हलचल आ गतिविधि सेहो देखार दैत अछि। कने एहि पांति सब पर ध्यान

(शेष पृष्ठ 52 पर)

मृत्यु थिक विचार

✍ डॉ. नरेश कुमार विकल

अपन प्राणद काव्य-कर्मक प्रातिम पुष्यालोक सं मिथिला आ मिथिला सं इतर काव्य-मंच कें लालित्य प्रदान कयनिहार नव कविताक प्रखर प्रवक्ता अजित आजाद मैथिली-हिन्दीक बेस चर्चित ओ लोकप्रिय कवि छथि। मानव मनक उद्दात आ कोमल संवेदना सभक अछूत पपड़ी सभ कें अपन कविताक माध्यमे छुबैत अनुभूति मूलक किरणक अनुपम प्रत्यक्ष थिक हिनक काव्य-कृति 'मृत्यु थिक विचार'।

रचनाशीलता मे जीवन-प्रवाहक मर्मस्पर्शिता, तरल वेग मे बहैत कंचन मधुररागिनीक सरिता, शिशु सुलभ निश्छलताक कारणें अजित आजाद कें युवा कालहि मे अप्रत्याशित सम्मान, अलंकरण प्राप्त होमय लगलनि। हिनक रचनाधर्मिता पर सम्मोहित भ' क' कतेको सुधी, सहृदय संस्था सभ हिनका अपन साहित्यक ओ सांस्कृतिक मंच पर आमंत्रित करय लगलनि।

एहि कृतिक विशेषता थिक मनुष्यक विभिन्न भंगिमाक मनोहारी तानी-भरनी। पाठक पढ़ैत-पढ़ैत कौखन जीव जाइत अछि आ कौखन विसंगतिक गेन्हाइत गंधक प्रति वितृष्णा सं भरि जाइछ। एहि संग्रह मे हिनक पूर्ण निष्ठाक प्रतीति बोधगम्य भाषाक माधुर्ये मे प्रवाहित होइत अछि, जखन कि मैथिलीक समकालीन पत्र-पत्रिका सबहक पृष्ठ हिनक विशिष्ट शैलीक रचनाक संगहि खुजैन अछि।

ग्राम्य-जीवन प्रत्येक गतिविधि, चालि-चलन, आहार-व्यवहार, सभ्यता, संस्कृति, लोक-वेदक प्रचलित प्रथा आदिक अभिव्यक्ति अपना-आप

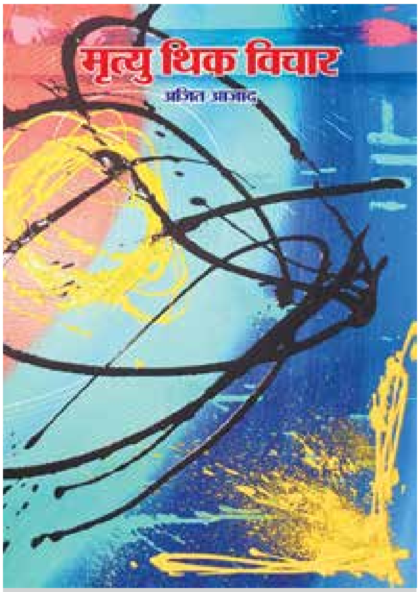

मृत्यु थिक विचार

रचनाकार : अजित आजाद
प्रकाशक : नवारम्भ, पटना, मधुबनी
वर्ष : 2018
मूल्य : ₹ 150
पृष्ठ : 128
विधा : कविता संग्रह

मे कतेको भोगल यथार्थ कें समेटने अछि। ओना काव्य-संसारक भाव-भूमि, रसोत्पति आ भाषाक नव स्वरूप प्रदान कयनिहार कविता सभ मे कल्पना आ सहजताक अपन विशिष्टता थिक।

संयोग-वियोग, सुख-दुख, जीवन क्षणक वैविध्य आ भींजल-तीतल मन कें कवि भाव आ शब्द वैचित्र्य सं अद्‌भुत शृंगार कयलनि अछि।

स्मृति सभक मोहकता, भाव-प्रवणता अतीतक व्यामोह एहि रचना सभक प्राण-तत्व थिक। तकरा लेल ई अपन विशिष्ट काव्य-कौशलक प्रदर्शन कयलनि अछि। गाम-घरक लौल, आध्यात्मिकताक झलकी, प्रकृति आ मानवक रागात्मक संबंधक बेजोड़ समन्वय गंभीर भाव भरबा मे समर्थ भेल अछि ई 'मृत्यु थिक विचार' संग्रह।

एहि संग्रह मे भाव-वैविध्य कें उद्‌भासित करैत 98टा रचना अछि, जे व्यापक संदर्भ मे जीवनक समुचित व्याख्या करैत अछि। छुच्छे जीवनक ओझरायल यथार्थे कें सघनताक संग व्यक्त करैत नहि, सूक्ष्म सघनताक संग मानवीय मनोभाव कें सेहो संवेदनशीलताक संग परसैत प्रतीत होइत अछि आ बहुकोणी चित्र उपलब्ध अछि।

नवम कविता थिक 'मृत्यु सं पहिने'। मृत्यु थिक सत्य, मृत्यु थिक अवश्यम्भावी, मृत्यु थिक परम मोक्ष, मृत्यु थिक लोकान्तरण, मृत्यु थिक महाप्रयाण।

ओना मृत्युक संबंध मे विद्वान ओ दार्शनिक लोकनिक मत भिन्न-भिन्न छनि। महात्मा गांधी कहैत छथि, 'मृत्यु मे आतंक नहि होइछ, अपितु मृत्यु तें एक गोट प्रसन्नता-पूर्ण निद्रा थिकै, जकरा पछाति जागरणक आगमन होइत छैक।'

रवीन्द्र नाथ ठाकुरक कहब छनि, 'मृत्यु जीवन सं ओतबे संबंधित अछि जतेक जन्म।'

वाल्टर स्टाक कहै छथि, 'की मृत्यु अंतिम निद्रा थिक? नहि, ई अंतिम चेतौनी थिक।'

बाइबिल मे लिखल अछि, 'ईश्वरे जीवन देने छलाह, ईश्वरे जीवन ल'

लेलनि। धन्य छथि ओ ईश्वर।'

वाल्ट व्हिटमैनक मत छनि, 'मृत्यु सं बेसी सुंदर आओर कोनो घटना नहि भ' सकैछ।' ओना कृष्ण कल्पितक मान्यता छनि जे - 'मृत्यु अंतिम सत्य नहि थिकै।'

मुदा, 'मृत्यु सं पहिने मे आजाद लिखै छथि- 'किहु पूर्ब, किहु पश्चिम ताकक चाही जरूर

मृत्यु सं पहिने

मुदा, ई इहो कहैत छथि-

'तटस्थता थिक मृत्यु।'

'मृत्यु थिक विचार' शीर्षकक पार्श्व मे जयबाक जिज्ञासा कें सहेजब अथवा संयमित राखब असंभव जकां प्रतीत होइछ, ने जानि अही वयस मे मृत्यु पर एतेक शोध, गवेषणा, व्याख्या, फोकस देबाक की प्रयोजन? कोन मोहभंगक कारणें, कोन वितृष्णाक कारणें, कोन ऊब सं, ककरा सं ऊबि क', ककरा लेल आदि।

ओना सामाजिक समरसता, सौहार्दता, संबंधक प्रगाढ़ता, ईर्ष्या-द्वेष, राग-विराग, मान-सम्मान आदिक सेहो दिग्दर्शन होइत अछि एहि संग्रहक रचना सभ मे।

नवगीतकार आजाद सामाजिक विषमता पर सेहो अपन व्यथा-कथा, चोट-कचोट, टीस-खीसक अभिव्यक्ति देलनि अछि।

'कचोट' शीर्षकक ई पांती द्रष्टव्य थिक-

हराठ सं छूटल बरद जकां

पहुंचय चाहैत छी थैड़ि पर सोझे

बाधक हरियरी खौंझबैत रहल भरि बात

किन्तु जाबल मुंह सं

नहि होइत छैक पूर कोनो सेहन्ता

सुबकैत मानवता आ ऊंचका कोठा मे इतराइत बैभव कें चित्रण एहि संग्रह मे कयल गेल अछि।

जिद, मुट्ठी मे, एहने सन समय मे, गछ, अर्द्ध वृतक अपूर्ण यात्रा, अन्तर, उदासी, हमर भविष्य, रणनीति, पलायन, सत्य केवल जीवन, वैतरणी। पिता-3, 4, जीवन- 2,3,4,5,6, औरदा, कथी लेल, शरणार्थी, एकोढ़, संतोष अपसियांत, पराजय-बोध, कतेक दिन धरि, स्थिति, एकान्त, भूत-1, 2, महाजाल, बजट बलात्कार, ढाबा, मूल्यहीनता, चौंकि, काबि मनुक्ख, श्लीलता-1, 2, इस्तत:, खगता, कसाइ, जोकी, चौबटिया, लक्षण, रचि रहल अछि अन्हार, रिसाब, तदपि, अभिलाषा, सुनू प्रवासी, सेहन्ता, आनन्द, किट्टी, निम्न, स्वीकार-1, 2, अपना मादें, जीवनक गीत, मात्र एहन कविता अछि, जाहि मे मृत्यु अथवा ओकर पर्यायवाची कोनो शब्द संकेत नहि अछि। ई कविता सभ भाषा-सौष्ठव दृष्टि सं, उपराग, ओलहन, आशा-आकांक्षा एवं आन्तरिक गुनधुन सं भरल अछि आ ई संग्रह एखनुक समय मे प्रासंगिक अछि। ■

नै कानू हे मिथला!

– हरि प्रकाश सुल्तानियां
(घोघरडीहा, मधुबनी)

नै कानू हे मिथला!
दर्द छाती में होऽत अछि
देखि, नोर दलान पर बहैत।
के पोछत नोर अहांकें
किनका लग छै,
अतेक टा अंगपोछा?

नै कानू हे मिथला!
सब साल राहत भेटैत अछि
जराऽ क विवेक
बिन हाथ पसारे
नहि रहि सकत,
बुईध आ विवेक।

हे मिथल! नै कानू
1956 मऽ भेटल
एक वीरपुर बराज
जाहि में नहि समाऽ सकत
आसमानक आगाज।

हे मिथिला! नै कानू
एक दिन जरूर आऐत
श्रम आ ज्ञानक भंडार में
संसाधनक पूर्ति होएत
ताबत करू इंतजार
धैर्य राखू, नै कानू
हे मिथिला! धैर्य राखू। ■

भोर सोहनगर अछि

✍ **कमल मोहन चुन्नू**

आइ-कालिह जे मैथिलीमे कविता सभ लिखल जा रहल अछि, जाहिमे किछ साकांक्ष-सचेष्ट युवा आ नवतुरिया कवि सभ बेस संलग्नता आ तत्परताक संग लागल देखल जा रहल छथि, ताहिमे मनोज शाण्डिल्य एकटा बेस आश्वस्तिदायक कवि रूपमे देखार भेलाह अछि। अपन प्रथमे संग्रह- 'सुरुजक छाहरिमे' केर पहिले उपस्थितिमे ई कवि अपना हिस्साक निजगुत बात सभ कें अपन सुनियोजित क्रमिकताक संग कहब प्रारम्भ क' देने छलाह। 'औनायल रातिक भोर' हिनक दोसर कविता-संग्रह छनि।

कवितामे कविक चेतना, विचार, पक्ष आदि सभ प्राथमिक तत्व सन अछि, जाहि प्रसादात् कविताक अपन स्तर, क्षमता आ प्रभाव निर्धारित होइत छैक। कवितामे जं विचार नहि आबय, पक्षधरता नहि बाजय आ प्रगतिकामी आह्वान नहि परिलक्षित होअय तं ओ कविता सभ बौक लोकक ओहेन संवेदना आ ओहेन सेहन्ता सिद्ध होइत अछि, जे भीतर आ बाहर दुनू स्तर पर मौने बनल रहैत अछि। मुदा मनोज शाण्डिल्यक कविता अपन सुच्चा विचार आ नेयारल पक्षक संग हमरा सभक सोझां उपस्थित होइत अछि। एहि संग्रहक कविता सभ सेहो हिनक पकठोस होइत दायित्व आ ताहि दायित्व-बोध सं समृद्ध भेल वैचारिकता-पक्षबद्धता सं लैस लेखन कें उद्घाटित करैत अछि। आधुनिककालक मान्यतामे कोनहु कविता ओहि कविक अपन विचारक प्रामाणिक दस्तावेज अछि।

औनायल रातिक भोर

रचनाकार	:	मनोज शाण्डिल्य
प्रकाशक	:	नवारम्भ, पटना / मधुबनी
वर्ष	:	2018
मूल्य	:	₹ 200
पृष्ठ	:	128
विधा	:	कविता संग्रह

मनोज शाण्डिल्यक ई कविता-संग्रह सेहो हिनक कवि-विचारक प्रमाणिक दस्तावेज अछि। कहि सकैत छी जे ई कवि पूर्वापेक्षा बेसी परिपक्व भेलाह अछि। ई कवि जाहि संयमित-सुनियोजित चतुराई सं अपन कविता लेल विषय-वस्तुक चयन सं ल' क' तकर निर्वाह, प्रक्षेपणादि प्रस्तुत करैत छथि से हिनक प्रतिभा आ क्षमताक खांटी रूप सेहो प्रस्तुत करैत अछि।

एहि संग्रहमे कुल 70टा कविता संग्रहीत अछि। संग्रह प्रारम्भ होइत अछि 'बाबूजी' नामक एकटा बेस दुस्साहस भरल कविता सं। एक दिस सगर समाज अपना हाथमे थाल-कादो भरने अछि आ बेतुकार, आंखि-तांखि मूनि क' सभ पर छीटि रहल अछि। तेहन समयमे ई कवि अपन पिताक प्रति अतुलनीय आभार-भावक संग उपस्थित होइत छथि। वस्तुत: एहि आभार-भाव सं भरल कविता लिखब, एकटा संकटापन्न स्थितिक सृजन सेहो क' सकैत अछि। पूर्वमे मैथिलीक किछु कवि लोकनि पिता आ पितृसत्ता कें खलनायक कोटिमे राखब प्रारम्भ क' देलनि। ई एकटा छोट परिधिमे भनहि ई सत्यहु रहल हो, मुदा मनोज शाण्डिल्य पितृसत्ताक परिधि कें ओकर व्यापकतामे देखब प्रारम्भ कयल अछि। हिनक कवितामे हिनक पिता, हिनक बाबूजी एकटा अनुभव-सम्पन्न पथ-प्रदर्शक व्यक्तित्व रूपमे रेखांकित होइत छथि। एहि भाव कें ई खल कोटिमे नहि, अपितु सम्मान, आभार आदि कोटिमे राखि एकटा एहन व्यक्तित्व रूपमे चित्रित करैत छथि जे कि अपन निर्माण आ अपन समर्थ उत्तराधिकारक प्रति अपन सम्पूर्ण निर्माणकारी योग्यता-दक्षताक संग सदति सचेष्ट रहैत अछि। से एकटा दक्ष कुम्हार सन, एकटा काबिल रचनाकार सन। अपन पूर्वसत्ता कें अस्वीकार करबाक अवैज्ञानिक

डॉ. कमल मोहन 'चुन्नू' चर्चित आलोचक छथि। एहिक अतिरिक्त ओ नाटक, कथा, कविता, गीत-गजल आदिक रचना विपुल मात्रामे कयने छथि। पूर्वमे, चेतना समितिक पत्रिका 'घर-बाहर' केर सम्पादन संग कतेक रास पत्र-पत्रिका आ पोथी के संपादन। सम्प्रति मैथिली भाषा-साहित्यक सहायक प्राध्यापक, सहरसा।

संपर्क *: रमेश झा महिला कॉलेज, सहरसा*

मो. *9334924753/9431687897,* ***ईमेल*** *: kmchunnu@rediffmail.com*

क्रिया-कलाप सं अपना कें एकात करैत ई कवि ओहि सत्ताक प्रति आभारी बनि प्रकृतिक एहि वैज्ञानिक विकासक चिर घटनाक प्रति अपन स्वीकृति आ अपन आदर प्रस्तुत करैत अछि। आ तें ई कवि अपना समाजमे पसरल-पसारल दिग्भ्रम, पथभ्रष्टता, लक्ष्य भ्रष्टतादि पर अपन चिंता प्रकट करैत छथि (संदर्भ-अवरोध) आ ओ चाहैत छथि जे समस्त संघर्षमयी ऊर्जा कें एकठाम समेटि क' एकहि दिस लगाबी जाहि सं मारिते रास थमकल आ जड़ियायल युद्ध सभ कें जीतल जा सकय आ अपन मारिते रास हेरायल लक्ष्य सभक पुनर्संधान कयल जा सकय। कोनहु लक्ष्य-प्राप्ति लेल शत-प्रतिशत सचेष्टता-तन्मयता ओहि संकल्पक प्रथम शर्त होइत अछि। 'अवरोध' कविताक ई केन्द्रीय भाव भरल आह्वान वस्तुत: एकटा चेतनासम्पन्न कविक निजगुत परिचय सेहो थिक। सर्वहाराक आशा-अपेक्षा आ एकर आक्रोश एहि कवि कें सदति सीदित करैत रहैत अछि। कारण आइयो एकरा लेल सभटा चौपड़ि, सभटा दुआरि प्राय: बन्दे जकां छैक। ओकरा सभक जीवन-गाड़ी गतिशील होयबाक आसमे ठमकले सन छैक। ओकर विकास-गाड़ीक सभटा सिग्नल आइयो लाले छैक। नहि जानि ई गाड़ी सभ हरियर झंडी कहिया देखत! देखबो करत कि नहि (संदर्भ- काल)! जखन कि एकरा सभ लग एखनो श्रम आ संघर्षक अक्षय पूंजी विराजित छैक। से नगरीय राजपथ पर बोझ ऊघयबला मोटैत हो आ कि घरे-घर बर्तन-बासन मांजि रहल आ ओहि धनपशुक नित्यावशेष पर आश्रित बनि अपना सहित अपन बाल-बच्चाक भविष्य दाओ पर लगा रहल ओ काजबाली हो। मुदा एकरे दोसर कातक सत्य इहो अछि जे ई सब अपन उदरपूर्तिक भार त'र दबाइत-दबाइत अपन संघर्ष करबा जोग हिम्मति कें सेहो बिसरि जाइत अछि। संघर्षक भाषा पर्यन्त बिसरय पड़ैत छैक ओकरा सभ कें।

एहि कविक कथ्य-क्षेत्र पूर्वापेक्षा बेसी चाकर भेल छनि। हिनक चिन्ता मात्र ओहि श्रमिक, सर्वहारा, गरीब-गुरबाए धरि सीमित नहि रहैत छनि, अपितु शहरक सम्भ्रान्त-समाज लग सेहो जाइत छनि। कश्मीरक सीमा-विवादमे मरैत सैनिक आ ओकर पार्थिव शरीरक संग होइत राजनीतिक आमद-खर्चक एकटा निर्लज्ज खेलौड़ कें सेहो ई अपन कविता-दृष्टिमे स्थान दैत छथि (संदर्भ-सीमा)। आब तं सामान्य बगय-बानिमे उपस्थित होबयबला मानवता चिर उपेक्षा पबैत अछि आ बलगर-हिलसगर मानवता पूज्य भ' जाइत अछि। समाजक एहि पतन पर आ एहि भ' पर कवि कें आश्चर्यित होयब स्वाभाविक छनि (संदर्भ-सांढ़)। बालमन आ बालश्रमक प्रति पूंजी-पगहाबला लोक सभक जे एकटा खतरनाक किसिमक बुधियारी चलि रहल अछि (संदर्भ- चिट्ठी), जाहि प्रकारें आ जाहि विद्रूपताक संग कोनहु घटनाक उपरांत होबयबला जिगेसा कें, समेकित बंधुत्व कें हास्यस्पद बनाओल जा रहल अछि (संदर्भ- लेर), श्रमिकक परिचयमे ओकर श्रमशक्ति कें नहि ओकर आधार कार्ड कें गछल जा रहल अछि (संदर्भ-परिचय), राजनीतिमे जे आब निकृष्टता कें शिरोधार्य बनाओल जयबाक जे महोत्सवीय उदाहरण सभ समाजक सोझां राखल जा रहल अछि (संदर्भ- आधारशिला), सगर समाजमे जाहि तरहें समूह-भावना कें अलोपित कयल जा रहल अछि, सामूहिक लाभ लेल संगोर करबाक शक्ति आ दरेग कें जाहि तरहें थकुचल जा रहल अछि (संदर्भ- कतहु अनन्त मे) तकरा सभक प्रतिकारमे कवि समधानि क' एक बेर आर-पारक लड़ाइ लड़य चाहैत छथि। तें ओ सत्य आ सत्यनिष्ठताक दिनानुदिन होइत लतखुर्दन पर उद्वेलित सेहो भ' जाइत छथि। समस्त प्राचीन आदर्श सभ, जकरा बले ई समाज सदति अपन सभ्य होयबाक ओकाइत ग्रहण करैत रहल अछि, तकर अतार्किक रूपें भंजन सं आ कि ओकर होइत दुरुपयोग सं कवि कें चिन्तित होयब (संदर्भ- सत्यमेव जयते) ई सिद्ध करैत अछि जे कवि व्यक्तिगत जीवन आ सामाजिक जीवनमे एकात्म भाव राखय चाहैत छथि (संदर्भ-क्षण)। आ तखन ओ श्रमिक स्त्री लोकनिक साहस कें स्वीकार करबाक स्थितिमे अबैत छथि (संदर्भ- फुलबाड़ी) आ ओकर आत्म-रक्षार्थ आयल मजगुत चेतना कें आओरो मजगुत करय चाहैत छथि। कविक एकटा साहसिक पक्ष इहो अछि जे ओ आजुक समाजनीतिमे आ कि राजनीतिमे बरमहल अभरैत जनवादी-जनवादितावादी छल-छद्म पर प्रहार करैत छथि। खास क' ओहि अनर्थकारी जनवादक विरुद्ध जरूरे अपन स्वर बुलंद करय चाहैत छथि, जाहिमे गरीबक भूख लेल उचित ब्योंत करब आवश्यक नहि अपितु ओकरा भूख कें विज्ञापनी जामा पहिरा क' उजागर करबेटा एकमात्र दायित्व रहि गेल अछि (संदर्भ-अमरत्व)।

कवि वैज्ञानिक तथ्य सभ कें सेहो एकटा विशेष प्रकार सं, विशेष दृष्टिकोण सं देखैत छथि (संदर्भ- ग्रहण) आ समस्त वसुधा-वसुन्धराक संग अपनैती जोड़य चाहैत छथि। आवास-प्रवासक आयाम कें आरो चाकर करैत ओ गछैत छथि जे एकात्म मानवता भरल भावनाक लोक सभक लेल मिथिलामे सगर संसार छैक आ सगर संसारमे मिथिला छैक (संदर्भ-आवास-प्रवास)। एहि समस्त भाव-दशाक संगहि कवि मनोज शाण्डिल्य अपन जगद्धात्रीक सोझां साभार नतशीश होइत छथि (संदर्भ- जगद्धात्री)। ओ गछैत छथि जे एहि धारती कें प्रेमपूर्ण बनायब अत्यंत आवश्यक छैक (संदर्भ- ओहि दिन)। कहबाक खगता नहि जे ई काज मात्र जगद्धात्रीए लोकनि सं सम्भव होइत रहल अछि। एकरहि प्रसादात् मानव आ मानवता कें अक्षुण्ण राखल जा सकैत अछि। प्रकृति आ कि पर्यावरण समेत समस्त पृथ्वी कें धारणी होयबाक योग्यता प्राय: एही प्रकारें प्राप्त होइत अछि। तें ई कवि एतहु अपन आभार-भाव कें नहि बिसरि पबैत छथि (संदर्भ- विश्वास)। आ एवं क्रमे कवि अपन मारिते रास विषय-वस्तुक संग अपन कविताक रूपमे हमरा लोकनिक सोझां चित्रित होइत छथि।

त' से जे कहैत रही जे 'औनायल

रातिक भोर'क कवि मनोज शाण्डिल्य अपन वैचारिक दृढ़ताक संग अपन कविकर्म कें एकटा सार्थक सोपान दिस ल' जा रहल छथि। तें भरोस अछि जे आधुनिक मैथिली कविताक वर्तमान अपन सुदिनक विस्तार क' रहल अछि। हिनक कविताक भाषा लगभग ओही धरतीपुत्रक भाषा अछि, जकरा लेल कविता चुनल गेल अछि, जकरा लेल कविता बूनल गेल अछि। अपने घर-आंगन आ राज-समाजक बीच घटित होइत अत्यंत परिचित विम्ब-वस्तु आदि सभ कें उठा क' अपन बात कहैत छथि, जाहि सं ओ समान्य सन लगैत घटना हठात् सार्थक अर्थवत्ता प्राप्त क' लैत अछि। अपन देशी प्रतीक-योजना सं अपन कथ्यमे खांटी निजता आनि अपन बात कें झलका देबामे ई कवि बेस सिद्धता देखा रहल छथि, से मैथिलीक कविता-क्षेत्रक एकटा निजगुत उपलब्धि कहल जाय। अपन वस्तु कें समाजमे रखबाक जे एकटा कवि-स्तरक औदार्य छैक, कथ्यक तारतम्य छैक, तकर प्रवाह छैक से सभ एकटा समर्थ कविक समर्थ पक्षमे सं अछि। आ तें एतेक रास दायित्व-बोधक विशिष्टताक संग ई कवि हमरा लोकनि कें ठीके आश्वस्त करैत छथि। हिनक कविताक जे 'रेन्ज' अछि, से मैथिलीक आधुनिक कवितामे आयल एकटा आंखिगर कविक रेन्ज अछि। अपन स्थानीय चित्रमे विश्वक विशदता कें देखबाक आ देखयबाक जे कुशलता अछि से वस्तुत: एकटा विचार-सम्पन्न, दृष्टि-सम्पन्न कविक कुशलता अछि। उल्लेखनीय बात ईहो अछि जे ई कवि जखन एहि दुनियां कें एकटा 'ग्लोबल विलेज' रूपमे स्वीकार करैत छथि तं से अपन मैथिल विशिष्टता आ मैथिल अस्मिता कें विलोपित-विस्थापित क' क' नहि अपितु अपना कें एहि विश्वनगरक एकटा मैथिल नागरिक कबूलि क', मिथिलाक सांस्कृतिक परिक्षेत्रक एकटा जागल-जिम्मेदार प्रहरी कबूलि क'। तें एहि कविक कविता सं ई भरोस होइत अछि जे मैथिलीक आजुक कविता आओरो ऊंच उठत। खगता छैक एहि कवि पर, एहन-एहन मारिते रास युवा आकि नवतुरिया कवि सभ पर ईमानदारी सं, खुशफैल सं गप करबाक। ■

(पृष्ठ 47 केर शेष)

सपनाक बाट पर चलैत कवि नारायणजी

देल जाए-

'हम
जंगल जाए
गाछ बनि जाइत छी
वसंत मे
आ बिसरि जाइत छी
भादबक बदरी मे
भीत पर गोबर सं बनाओल चरको-पनियानीक आरेख
सामाक गीतक माधुर्य
देवोत्थानक अरिपन
हम बिसरि जाइत छी वसंत मे।'

'सपना' शृंखलाक कविता मे बिना कोनो मीन-मेख बहार करैत कवि नारायणजी अपना भीतर दीप्तिमान रहि अपना लेल एकटा सपना तकैत रहैत छथि, जाहि मे उड़ैत चिड़ै, सिहकैत बसात, धानक शीश आ सोझां मे अबैत अड़ना पाड़ा सं टकरेबाक साहस अछि। असल मे सपनाक बाट पर चलैत नारायणजी सिर्फ सपना कें एगो अर्थ मात्र नहि दैत छथि, अपितु स्वयं एगो नव अर्थ पबैत छथि। आ ओ कहैत छथि-

'हमरा लेल यात्राक अगिला पड़ाओ
संपूर्ण सपनाक बाट थिक
अगिला पड़ाओ
सपनाक एकटा अंश नहि
हमर संपूर्ण सपना थिक।'

एहि पोथीक अंतिम शृंखला कविता सभ चान पर केंद्रित अछि। चान लगभग हरेक भाषाक कविक प्रिय काव्य-वस्तु रहल अछि। मुदा नारायणजीक चान हुनक अनुगमन करैत अछि-

'हम चलैत छी
चलैत अछि चान
जेम्हर हम जाइत छी
...
हम चान कें कोम्हर
आ कतेक तेज चलैत देखए चाहैत छी
पहिने स्वयं चलैत छी।'

नारायणजीक कविता जीवनासक्तिक कविता थिक। ओ तोड़बाक नहि, जोड़बाक गप करैत छथि। मौजूदा देश-काल केर संकट आ गतिविधि सं पूर्ण परिचिति राखि ओ वैश्वीकरणाक बिहाड़िक प्रतिवाद करैत मिथिलाक स्थानीय वैभव कें बचेबाक काव्यात्मक यत्न मे लागल छथि। ओ अपन विशिष्ट शिल्प-शैली मे मिथिलाक जनसमूहक सांस्कृतिक चेतना कें स्वर दैत छथि। किछु आलोचक हुनका पर जीवकांतक सान्निध्य मे बहुत दिन रहलाक कारणें हुनक नकल करबाक आरोप लगाबैत अछि, मुदा हमरा एहि आरोप पर कनियो टा भरोसा नहि होइत अछि। वास्तव मे एहन तरहक सोच पूर्वाग्रह सं ग्रस्त अछि। एहन आरोप लगौनिहार आलोचक कें अपन चश्मा पर सं पूर्वाग्रहक गदौंस साफ करबाक चाही, तखने ओ मैथिली साहित्य कें किछु सार्थक द' सकैत छथि। हां, किछु लोकक एहि आरोप कें हम अंशत: जायज बुझैत छी, जे नारायणजीक कोनो-कोनो कविता कतहु-कतहु अबूझ बुझाइत छनि। जौं अहांक रचना पाठक कें संप्रेषित नहि भ' पाबि रहल अछि, ते एकर किछु हद धरि जिम्मेदार रचनाकार स्वयं होइत अछि। उम्मेद कयल जयबाक चाही, जे कवि नारायणजी पाठकक एहि समस्या कें संज्ञान मे लेताह। ओना इहो कहल जा सकैत अछि जे बहुत रास लोक मुक्तिबोधक कविता 'अंधेरे में' नहि बूझि पबैत अछि, ते ओइ सं मुक्तिबोधक महत्व कम नहि भ' जाइत अछि। ■

प्रतिवादी कविक पिरीतक स्वर

✍ **दिलीप कुमार झा**

विद्यानन्द झा मैथिलीक अत्यंत महत्वपूर्ण कवि छथि। हिनक पहिल पोथी 'पराती जकां' कविता संग्रहक रूपमे वेश चर्चित आ प्रशंसित भेल अछि। हिनक दोसर कविता संग्रह 'बिछड़ल कोनो पिरीत जकां' अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद सं प्रकाशित भ' लोकक हाथ मे आयल।

विद्यानंद झाक कविताक मुख्य स्वर प्रतिवाद के रहलनि अछि, से कोनो खास विचारधाराक परिधि मे बान्हल छेकल ई हिनक कविताक एक पक्ष, दोसर पक्ष अछि ई जे मिथिलाक माटि-पानि कें गहे-गहे पहुंचबाक। ओतुका माटिक सोन्हगर सुगन्ध के अपना कविता मे ढारि लेबाक आत्मिक प्रयास करैत रहलाह अछि, से बिनु कोनो लाग-लपेट कतहुं-कतहुं ठांहि-पठांहि कहैत रहलाह अछि। आइ सगरे संसार भागि रहलए, कतय भागि रहलए? लागत हर क्षण जेना कोनो उत्सवक आयोजन सं चंचलता आ बेचैनी सं लोक गुजरि रहलए, एकरा जेना नीके चलि रहल हुए मुदा से नहि ओहि चकमक इजोतक बीच, एहि बनावटी उत्सवधर्मिताक बीचो ओ एहेन व्यक्तिक मुंहेठ हेरि रहलाह अछि जे उदास अछि, अभागल अछि, अत्महत्या पर विर्त खेतीहरक अभागल परिजन कें हेरि रहलाह अछि। कहैत छथि-

''ताकि आनी
आत्महंता खेतिहरक अभागल परिजन कें
आ बचाबी भिन्न ध्वजक रंग के धोखरि जेबा सं
हुनकर नीरक बरखा सं,

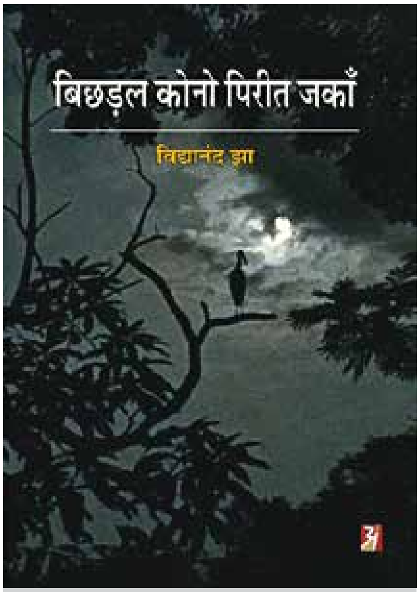

बिछड़ल कोनो पिरीत जकां

रचनाकार	:	विद्यानन्द झा
प्रकाशक	:	अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद
वर्ष	:	2019
मूल्य	:	₹ 300
पृष्ठ	:	144
विधा	:	कविता संग्रह

भूमंडलीकरणक पछाति ओकर समाज पर प्रभाव पड़ि रहलैक अछि ताहि संदर्भित एकटा दीर्घ कविता अछि एहि संग्रह मे 'जीवन खाली आमे जामुन टा नै होइछै'। एहि कविता मे कवि कें अपन स्मृति शेष आ वर्तमानक बहुतरास वस्तु जे किछु विरहि गेल सेहो मोन पड़ि रहल अछि। जेना अपन गाछी-बिरछी, खेत-पथार, पोखरि-झांखरि आदि। गामक पुरखाक रोपल गाछी-बिरछी सभ आब बिकाय लागल अछि जेना भूमंडलीकरण मे बेचल जा रहल अछि भारत सरकारक उद्यम सभ। कृषि भूमिक अधिग्रहण, ओहिपर उद्योगपति लोकनिक कब्जा कवि कें भीतर तक बेधैत छनि जे मिथिला भूमिक सुच्चा लोक छैत, जकर नेनपन गाममे बितल हेतै तकरा मिथिलाक कृषि सं, कृषि आधारित जीवन पद्धति सं बहुत लगाव रहैत छथि, हेबाके चाही से एहि कविताक पांति सभमे कवि प्रकट कयलनि अछि। एहि कविताक माध्यम सं मैथिलीमे लिखाइत अगड़म-बगड़म कविता आ कवि कें सेहो क्लास लेलनि अछि, छथि तं पेशा सं शिक्षके ने, कहैत छथि ''मोन पड़ैत अछि अगड़म-बगड़म/ मोन पड़ैत अछि किदनि कहांदनि/मौन पड़ैत छैक जेना अनर्गल प्रलाप/बोखारे मे बौआइत कवि।'' अनेक कवि भले बोखार मे बौआइत टौआइत हुए मुदा, हमर ई कवि दृढ़विश्वास सं कहि रहलाह अछि जे हम नई/तजलहुं नई अछि गाम एखन ध रि उपटलहुं अछि त' नहिएटा/मुदा जीवन खाली आमे जामुन टा तं नई होइत छै।

विद्यानन्द झा अपन स्पष्ट विचार आ धारक संग कविता मे छथि से फराक परिचितिक संग हिनक आपादमस्तक खांटी मैथिलपन पाठक कें त' प्रभावित करिते अछि ठाम-ठीम हिनक कविताक मजगूत स्वरक रूपमे मोहैत अछि। एहि

दिलीप कुमार झा छात्र जीवन सं मैथिली सम्बन्धी गतिविधि मे शामिल छथि। दू गोट कविता संग्रह: अरुण स्तम्भ आ बनिजाराक देस मे, एक गोट उपन्यास प्रकाशित। अरुणिमा वार्षिक पत्रिकाक संपादन। पूर्वोत्तर मैथिल पत्रिकाक युवा विशेषांकक संपादन। प्राथमिक शिक्षा मे मैथिली अनिवार्य होय, से सपना लेल अभियानरत।

***संपर्क** : आदर्श नगर, मधुबनी, बिहार*

***मो.** 9430989449, **ईमेल** : maithilisssamiti4@gmail.com*

संग्रहक सभटा कविता विलक्षण अछि जेना मैथिलीक प्रति गहींर आस्थाक ई कविता– 'गुगलक पार/मोन मे बसल। जीह पर लपपाइत सूच्चा लोकभाषा थिक हमर भाषा। जखन कवि कोनो शब्द बिसरैत छथि त' शब्दकोशक सहायता नहि अपना माय सं पुछैत छथि ओ शब्द जे बनैत अछि हिनक काव्य भाषा। तें ने जनभाषाक ई सुच्चा कवि छथि, बिनु कोनो राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय बनबाक सेहन्ता के। साहित्य मे बाना धरब जे हेब से स्वीकार नहि करब ताहि सं फराक छनि हिनक परिचय से कविताक एवं कविक दुनूक। श्रमशील मानव आजुक कविताक मुख्य स्वर अछि मैथिली मे ई स्वर जे स्व. भुवनेश्वर सिंह भुवन सं प्रारंभ भेल आ वैद्यनाथ मिश्र यात्री लग आबि वेश जगजिआर भेल अछि, ताहि क्रम कें आगां बढ़बैत कवि विद्यानंद झाक एहन कविता सभ एहि संग्रहमे रचलनि अछि। एकटा कविता अछि एहि संग्रह मे 'श्रमजीवी' जाहिमे बहुत नीकसं श्रमजीवी लोकनिक महत्व कें रेखाचित्र खिंचलनि अछि, कोनो महान राष्ट्रक जे ई पैघ उपलब्धि वा चकमक करैत वातावरण देखते छियै से तकर निर्माण ओतुका श्रमशील मानवेक माध्यम सं होइत छैक। एकटा आर बहुत सुन्नर कविता अछि एहि संग्रह मे 'बैगनी रंगक ई बुस्सट' एकटा बुस्सट पहिरलापर कविक मोनमे कोन–कोन प्रकारक वैचारिक तरंग उत्पन्न होइत छनि से बहुत करिछाक' आयल अछि एहि कविताक माध्यम सं। कवि खेतिहर लोकनिक व्यथाकथा, कारखानाक मजूर लोकनिक पीड़ा, कपड़ा सिबैत, बंटन टंकैत ओहि महिला मजूरक व्यथा–कथा जे भरि दिन मेहनति मजूरी करैत अछि तथापि अपन मजूरीक टाका एखनो अपना मोन सं खर्च करत से एखनो स्वतंत्रता नहि भेटलैक अछि। एहि कवितामे एक संगे दूटा विमर्श ठाढ़ कयलनि अछि किसान–मजूरक हालति आ स्त्री लोकनिक अधिकारपर नीक कविता अछि। ई सभटा गप कविकें अपन ई बैगनी रंगुक एहि बुस्सट पहिरला पर मोन पड़ैत छनि। एतबे नहि श्रमजीवी कलाकारक महत्व के सुंदरता सं रेखांकित कयलनि अछि अपन कविता 'हजार इच्छा लिलसा हजार–1' मे मोन होइत अछि/कहियो जा क' सिखितहुं छैल बनायब/बनायब चुकरी/बनायब माली/ बनायब पिलेट/ताहि लेल कवि कें खोज छनि एकटा योग्य बंचल कुम्हार कें जकरा सं शिक्षित–दीक्षित भ' सकथि। विलक्षण अछि ई कविता।

कवि वाद–प्रतिवादक संग अनुराग कें नहि बिसरलाह अछि, कोमल तत्व जीवनक राग थिक, एकर बिना जीवन की? जीवन खाली ईंटे–पाथर लोहे–लक्कर थोड़े छै। जीवन छैक गाछ ओहिमे सं झहरैत सिंगरहार जकां फूल, कामिनी आ बेलीक सुगंधि, माधुरीक तुबैत पातर पौखि, ललौन ठोर। इहो सभ छनि हिनक कवितामे। प्रेम तत्व यत्र–तत्र बिखरल पड़ल अछि एहि सम्पूर्ण पोथीमे से 'भरदुतियाक भाई–बहिनिक प्रेम हुए वा अपन पिरितियाक लेल। एकटा विलक्षण प्रेम कविता अछि 'हे हमर परितिया' अनुराग सं महमह करैत कविता 'ककरा लेल सजाओल पातक सेज/हे हमर पिरितिया/ ई फूसक मड़ैया, ई पटुका सोर/खम्हाउरक चक्का, पाकल मीठगर मखान/लौंग द'क' लगाओल गुआ–पान/ चानक शीतल इजोत/सुरूजक धाहक संग अपन स्वप्नक सभटा रंग समर्पित करैत छथि अपन पिरितिया कें। प्रेम रसक एकटा ई विलक्षण कविता अछि। प्रेम समर्पण मंगैत अछि से कवि पूरा समर्पित क' देल अछि एहि कवितामे। कहि सकैत छी 'सय टका टंच' प्रेम कविता अछि ई। कवि कें अपन भूमि मिथिला सं बड़–प्रेम छनि, अगाध आस्था छनि मिथिलाक प्रति तें ने अपन प्रिय बांग्ला कवि जीवनानन्ददास कें मिथिला टहलाब 'चाहैत छथि देखब' चाहैत छथि अपन रूपसी मिथिला। अनेक आर विलक्षण कविता सभ अछि एहि संग्रह मे। 'दीदारगंजक यक्षी' सेहो एकटा सुंदर कविता अछि यक्ष–यक्षीपर बहुत कविता लिखायल हैत मुदा ई कविता थोड़ेक फराक अछि। मूर्तिक सौंदर्य शिल्पक वर्णन त' अछिए एहि कवितामे स्त्री विमर्शकें बहुत सुंदर ढंग सं कवि कविताक केंद्र मे अनलनि अछि – 'कखनहुं बैसितो छथि/कखनो नई रखैत छथि/हाथक चर नीच्चा/ओतेक शताब्दी सं/एखनो चर डोलबैत भेटि जेती दीदारगंजक यक्षी घरे घर/ठाढ़ भेटती दासोदास।

निश्चितरूप सं ई कविता संग्रह मैथिलीक एकटा विलक्षण कविता संग्रह अछि। वैचारिक रूपसं कविक एक सांचा छनि, ताहिमे ओ कतहुं विचलन नै अनलनि अछि, से हिनक सबल पक्ष छनि। मुदा एक–दूटा गप त' छैक जेना कवितामे कहैत छथि भूमंडलीकरणमे बेचल जा रहल अछि सभटा उद्यम। कियैक एहि उद्यम सभकें बेचल जा रहल अछि? ई उद्यमसभ श्रमिक संघक गलत नेतृत्वक चलते निरंतर घाटा मे जा रहल अछि, कएकटा के त' भट्ठा बैसि गेलैक, श्रमिक सभ बेरोजगार भ' गेल। श्रमिक कें उचित पारश्रमिक लेबाक पूरा अधिकार छैक, मुदा उत्पादकता बनल रहय। सेहो श्रमिकक दायित्व छनि। श्रमिक संघ सभ श्रमिकक हितकें अनदेखी क' अपन राजनीतिक नेतृत्व कें चमकेबा मे व्यस्त छथि। जकर परिणाम आई सभ उद्यम घाटा मे जा रहल अछि आ सरकार एहि उद्यम सभ कें बेचि रहलए। कविकें तानाशाही प्रवृति पर आपत्ति छनि से लोकतांत्रिक देशक निर्वाचित सरकारक प्रतिनिधि पर छनि। भ' सकैय हिनक गपमे किछु दम होइ मुदा जतय बिना निर्वाचन आजीवन कोनो व्यक्ति कें देश कें प्रधान घोषित क' देल जाइत छैक से तानाशाही पर ई मौन छथि। ई दोहरा मानदंड नहि अरघैत अछि, तहिना आतंकवाद एकटा वैश्विक समस्या छैक ताहिपर कोनो कविता नहि अभरल। हं, एकटा कवितमे (साहित्य–1) मे मुस्लिम बच्चा कें स्कूल मे आतंकवादी आ पाकिस्तानी कहल जाइत छैक भारत मे, से प्रकट करब हिनका सन कविकें शोभा नहि दैत छनि। हमरा जनैत भारत एकटा लोकतांत्रिक देश अछि, लोक विभिन्न दल कें सत्ता दैत रहलैक अछि, भ' सकैये सभक विचार सं हम सहमत नै होइ, मुदा लोकतंत्र मे अपन विचार राखब, अपना विचारक प्रति आस्था प्रकट करबाक अधिकार त' सभकें छैक।

अस्तु, सम्पूर्ण कविता संग्रह पढ़लक पछाति ई निष्कर्ष निकालल जा सकैत अछि मैथिली काव्य जगतक लेल ई एकटा अभिनव कविताक पोथी अछि। ■

नवकवितामे समधानल डेग

✍ अमित मिश्र

नव कविता रचब ततबे कठिन छै, जतेक उज्जर कैनवासपर मिथिला पेंटिंग बनाएब। जं निरपेक्ष भ' जांचब त' बेसी कठिनक तमगा कवितेक नाम आएत। एकरा लिखबाक लेल चिंतन चाही, जकर कोनो समय सीमा नै। एक मिनटमे सेहो कविता बनि जाएत आ एक सालमे सेहो नै बनत। बिना लाइ-लटपटकें कही त' नव कविता समय मांगैत अछि, धैर्य मांगैत अछि आ मांगैत अछि नव दृष्टि, नव शिल्प आ शब्दसं खेलेबाक लुरि। जं ई गुण कविमे अछि त' ओ कतौ, कोनो विषयपर एकटा उत्कृष्ट कविता बना सकै छथि।

एखन मैथिली साहित्यमे नव कविताक बाढ़ि जकां आएल अछि। एहि दहारमे भसियाइत बौआइत कतेको शब्द वा भाव कछेर लागि ठमकि गेल आ कतेको निरंतर प्रवाहमे अछि। एहनेमे एकटा अंखिगर नव कवि अपन 'एखन धरि' ल' उपस्थित भेल छथि, से छथि अंशुमान सत्यकेतु। ओना ई ओतेक नव नै छथि। 'एखन धरि' सं पहिने अनुवादक पोथी सभ आएल छन्हि। मुदा मौलिक कविताक रूपमे ई ओपनिंग छन्हि। अंशुमानक दृष्टि फरिच्छ छन्हि से हिनक कविता प्रमाणित करैत अछि।

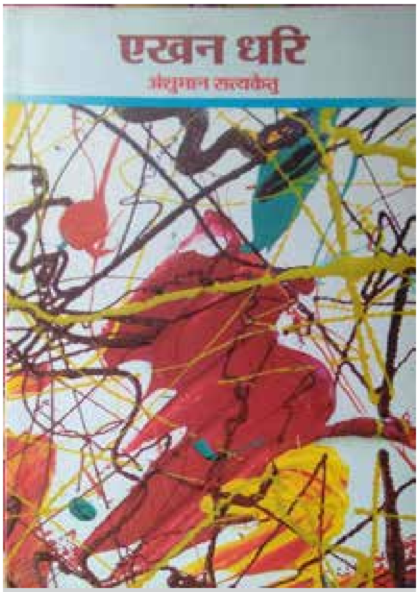

एखन धरि

रचनाकार	:	अंशुमान सत्यकेतु
प्रकाशक	:	नवारंभ, मधुबनी/ पटना
वर्ष	:	2018
मूल्य	:	₹ 150
पृष्ठ	:	109
विधा	:	कविता संग्रह

38 वर्षीय कविक संग्रह एतेक देरसं आएल से प्रश्न ठाढ़ करैत अछि मुदा एकरा उत्तर दैत अछि कविता। जं प्रकाशक अजीत आजादक शब्दमे कही त' अंशुमान पूर्णकालिक कवि छथि। ओ एक बैसकीमे नै लिख, एक टा कविताकें बेर बेर ड्राफ्ट करै छथि। ई गुण वा धैर्य अधिकांश युवामे नै भेटैत अछि। अंशुमानक समधानल शब्द आ तैयारी संग रचल कविता रचनाकें उत्कृष्टता प्रदान क' रहल अछि। कविक कविता सभमे अनेक प्रकारक भाव अछि आ ततबे अछि चिन्तन। कविताक प्रवाह सेहो आकर्षित करैत अछि। संग्रहक अधिकांश कविता नपनासं नापल लागैत अछि जेना कि रन्दा मारल होइ। कोन स्टेंजा कत' देबाक छै तकर नीकसं ध्यान देने छथि कवि।

मिथिलाक सबसं पैघ त्रासदी रहल कुसहाक टूटब। कवि एहिसं व्यथित छथि। कविकें बाढ़िक पानि शोणित जकां देखाइत छन्हि। 'सोनिताएल धार : जे नहि रहलाह' कवितामे कवि कहैत छथि-

"जेना-जेना बाढिक पानि
जबकैत गेलै
ओकर रंगो बदलैत गेलै
आब तं सम्पूर्ण पानिए
लाल भ' गेल छलै।"

मात्र एतबी टा कविता एकटा पैघ प्रश्न ठाढ़ करैत अछि। बाढ़िक विभिषिका आ बाढ़ि गेलाक बादक स्थितिक बड़ इमोशनल वर्णन भेल अछि एहिमे।

रचनामे प्रतिरोधक स्वर कविकें बेस चर्चित परिचित बनबैत अछि। प्रतिरोध करब सभक वशकें बात नै। कवि से साहस केलनि अछि मुदा समाजक संगोर करैत। 'धधरा' कवितामे पहिने त' ताल ठोकैत कहै छथि 'की सपना देखबाक अधिकार / अहीं टाकें अछि / हमरा नहि 'आ फेर समाजक अंतिम पांतिमे ठाढ़ लोककें उत्तेजित करैत कहेत छथि-

"सपना सपने नहि रहि जाए
तें ध' लिय' बाट हमर
पाथरक माथपर तरुआरिक नोंक पिजा
खुखरीपर सान चढ़ा
ओकरो बन्हन तोड़ि दियौ
हरेक करेजमे
एकटा धधरा जरा दियौ।"

समस्तीपुर जिलान्तर्गत मध्य विद्यालय, करियन मे प्रखंड शिक्षक। एखन धरि आध दर्जन सं बेसी पोथी प्रकाशित। हिनकर बहुचर्चित बाल कविता संग्रह अछि 'अंशु बनि पसरि जाएब'।

__संपर्क__ : ग्राम+पोस्ट : करियन, भाया : इलमासनगर, जिला : समस्तीपुर, राज्य : बिहार, पिन : 848117
__मो.__: 9122105183, __ईमेल__:mit11193@gmail.com

दोसर दिस 'अंतिम सत्य' मे कहै छथि

किए सदिखन
एना बुझाइत रहैत अछि
जे
विद्रोहटा थिक
दुनियाक यथार्थ...
की एहि सृष्टिक सृजन
बिना विद्रोहक भेल?...
नवीन रचनाक लेल जरूरी अछि
शापित होएब
जरूरी अछि स्थापितक बलात्कार

कवि एकटा पुत्रक कर्तव्य सेहो निर्वाह क' रहल छथि। अपन पिताक कर्तव्य आ जिम्मेदारीपूर्ण दिनचर्या देख कवि 'पिता' कवितामे लिखै छथि–

"हमरा इस्कुलसं आबिते देरी
पुछितथि- की सभ पढ़लह आइ ?
हम सभ कॉपी आगूमे
राखि दैत छलियनि निस्तब्ध
एक दिन देने छलियनि आनिक'
एकटा बेंतक छड़ी
तहियासं पिता
ठक-ठक करैत चलि रहल छथि
अपन चालिमे
दुनियाक चालिसं अलग चालिमे।"

अदौसं देखल गेल अछि जे विकासक गाड़ी अंतिम व्यक्ति धरि नै पहुंचि पाबै छै। कवि सेहो एहि बातक समर्थन करैत छथि मुदा आशा सेहो जगबैत छथि जे हमर विकास होयत। ओ भोर होइत देखै छथि। सूर्यक उगब नै, इच्छाकें उगैत देखै छथि। शोषित वर्गकें अधिकार लेल एकजुट होइत देखै छथि आ तें 'भोर' कवितामे कहै छथि–

"आइ टोलपर
कतेको दिनसं नञि फुलाएल रहै सूर्य
नञि भेल रहै रौद
आइ मुदा
डिबियाक पझाइत कतारक पछुअइतमे
ओते दिनक प्रतीक्षा मरणासन्न पड़ल छै
आ मुट्ठी भरि अजोह गर्मी
चहुंओर छिटकि चुकल छै
आइ टोलबैया
गढ़ि लेलक अछि तरहत्थी सन सूर्य
अपना लैए
आइ कते दिनपर
एत्तहुं भेलैए भोर।"

से भोर होइत देखाइत अछि कवितामे। मैथिली कविताक गगनकें एकटा आओर सूर्य अंशुमानक रूपमे भेटल अछि। धूमकेतुक पुत्र होइतो ई अपन पितासं फराक छवि बनबामे सफल भेल छथि। से उपरका उदाहरणमे बुझाएल हएत।

कविताक अंत एकर आरंभसं बेसी चहटगर लागैत अछि। हल्लुक मतलब ई नै जे कमजोर। एकर मतलब अछि जे अहां बिना कोनो बेसी दिमाग खर्च केने भाव बुझि सकै छी। एखन नव कवितामे पाठक लेल सभसं बेसी समस्या कहबाक अर्थ बूझब अछि। ओना पूरा पढ़लाक बाद एहि पर असहमत नै भ' सकब से विश्वास अछि।

संग्रहमे कुल साठि टा कविता अछि। किछु कविता एहनो अछि जे संग्रहकें कमजोर करैत अछि। एकटा कविता अछि 'हुल्ले लेले...' कवि की कहि रहल छथि से ओतेक फरिछ नै पाबि सकल अछि एहिमे। दूर कि ल' ग, जाड़क राति सन कविता एहि संग्रहक आन कविता सभसं कने झूस भेल अछि।

किछु कविता एहनो एहि संग्रहमे अछि जकर विचार-विन्दु समान घटनाक इर्द-गिर्द घुमैत अछि जेना कि 'दाही, सोनियाएल धार : जे नहि रहलाह, खबरि' सन कविता बाढ़िक बिम्ब ल' रचल गेल अछि।

एम्हर किछु दिनसं साहित्यमे शृंखला कविता बेसिए लिखल जा रहल अछि। एहि संग्रहमे तीन गोट शृंखला कविता सेहो अछि पहिल शृंखला 'माए' अछि जाहिमे दू टा कविता, दोसर शृंखला 'पिता' मे पांछ टा कविता आ आ तेसर शृंखला 'अनन्ता' मे तीन टा कविता देल गेल अछि। अनन्ता शृंखलाक तीनू कविता परस्पर अलग अलग विषय ल' लिखल गेल अछि मुदा 'माए' आ 'पिता' शृंखलाक कविता शीर्षक अनुसारे पात्र गढ़ि कवि अपन संबंधके दर्शेबाक प्रयास केने छथि। ई शृंखला कने कमजोर सन लागैत अछि, कारण जे सभक विषय वस्तु एके रंगक अछि मात्र घटनाक क्रमिक विकास भेल अछि एहि सभमे। जं सभक बिम्ब अलग रहितय त' बेसी आकर्षक शृंखला भ' सकैत छलै।

कविताक भाषा एकदम सपाट अछि। बिना कोनो बेसी आहे-माहे केने कवि शब्दसं शब्द जोड़ैत हल्लुक हल्लुक वाक्य बनैत अंतमे सीधे चरमपर पहुंचा अपन बात प्रमाणित करैत छथि। सभटा कवितामे एहन विशेषता अभरैत अछि। एहि कारणे कविताक अंत एकर आरंभसं बेसी चहटगर लागैत अछि। हल्लुक मतलब ई नै जे कमजोर। एकर मतलब अछि जे अहां बिना कोनो बेसी दिमाग खर्च केने भाव बुझि सकै छी। एखन नव कवितामे पाठक लेल सभसं बेसी समस्या कहबाक अर्थ बूझब अछि। ओना पूरा पढ़लाक बाद एहि बात पर असहमत नै भ' सकब से विश्वास अछि। ■

लेखक / प्रकाशकगण केर ध्यानार्थ

'तीरभुक्ति' मे समीक्षा प्रकाशनार्थ अपन नव पुस्तक अथवा पत्रिका केर कम सं कम दू प्रति समीक्षा अनुरोधक संग संपादकीय कार्यालय पठाओल जा सकैछ। विशेष जानकारी वास्ते 9911364316 अथवा 9213152822 पर संपर्क कएल जा सकैत अछि।

– संपादक

मध्यवर्गक स्वप्न मे इंद्रधनुषक छटा

✍ दिपेश कुमार यादव

कविक पहिल कविता-संग्रह साहित्यक दुनिया मे सामान्य रूप सं अपरिपक्व मानल जाइत अछि। पाठक त' नहि मुदा आलोचक कोनो नव कविक संग्रह कें नहि देख' चाहैत अछि। आ एकर पाछां एकटा ठोस कारण सेहो अछि। कविताक क्षेत्र मे ततेक बाढ़ि आबि गेल अछि, जे नीक कविताक बेराय क' अलग केनाय, घासक उफनैत बाढ़ियो मे कुछ कवि छथि जिनक कविता दूरेसं चमचमाइत बहि रहल छैक। डॉ. सत्येन्द्र कुमार झाक कविता वैह चमचमाइत कविता अछि। हुनक पहिल कविता-संग्रह होइतो, ई हुनक पहिल पोथी नहि थीक। आ एकटा बात आओर जे सत्येन्द्र जी साहित्य आ कला दुनू के पैघ नाम सेहो छथि।

सीएम साइंस कॉलेज दरभंगाक, मैथिली विभागक प्राध्यापक रहितो थियेटर सं जुड़ाव आ साथे-साथ विभिन्न विधा मे निरंतर रचना हुनक साहित्य आ कलाक प्रति निष्ठे देखबैत अछि। आब एहि बात मे कोनो शंका नहि जे सत्येन्द्र जीक कविता कोनो अधपक्कल कविताक संग्रह नहि थीक, तैं नहि त' पाठकगण कें आ नहि आलोचक के मुंह-नाक सिकोड़बाक आवश्यकता अछि।

सत्येन्द्र कुमार झाक कविता-संग्रह 'स्वप्न मे इन्द्रधनुष' मुख्य रूपसं मध्यवर्गक कविता अछि। शहर मे मध्यवर्गक अकेलापन आ समानांतर रूप सं अप्पन गामक स्मृति सेहो संग्रहक केंद्र मे अछि। आब अहां सभ धोखा नै खाऊ

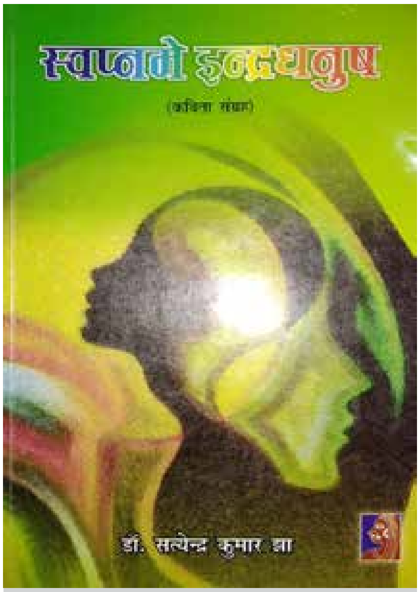

स्वप्न मे इंद्रधनुष

रचनाकार	:	सत्येन्द्र कुमार झा
प्रकाशक	:	मैलोरंग प्रकाशन, दिल्ली
वर्ष	:	2018
मूल्य	:	₹ 150
पृष्ठ	:	104
विधा	:	कविता संग्रह

जे ई सभ त' हिंदी कविता मे साठि साल पहिले लिखल जा चुकल अछि। त' कि फेर कि ई सभ हुनक अनुकरण थीक? आ मैथिली कविता हिंदी कविता आ आओर कोनो भाषाक कविता सं पाछा चलि रहल अछि? ऐहेन कोनो बात नहि अछि। एहि संग्रहक सभ कविता वर्तमान कविता थीक। सबसं पहिल कविताक पहिल कुछ पांति देखू-

"एकसर, श्मशानी नीरवताक संग
बनैत अछि शहर मे कोनो नव घर
जत' नहि होइछ
मायक ममता, बापक दलान
भौजीक हाथक रोटी"

('शहर मे बनैत मकान')

शहर मे सभ क्यो स्वतंत्र अछि। जतेक स्वतंत्रताक मनुष्य के चाही, ओहि सं बहुत बेसी स्वतंत्र अछि शहरक लोग। आ वैह 'आवश्यकता सं बेसी' स्वतंत्रताक कीमत 'मायक ममता, बापक दलान आ भौजीक हाथक रोटी' बेच क' चुका रहल छथि।

शहर मे रहितो व्यक्ति आपन गाम के कहियो नहि बिसरैत अछि। हुनक दिमाग मे शहरक मकान आ गामक घर मे कपार फोड़ा-फोड़ी होइत रहैत अछि। गामक घर टूटि जाइत अछि आ शहरक मकान अट्टहास ल' क' हंसैत रहैत अछि। मुदा गामक घर केर भंगठी मे कतेक समय? तुरन्ते ढहि जाइत अछि शहरक मकान केर सामने। दिमाग मे होइत ई अनंत युद्धसं गामसं आयल व्यक्ति परेशान छैथि-

"भोरक सपनामे ओकरा,
ओकर गाम देखाइ पड़ैत छै
आओ केर उठिक' बैसि जाइत अछि
भ' जाइत अछि जीवित
ओहि दिनक लेल।"

('शहर मे बनैत मकान')

रौद आ अंगना, दुनू मे से एक्को टा शहर मे नहि भेटैत अछि। रौद मे ठाढ़ि

दिपेश कुमार यादव दिल्ली विश्वविद्यालयमे हिन्दीक छात्र छथि। हालहि में एम.ए. हिंदी प्रथम श्रेणी से आ यूजीसी नेट परीक्षा सेहो उत्तीर्ण भेल छथि। मैथिली साहित्य आ खासक मैथिली कवितामे विशेष रुचि।

***संपर्क** : म.नं. 176, गोपालपुर गांव, नई दिल्ली-110009*

***मो.** 7532970980*

होयबाक लेल और बैसबाक लेल शहरक लोगके सेहन्ते लागल रहि जाइत छै। मुदा ई मात्र सेहन्ते नहि थिक, जीवनक परमआवश्यक वस्तु थीक जे चाहबे करी। तैं द्वारे कवि लिखैत छथि-

''चलू, थोड़ेक अंगना कीनि लैत छी''

('अंगना मे जीवन')

ई बात जनितो कि अंगना नहि कीनल जा सकैत अछि, कवि लिख रहल छैथि। जेहिना ई सोचनाय शहरी व्यक्तिक व्यथात्मक विवशता अछि, तहिना लिखनाय कविक रचनात्मक विवशता अछि।

विस्थापनक समस्या कोनो नव समस्या नहि थिक। विस्थापनक नाना रूपमे लोक अपन-अपन सुविधा सं फंसैत जाइत अछि। जाहिमे सभसं कोमल आ फुसलाब' बला रूप अछि- रोजगार। नौकरीमे गामक व्यक्ति तेहेन रमि जाइत अछि जे पाबनि-तिहार सभ बिसारि क' कामक पाछां अपस्यांत रहैत अछि। ओ सभ पाबिनी मे कहैत छैक- अगिला बेर जायब, अगिला बेर जायब; मुदा अगिलो बेर कहियो आबैत अछि? कतेक सच्चाई सं कवि दुनू दिसक सांच लिखने अछि-

''जे नहि आयल अछि अहूबेर पाबनि मे गाम
जे एतुका किछु संबंध ताकि नेने हैत ओतहि''

('अंगना मे जीवन')

एकटा तटस्थ कविक वैह काज होइत अछि जे दुनू कातक सांच के लग' मे जाक' देखी आ बिना बेसी लगा-बुझाके, सभक सोझां परोसि दी। बुझा रहल अछि जे कवि गाम आ शहर केर जोड़' वाली रेल मे बैसल छथि आ खन इम्हरक त' खन ओम्हरक सांच देखबाक प्रयास क' रहल छथि। सांच देखबाक बाद कवि एकदम अकचका जाइत अछि। इम्हर गाम मे अभावपूर्ण सुखद जीवनक चित्र आ ओम्हर शहर मे ऐश्वर्यसं भरल दुखद जीवन चित्र। ओ चाहैत अछि जे दुनू अलग-अलग चित्र केर एक साथ मिला दी- एकदम इन्द्रधनुष जकां मिश्रण। कामना आ स्वप्न केर साथ ई कविक अति भावुक फैंटेसी सेहो थिक। ऐहि पांति के देखल जाउ-

''कते नीक होइतैक जे
एकहि आंगनमे खेलैते
रौद, बरखा आ शीत,
मोन जुड़ैतै पिता मौसमक
नहि ठाढ़ होइतै देवाल कालक।''

('रौद')

रंगमंचसं संबद्ध होबाक कारणे सत्येन्द्र जीक बिंब, रंग, प्रतीकादि पर विशेष अधि कार अछि। एकटा बिंबसं अनेक प्रकारे प्रतीक आ एकटा प्रतीकसं अनेक प्रकारे बिंब बनाक' ओहिमे रंग भरनाइ सेहो हुनक विशेषता मे शामिल अछि।

संपूर्ण पोथी मे एकटा अनवरत संघर्ष चलि रहल अछि। वास्तव मे जे संघर्ष बाहर बुझा रहल अछि, ऊ बाहर कम आ कविक मोनमे अधिक अछि। शीर्षक सं शब्द उधार ल' क' कही त' स्वप्नक 'रैंडमनेस' आ इन्द्रधनुषक निश्चितता दुनू संगे-संग कविक मोनमे कछर-मछर क' रहल अछि।

जे व्यक्ति शहर अथवा गाम कोनो एके टा सं संबद्ध अछि, ओकरा लेल दोसर बड्ड पैघ रहस्य बनल रहैछ। दुनू सं संबद्ध रहलाक बादो व्यक्ति कते बेर एकेटा के चीन्ह पाबैत अछि। माने एकटा दोस त' दोसर दुश्मन। क्यो कहैत अछि जे शहर बड्ड संवेदनहीन होइत अछि त' केकरो शहरक भीड़ सं समस्या। ओहिना गामक बारे मे सेहो प्रचलित अछि। कोनो महाशय के गाम मे शुद्धरूपसं गरीबी आ जहालत देखाय द' रहल छै त केकरो मुरुख-चपाट लोग। मुदा गाम आ शहर केर बीच एकदम तटस्थ भ' दुनू पर एक तरहें दृष्टि बनेने एकटा कविक पास दोसरे अनुभव मिलत। ओ चाहै छथि जे गाम आ शहरक बीच कोनो दवाल नहि रहय। एकटा प्रतीक देखल जाउ-

''फूलक अपन सुगंधि छै
कांटक अपन चुभनि छै
बेर-बेर गड़ैत अछि कांट
तखन एकबेर गमकि उठैत अछि फूल।

('फूल और कांट')

'भूख आ बजार' कवितामे गाम आ शहरक बहस केर धांगि के एकटा नव तानाशाह आयल अछि। ककरो नहि गुदाने बला ई तानाशाहक नाम थिक-बजार। कहिया, कोन गल्ली-कुच्ची दने ई आबि गेल सेनै पुछू। जै सभ्यता-संस्कृति मे तीमन-तरकारी के कहियो कमी नहि भेल, रैह धरती आय उदास छै। बारी केर ओल, टोकना, खम्हरुआ, रामझुगनी, सजमैन, घीरा, कुमहर, कदीमा, पटुआ, बथुआ, मधकुरनी, तिलकोर कत' गेल? सब बिला गेल बारी सं, मुदा बजारमे कत' सं आयल? एइ सभ चीज के बारी से बजारमे जाइत क्यो नहि देखलक। नहि देखलक तें आदमीक संगे-संग तरकारी बला झोरा सेहो उदास अछि-

''झोराक उदासी देखि
पिता कातमे चुपचाप ठाढ़ छथि
आ सोझां, लोकक भीड़ संग
बजार चिचिया रहल अछि।''

संपूर्ण पोथी मे एकटा अनवरत संघर्ष चलि रहल अछि। वास्तव मे जे संघर्ष बाहर बुझा रहल अछि, ऊ बाहर कम आ कविक मोनमे अधिक अछि। शीर्षक सं शब्द उधार ल' क' कही त' स्वप्नक 'रैंडमनेस' आ इन्द्रधनुषक निश्चितता दुनू संगे-संग कविक मोनमे कछर-मछर क' रहल अछि।

''कखनो-कखनो गजबे होइ छै
वियाहक गाड़ी आ एम्बुलेंस एक संग दौड़ैत
अछि सड़क पर,
दुनूक गमिमे हड़बड़ी देखबामे अबैछ
छूटि ने जाय वियाहक मुहूर्त

छूटि ने जाय प्राण,
वेंटिलेटर पर सांस लैत मरीजक।''
('एहि कालखण्डमे')

दुनू गाड़ी एके व्यक्ति के मोनमे दौड़ि रहल छै। जे सड़क पर गाड़ी चलि रहल अछि ओ सड़क कतौ बाहरि नहि, कविक मोने मे अछि। ओ चाहि रहल छथि जे दुनू गाड़ी के अपन-अपन मंजिल तक पहुंचा दी, मुदा ई कोना संभव होयत? एकेटा व्यक्तिक दुई व्यक्तित्व अलग-अलग गाड़ी हांकि रहल छथि। एकदम हिन्दी कवि मुक्तिबोधक कविता 'अंधेरे मे' केर पात्र जकां, एकेटा होइतो दू रूप मे बेर-बेर सोझांमे आबि जाइत अछि। एक व्यक्ति के जे दू रूप देखा रहल अछि, ओ दू नहि, तीन टा अछि। तेसर ओ, जे दुनू के बीच सामंजस्य बैठाबक कोशिश क' रहल छथि। कखनो एसगरे मे, कखनो दुनू मे त' कखनो तीनू मे संघर्ष होइते रहैछ आ वैह कविक कवि-कर्म थिक।

'इतिहास लाभे वर्तमान' कविता मे कवि इतिहास आ वर्तमान केर संघर्षक गाथा सुना रहल छथि। कवि वर्तमानक सीमान पर ठाढ़ि भ' इतिहास देख रहल छथि आ ओ चाहि रहल छथि जे ई सीमानक लकीर मेटा जाय। जखने कवि इतिहास मे जेबाक कोशिश करैत अछि, तखने इतिहास जोर सं धकलि दैत अछि आ वर्तमान हुनक हाथ सेहो झिकैत अछि। वर्तमान आ इतिहासक एहि युद्धमे भविष्य सेहो प्रभावित होइते अछि-ई संकेत कोनो छोट-मोट इशारा नहि थिक-

''पुरान चित्रकें चीरि-चारि
कतौ फेकि अयबाक हड़बड़ीमे
भविष्यक कैकटा चित्र संगहि फाटि जाइछ
इतिहास सेहो कलंकित भेल मूड़ी नत क' ठाढ़ रहैछ
वर्तमान इतिहास ओ भविष्यक मध्य औनाइत रहैक।''
('इतिहास लाभे वर्तमान')

'पिता' कविता एकटा आओर नव रंग ल' क' उपस्थित होइछ। मुदा इहो रंग इंद्रधनुषके एकटा रंग अछि-

''स्थितमुख देखबा लेल औनाइत पिता
जाधरि क' पाबैत छथि कोनो ओरियान
ताधरि संतान अपन हिस्साक हंसी, हंसि चुकल रहैछ
पिता हंसीक नव किस्तक स्वप्न बुन' लगैत छथि।''

परिवार टुटनाय केर घटना आ टुटला के बादक दुनू दृश्य साथ-साथ एहि कवितामे अछि।

संपूर्ण पोथी के 'जूम इन' के तरहें देखल जा सकैछ। गाम आ शहरक विभेद-संघर्ष सं प्रारंभ भ' क' कविता परिवार केर रस्ते व्यक्तिक अंदर प्रवेश करैछ। पुनः व्यक्ति के कैक खंड मे खंडित क' हुनक मध्य संघर्ष देखाबैत अछि। वर्तमानक लगभग सभ पैघ समस्या केर समटैत ई पोथी समाजक आभा प्रतिबिंबित करैछ। उम्मीद क' रहल छी जे एहिपोथी सं नहि केवल मैथिली कविता समृद्ध होयत, बल्कि अन्यान्य भाषाक साहित्य सेहो समृद्ध होयत।

'स्वार्थ' शब्दक परिभाषा गढ़ैत कविता अछि- 'ठंड-ठंड इजोत'। एकर पांति अछि-

''भनसाघर मे राखल अछि एक गोट कोठी
कोठीक माथ पर पजरल अछि दीप
दीपक तेल देनिहार ओहि गृहणीकें
नुआमे लगैत अछि आगि ओहि दीपसं
ठमकि गेल अछि भाव, भभैक गेल अछि स्वार्थ

स्वार्थ वस्तुनिष्ठ अछि, भाव रहित।''

संपूर्ण विश्वमे छायल अराजकता 'थिक सत्य एतबे' कवितामे कवि तेहेन पिरौने छैक कि एक-एक पांति शोणितमे जा' क' फेंटा जाइत अछि।

''मनुक्खक आंखि भेल जा रहल छै लाल टरेस,
पूरा आंखि लाल, मात्र पुतलिएटा कारी
लाल आ कारीक संयोग
संहार आ संपूर्ण विनाश।

मुदा ई सत्य थिक
इयेह टा सत्य थिक
जे-हेंजक-हेंज मनुक्ख पीबि रहल छै
ड्रामक ड्राम शोणित।''

'स्वप्न मे इन्द्रधनुष' कवितामे संपूर्ण पोथीक कविताक सारांश अछि। कविक अनेक भावना, आकांक्षा आ स्नेह ऐहि कविताक शब्द-शब्द मे गुंथल अछि-

''यदाकदा हम इन्द्रधनुष छूब' चाहैत छी
आ सूर्यक दिस अपन हाथ बढ़बैत छी
हमर स्वप्न मे वैह इन्द्रधनुष हमरा लोभबैत अछि।''

ई इन्द्रधनुष कोनो साधारण नहि अछि। अनेकानेक रंगक साथ ई इन्द्रधनुष स्वप्न मे आबि आओर विशेष भ' जाइत अछि। स्वप्न मे कोनो वस्तुक एकटा निश्चित आकार आ परिभाषा नहि थिक, ओ छन-छन मे बदलैत रहैछ। इन्द्रधनुषे जकां एहि पोथी मे अनेक रंग समायल अछि जे सुरुजक किरण सं चमैक-चमैक जाइछ।

संपूर्ण पोथी के 'जूम इन' के तरहें देखल जा सकैछ। गाम आ शहरक विभेद-संघर्ष सं प्रारंभ भ' क' कविता परिवार केर रस्ते व्यक्तिक अंदर प्रवेश करैछ। पुनः व्यक्ति के कैक खंड मे खंडित क' हुनक मध्य संघर्ष देखाबैत अछि। वर्तमानक लगभग सभ पैघ समस्या केर समटैत ई पोथी समाजक आभा प्रतिबिंबित करैछ। उम्मीद क' रहल छी जे एहिपोथी सं नहि केवल मैथिली कविता समृद्ध होयत, बल्कि अन्यान्य भाषाक साहित्य सेहो समृद्ध होयत। ■

पाथरक शहरमे भेदभाव पर धारदार प्रहार

✍ सोनी नीलू झा

नन्दिनी पाठक सदति साहित्यक परंपराकें जीबैत एलीह अछि। ओ 1978 सं निरंतर सृजनरत छथि मुदा पोथी बड़ विलंब सं आएल!

हुनक पहिल पोथी पाथरक शहर मे छन्हि। जाहि मे 58 गोट कविता अछि। पोथीक कविता पहिल बेर मे उपरा - उपरी लागैत अछि, मुदा जखन कविता मे नुकाएल एक एकटा अर्थकें तकबाक प्रयास करत तं ई मारुख व्यंग्य के धरगर कविता लागत जकर उद्देश्य सुधार वादी अछि।

हुनकर एहि पोथीक एक-एक टा कविता मानवीय संवेदना आ राजनीतिक-सामाजिक आ आर्थिक स्तर पर चिर्रिचोंथ अभिव्यक्ति अछि आ एहि संकटग्रस्त परिस्थिति मे जखन भाइचारा आ सद्‌भावना के अभाव से परिवार आ समाज दुनू संबंधक माधुर्य या सिनेह सं वंचित भ' रहल अछि आ मनुष्य स्वार्थक मोहपाश मे लेपटाएल खिलौना मात्र बनल अछि, तहन एहन अकलबेरा मे कवयित्री अद्‌भुत व्यंग्यात्मक शैली जे की महिलाक लेखन मे पढ़बाक लेल प्राय: नहि भेटैत अछि, ओ बड़ सहजता सं अपन कवि धर्म के निर्वाह क' रहल छथि आ परिवारिक आ सामाजिक आवश्यकताके बुझएबाक प्रयास करैत छथि।

हिनकर कविता मे समाजवादी दृष्टिकोण आ आर्थिक विपन्न वर्ग लेल चेतन आ चिंतन सहजहि अकानल जा सकैत अछि। संगहि वर्ग आ वर्ण दुनू स्तर पर जे भेदभाव आ मनुष्यताक अभाव अछि ओ स्पष्ट हिनकर किछु कविता

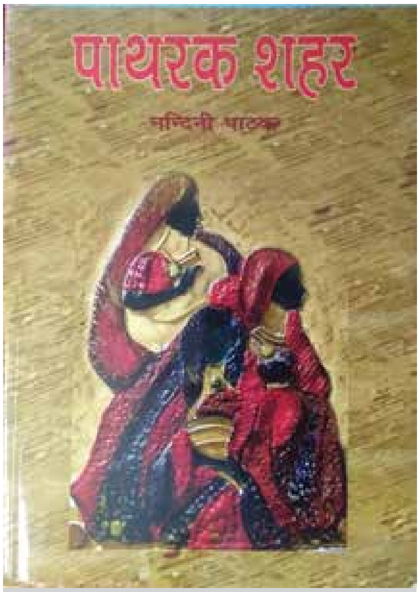

पाथरक शहर

रचनाकार	:	नंदिनी पाठक
प्रकाशक	:	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
वर्ष	:	2019
मूल्य	:	₹ 100
पृष्ठ	:	158
विधा	:	कविता संग्रह

मे अभरैत अछि। जाहि मे रिफ्युजी, प्रेमक कविता, नव संरचना, बुधना मजुर, उक्कापाती आदि अछि-

टुनमा बहु केर रोटी पाकत
टुक टुक ताकत टुनमा बाप
ककरा टुनमाक बौह खुएतै
आंचर छै अभिशाप
भरतै बापक पेट तं टुनमा तकतै
दू टा पेट भरै लेल टुनमा झखतै
कोना क' पढ़तै टुनमा बच्चा
साहित्य छन्द कवित्त
पेटक पकरने दुनू हाथे
नै सरस्वती नै लक्ष्मी तृप्त
कि लक्ष्मी घर दरिद्रा बाहर
दूओ ओकरा लेल अघाती
मिझाएल दिप मे जरल मनोरथ
भेल नहि उक्कापाती।

'नव संरचना' जाहि मे कहब छनि जे जातिसं उच्च होइत अछि कला, गुण, आ शिक्षा, सोभाविक छैक मानवतासं पैघ किछु नहि, वैह व्यक्ति मनुष्य कहबा सकैत अछि जिनकामे मानवता बांचल छैक अखनहुं।

कवयित्री एहि कविता मे कहै छथिन-

शुद्रक कन्यां हाथ पकरत ब्राम्हण युवाकें
आ अपन सत्कर्मसं
ओहि ब्राह्मणक मांथ पर
करती शब्दक छेनी आ अर्थक हथौड़ी सं
कलात्मक प्रहार
ताहि कला सं निकस' बला हेताह, एकटा
पुरुषक आकृति
फुंकल जाय्त जाहि मे प्राण
तकर नहि होएत कोनो जाति
से अजाति जन्म देत एकटा मनुखक जाति
से अजाति जन्म देत, एकटा स्त्रीकें पुन:
उत्पति होयत ब्रह्मांड मे श्रेष्ट सं श्रेष्ठतर
सुरक्षित होएत जाहिसं गाम, आ शहर
से जाति रक्षा क' सकत अपन
तकरा देखि मनोबल भगबानो के नहि
हेतैन कम
से हेता मनुष्य आ मनुष्यता होएबाक पहिल
शर्त होइत अछि सह्रदयता आ स्वाभिमान,
नहि कि अभिमान।

हिनकर किछु कविता सभ स्त्री

सोनी नीलू झा, साहित्यकार आ रंगकर्मी छथि। मातृभाषा मैथिलीमे कविता, कथा आदिक नियमित लेखन।
***संपर्क** : मेन रोड, मंडावली, फाजलपुर, नई दिल्ली-92, **मो.** 8920445915, **ईमेल** : soninilu26@gmail.com*

विमर्श पर सेहो छन्हि जाहि मे 'पराश्रित' 'पियाक प्रेम' 'सहनशक्ति' आदि अछि।

कवयित्री अपन भाव व्यक्त क' रहल छथिन जे अपन मिथिलामे मैथिलानीके मौन भ' सभकिछु मे अपन स्वीकार्य भाव के समवेत करब बाध्यता होईत अछि। खाहे जीबन मे कोनो व्यभिचारी आबि जानि वा सतपुरुष, हुनकर बाध्यता अछि पति के शरण मे अपनाकें राखब। विरोध कएला पर सभ मिल ओहि स्त्रीकें दबेबाक प्रयास करैत अछि। भीषण-भीषण व्यभिचार के सहि जेबाक बाध्यताक वर्णन एहि व्यंग्यात्मक कविता 'पियाक प्रेम' मे देखल जा सकैत अछि

अहां हमर बनारस
हम अहांक अस्सी घाट प्रिये
अहां बुझू हम्मर ठाठ प्रिये
अहांकें डुबेबा काल मे हमर
भैयारी आठ प्रिये
जे मानत हम्मर बात जिये
साक्ष्य ने राखु हाथ प्रिये
बन मुर्गी संग मे आनब
हम हरिया पीबि क' मानब
अहां कानब तं कानब
अहां स्त्री मे सर्वोत्तम जाति प्रिये
साक्ष्य ने राखब हाथ प्रिये।
ओतए 'सहनशक्ति' कविता मे कहए छथिन:
गरम टिन सन धिप्पल जीबन होइत अछि
स्त्रीक जीबन

किछु एहन चीजक संरचना करबा मे बना लैत छथि अपन आदति जे देखि बाध्य होमय परैछ अपनो कहियो, दोसराक हित लेल अपन अघात सहैत बात-बात पर, जतए भावनाकें चोट सहए परैछ ओकरा से आब कहिआ धरि?

हिनक कहब छनि:

पराश्रित जीवन यानी दोसर पर आश्रित रहब दुख घोंटहि पड़त तें धैर्यकेर चद्दरि ओढ़ैये पड़त, प्रेम भाव चाकरी छैक ई मोन के बुझाबहे टा पड़त जं अहां पराश्रित छी आर्थिक रूपसं पति पर निर्भरता अछि तं अहांक प्रेम के असहाए मजबुरियेटा बुझल जाएत ताहि सं आर्थिक स्वतंत्रता हासिल क' क' तखनि परिवारक जीवन निरमाह करब श्रेस्यकर जाहि मे प्रेमक अस्मिता बचल रहत।

किछु कविता मे बदलैत परिवारिक समाजिक स्थिति मे बुजुर्ग पर पजरैत अवहेलनाक करिया बदरी कें ई एतेक नीकसं देखबैए छथि कि मोन मुस्किया उठैत अछि जेना कविता 'खटा-खटी' मे-

सूतू मैयां खटा खटी
बड़ पैघ भ' गेल बेटा बेटी
आब पलंग केर आस जुनि करु
आब पटिओ पर विश्वास जुनि करु
पसरिक' सूतब बिसरि जाउ
दोग मे घुसकैत धीरे - धीरे
धरती सं अहां ससरि जाउ।

कविताक शीर्षक 'पाथरक शहर' मे जहन आगू बढ़ैत छी तं पाथरे सन सभ लगैत छैक, आ तैयो बुझिओ क' हमसभ पाथरे पुजैत छी। एहि शहर मे माताकें छोरि सभ पाथरे सन...सेनुर सं सिनेह धरि पिता पित्ती पाहुन सभहक सिनेह खंडित होइत बुझाइत छनि एतए घाव पर नोन छिटनाहरक कमी नहि, पाथरे मनुक्ख आ पाथरे गाम सं शहर धरि आ जं पाथर सं पाथर टकराओत तं लुत्ती उड़त आ आगि डराओत जकर परिणाम होएत आदर अपनापन सिनेह दुलार आपक्ताक नाश होएत। बिम्ब सं गज्जल ई पोथी पढ़ि मोन कखनो हंसय पर मजबुर क' दैत अछि तं कखनो चिंतित।

मैथिली मे कएकटा कविता जाहिमे प्रेम अछि तं किनको कलममे विद्रोहक स्वर अछि तं किनकोमे व्यथा, मुदा स्त्रीक कलम सं व्यंग्य निकलब कठिन रहैत अछि जे हम नंदिनी पाठक जीक पोथी मे पढ़लहुं। पाठकक आगु हिनकर व्यंग्य परसब पाठक लेल रोचक अछि।

अह्लादित करैत अछि ई जे एहि पोथीमे राजनीति होइ वा सामाजिक होइ वा परिवारक होइ, वा कटुता भरल समाजक कुटिलता होइ, सभ रंगक स्वाद भेट जाति अछि। जतए कहैए छथिन।

अपन समाज मे आब देखबाक भेटैत अछि वेलेन्टाइन 'डे' तं फ्रेंड 'डे' अपन संस्कार, अपन संस्कृतिक अपन पाबैन तिहार कें बिसैर आ 'डे' मनबैत छथि... 'डे माने की' कविता अद्भुत कविता अछि जतय जटिल होइत जीवनमे भावना आ प्रेम दर्शेबाक लेल व्यक्ति सभ पाश्चात्य परंपरा सं प्रभावित भ' सब चीज लेल एकटा दिन तय क' लेने छथि आ एहि सं कवयित्री के आपत्ति छनि आ एहि आपत्ति के ओ बहुत नीक सं अपन कविता मे दर्शाबैत छथि।

कवयित्रीक नजरि धर्मक ठेकेदार सं सरकारी ठेकेदार सभ पर अछि जे हिनक कविता 'तुरही' मे किछु पांति मे देखल जा सकैए

पाइक बाजै तुरही
पाइक तीर्थ पुरी ई
प सं पंडा प सं पुलिस
प सं पापी चारू दिस
प सं पैसा तरहथ पर
राखु पांच नमरी जगन्नाथ रथ पर।

हिनकर व्यंग्य आ विचारधारा दुनू मे कखनहुं कखनहुं द्वंद्व देखार पड़ैत छनि। कविता सभ कखनहुं परंपरा आ कखनहुं संस्कृतिक पक्षधर बुझाइत अछि तं कखनहुं ओ एकर विरोध करैत अछि आ नव चेतना केर स्वागत लेल स्वर रखैत अछि जेना कि कविता 'बसंतक इच्छा' छैक

हमर भारत संस्कार केर
बड़का पुरना गाछ
सहलक पुरना गाछ बहुत
गाछक आब समीक्षा छै
झड़' दियौक सभ पात
बसंतक इच्छा छै।

कवयित्री के जतबे लिखब केर गुण छनि ओतेक मूर्तिकला चित्रकला सभ चीज मे परांगत छथि से हिनक परिचए पढ़ि प्राप्त होइत अछि। हिनकर कविता सभमे सुक्ष्म दृष्टि चारू कात अभरैत अछि जतए कखनो हिनकर विषय वस्तु भनसा घर तं कखनो गाम नगर सं लए क' शहर तक पसरैत छन्हि, मुदा तकर बादो कनेटा बात के स्पष्ट करय मे किछु-किछु कविता मे अस्पष्टता सेहो अभरैत अछि। भाषा मे सहजता छन्हि, पाठकक लग पहुंचए के संप्रेषण छनि। ■

'फूजल आंखिक स्वप्न' मे प्रेमिल जीवनक उद्दाम लालसा

✍ रमेश

रोमिशा मैथिली कविता लेल नव नाम नहिं थिक। ओ 2004 ई. मे रोमिशा वत्स छलीह, जहिया 'इजोरियाक अडैठी-मोड़' (कवयित्रीगणक पहिल कविता-संग्रह, किसुन संकल्प लोक, सुपौल) मे हुनकर दस टा कविता छपल छल। फेर रोमिशा झाक नामें हुनकर कविता छपैत रहल आ आब ओ रोमिशा (मात्र) छथि। से उपनाम-यात्रा हुनकर जीवनक बंधन-मुक्ति-यात्रा, आ साहसक परिचायक थिक। मुदा हुनकर प्रथम काव्यपोथी अयबा मे, पन्द्रह वर्ष अवश्य लागि गेल, जाहि मे 2004 ई. मे प्रकाशित ओहो कविता सभ शामिल कएल गेल अछि। 'फूजल आंखिक स्वप्न' एही वर्ष (2019 ई.) छपल अछि आ एही वर्ष एकरा पर विचार कयल जा रहल अछि, से पहिने तं नहिए होइत छल, एखनहुं प्राय: कम्मे पोथी पर भ' पवैत अछि। रोमिशाक एहि पोथी पर भ' पाबि रहल अछि, तकर एकमात्र कारण, पोथीक ध्यानाकर्षण-क्षमता, कविताक गुणवत्ता आ काव्यक प्रसाद-गुण अछि।

मैथिलीक नारी-काव्य पहिने कवि गणक कलम सं नि:स्सृत होइत छल आ आब मुख्यत: कवयित्रीगणक कलम सं सृजित भ' रहल अछि। परिस्थिति मे आयल से परिवर्तन स्वागतेय अछि। ताहि मे दर्जनाधिक कवयित्री योगदान केलनि अछि। इलारानी सिंह, नीरजा रेणु, शेफालिका वर्मा, वाणी मिश्र, विभा रानी, सुष्मिता पाठक, ज्योत्सना चन्द्रम्, कामिनी, मौसमी मुखर्जी, नूतन चन्द्र, वन्दना झा, कुमारी विद्या, मुक्ता, माला झा, शारदा झा, विजेता चौधरी, डॉ. विभा कुमारी, मेनका मल्लिक, निक्की प्रियदर्शिनी, मैथिलीक नारी काव्यक विविध स्वरक सुर-संगम वनौलनि अछि। ताहि मध्य रोमिशा अपन निजी स्वर स्थापित केलनि अछि। रोमिशाक जीवन मे साहित्य, कविता आ प्रगतिशील वैचारिकताक पृष्ठभूमि नीक रहल अछि। ओ कवयित्री-माता नन्दिनी पाठकक सुपुत्री, पैघ कवि स्व. किसुनजीक पौत्री, मिथिलाक प्रसिद्ध समाजवादी चिन्तक शैलेश कुमार पाठकक नतिनी (जिनका काव्य-पोथी समर्पित अछि) तं छथिहे, प्रसिद्ध वरिष्ठ कवयित्री सुस्मिता पाठक हिनकर मौसी (काकी सेहो) आ संपादक-प्रकाशक-कवि केदार कानन हिनकर मौसा (कलम-पापा) आ काका सेहो छथिन। रोमिशाक कवयित्रीक निर्माण आ विकास मे सुपौलक साहित्यक परिवेशक भूमिका असंदिग्ध अछि। अपन नानाजीक समाजवादी चिंतन, हिनकर कविता कें प्रगतिशील वैचारिकताक रस सं सराबोर क' देलक अछि।

18म-19म सदी मे फ्रांसीसी लेखिका सिमोन द नोउआर द्वारा प्रारंभ (साहित्य मे) नारी-स्वातंत्र्य- आंदोलन ('दी सेकेंड सेक्स' नामक पोथी:स्त्री उपेक्षिता) केर विश्वक सभ भाषाक साहित्य पर बहुते प्रभाव पड़ल छल। मैथिलीयोक कवि- कवयित्रीक मानस-लोक प्रभावित भेने बिना नहिं रहि सकल। मैथिलीक नारी-काव्य आ नारी-स्वर मे आक्रोश, पुरुष-प्रधान-व्यवस्थाक विरुद्ध विद्रोह खूबे स्थान पओलक। नीरजा रेणु आ शेफालिका वर्माक तं से मुख्य प्रतिपाद्य नहिं छल, मुदा शेष सभ कवयित्री मे एकटा मूल-स्वर पुरुष-प्रधान जड़ सामाजिक-तंत्रक विरुद्ध विद्रोह अवश्य रहल। कामिनी अपन अनेक काव्य-पोथी मे तकरे मुख्य प्रतिपाद्य बनौने छथि,

फूजल आंखिक स्वप्न

रचनाकार	:	रोमिशा
प्रकाशक	:	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
वर्ष	:	2019
मूल्य	:	₹ 100
पृष्ठ	:	110
विधा	:	कविता-संग्रह

लेखक, कवि, कथाकार आदि विविध भूमिका मे रमेश जीक निरंतर प्रखर उपस्थिति रहैत अछि। पांच कविता संग्रह, चारि टा कथा संग्रह, दू टा समीक्षाक, पोथी सहित कतेक रास साझी संग्रहक सर्जक।
संपर्क : ग्राम-मेहरा, जिला-मधुबनी, 847211 (बिहार)
मो. 7983409146, ईमेल : lekhakramesh18@gmail.com

जखनकि सुस्मिता पाठक, ज्योत्सना चन्द्रम, विभारानी, शारदा झा, मेनका मल्लिक, डॉ. विभा कुमारी, रोमिशा, तकरा संग आनो-आनो विषय कें अपन प्रतिपाद्य बना काव्य-सृजन मे विविधता आनने छथि। हिनका सभ मे विद्रोह-ताप पचि क' आयल अछि आ कविताक अनिवार्य तत्व सभक संग नीक संगम भेल अछि। से विद्रोह-तापो प्रगतिशील वैचारिकते थिक आ विद्रोहक लेल से परिस्थिति आइयो समाज मे कम-बेसी अछिये। एहेन बात नहिं छै, जे पुरुष-मानसिकता मे एकदम्मे परिवर्तन नहिं भेलए आ एहनो तथ्य नहिं छैक जे पुरुष-वर्चस्व-प्रवृति निर्मूले भ' गेल अछि। तें कोनो नारी-स्वर मे आक्रोश-विद्रोह एखन अबैत रहत। मुख्य बात अछि, उचित पाचनक संग आयब। से शारदा झा आ रोमिशाक कविता मे पाचनक अगिला चरण चयापचय (मेटाबोलिज्म) के संग आयल अछि। सेहो प्रेम-तत्वक संग संगम क' क'। 'प्रेम-कविताक बाद'क संग 'फूजल आंखिक स्वप्न' नारी-काव्य में, प्रेम कविताक प्रतिमान रचलक अछि, जखनकि नारी-जीवन, समाजक जीवन, जीवन-जगत आ आनो विविध विषय काव्य मे स्थान पओलक अछि। वर्जना तोड़बा मे आ सत्य कें आवरणहीन अभिव्यक्ति देबा मे रोमिशा जे साहस प्रदर्शित केलनि अछि, से प्रशंसनीय अछि। सेहो कविता मे, कविताक अधिकतम प्रतिशतक संग।

रोमिशा विद्रोह, नारी-स्वातंत्र्य-चेतना, स्त्रीक जीवन, स्त्री-पुरुष-संबंध, मिथिला-समाजक अन्यायपूर्ण निर्मिति, आ प्रेमतत्वक काव्यमय व्याख्या के अपन प्रतिपाद्य बनबितो, जीवन के समाज कें सम्पूर्णते मे देखलनि अछि।

रोमिशा मनैत छथि, जे नारी-शोषण आ नारी-मुक्ति कोनो नव विषय नहिं रहितो, मिथिला-समाजक जीवन मे परिवर्तन संतोषजनक नहिं अछि। से तथ्ये थिक। तें साहित्य लेल विषय बनल अछि एखनहु। कविता रोमिशा लेल पहिल प्रेम आ वर्जना तोड़बाक जीवट बला औजार उचिते थिक। अपन आत्मकथ्य मे रोमिशा अपन परिपक्व काव्य-वैचारिकता देखौलनि अछि।

कुल 58 टा कविताक मध्यम, अन्तर्दृष्टि सं, 'फूजल आंखि' सं जीवनक स्वप्न देखैत छथि रोमिशा। बन्द आंखिबला स्वप्न नहिं। से स्वप्न दुनू प्रकारक अछि। नारी जीवनक भयावहताक अतीत-वर्तमानक स्वप्न आ भविष्यक नीक नारी-जीवनक उद्दाम लालसाक स्वप्न। नारी-जीवनक दुनू प्रकारक स्वप्न मानवीय गरिमाक चेतना सं सम्पृक्त अछि। रोमिशा नारी के मानवीय गरिमा प्रदान करबाक पैघ अभियानी छथि। नारी मोनक बहु-आयामी काव्य-व्याख्या, जीवन आ सपनाक साहसिक काव्य-उपस्थापन लेल, ई पोथी मोन राखल जायत।

रोमिशा विद्रोह, नारी-स्वातंत्र्य-चेतना, स्त्रीक जीवन, स्त्री-पुरुष-संबंध, मिथिला-समाजक अन्यायपूर्ण निर्मिति, आ प्रेमतत्वक काव्यमय व्याख्या के अपन प्रतिपाद्य बनबितो, जीवन के समाज कें सम्पूर्णते मे देखलनि अछि।

कएटा कविता प्रेमक नव परिभाषा गढ़ैत, प्रगतिशील व्याख्या करैत अछि। कविता मे प्रेमक कौशलपूर्ण अभिव्यंजना करैत, प्रेमक चेतनापूर्ण विद्रोहक व्याख्या प्रस्तुत भेल अछि। जहिना विद्रोह-काव्य समतल जमीन पर, तहिना प्रेम-काव्य, धैर्यपूर्ण अभिव्यक्त भेल अछि। प्रेमक विभिन्न आसंग आ आयामक करुणापूर्ण काव्यमय व्याख्या, जीवन आ जीवंतताक संग भेल अछि, जे 'उब्बर-खाब्बर' नहिं, विद्रोह-ताप प्रेमरस मे सराबोर, मुदा अन्तर्लोक पर चोट करैत आयल अछि। ई प्रेमकाव्य, नारी-जीवनक प्रेम-यात्रा, प्रेमक काव्य-यात्रा, काव्यक प्रेम यात्रा, नारी-मोनक प्रेमिल काव्य-यात्रा, बहुरंगी आसंगक अदावला, झमटगर काव्य-छटायुक्त, एकहि संग बहुत किछु थिक। एकटा प्रवहमान काव्य-सरिता, नव-कविताक शिल्प मे, एहि संग्रह मे बहैत अछि। सेहो सुविचारित व्याख्याक संग।

प्रेमक नव अर्थ तकैत, रोमिशाक बेचैनी, कविता मे व्यक्त होइत अछि। कविताक नव अर्थ तकैत प्रेम, जीवनक नव-नव अर्थ तकैत कविता, जीवनक नव अर्थ तकैत प्रेम, प्रेमक नव अर्थ तकैत जीवन, जीवनक काव्य-मीमांसा, विद्रोहक मीमांसा, वस्तुतः नारी-मोनक छटपटाहटिक संगहि, जीवन आ काव्यक कारुणिक आनन्द, समानान्तर-समानान्तर चलैत अछि। मीरा आ महादेवी वर्माक विरह-भाव आकरुण-संवेगक आधुनिकतम रूप, सामाजिक आ पारिवारिक संलग्नताक संग, शारदा झा आ रोमिशाक कविता मे व्यक्त भेल अछि। प्रेम सं जीवन कें नेहाल करैत, आद्यन्त कविता सभक सार्थक संग्रह थिक ई। हिनकर विद्रोह-चेतना हो वा प्रेम, सेक्स हो वा कविता मे रोमांस, समाजक जीवन हो अथवा नारी-जीवन, सभ कथुक हिनकर खांटी अप्पन परिभाषा आ नजरिया अछि। से आश्चर्यक सृष्टि करैत काव्य-पूरित कविता सभ मिथिला-समाज, नारी-समाज, मैथिली भाषा आ साहित्य लेल, वर्जना तोड़ि मानसिकता-परिवर्तन लेल परम हितकारी अछि। मैथिल परिवार मे, मिथिलानी द्वारा, मिथिलानीक प्रेमक काव्य-मंथन, जीवनक प्रति उद्धाम लालसाक संग व्यक्त भेनाइ, मिथिला-समाज के संदेश-ग्रहण लेल बाध्य क' रहल अछि।

रोमिशा कें प्रगतिशील समाजवादी वैचारिकता अपन नानाजी सं विरासत मे भेटलनि, ताहि सं पैघ बात ई थिक, जे प्रगतिवाद परिपक्वतापूर्वक हुनका कविता मे आ काव्य-मानस-लोक मे पूर्णतः अन्तर्लीन भ' क', चयापचयित भ' क' आयल अछि। रोमिशाक 'मेटाबोलिक-प्रक्रिया' जबरदस्त अछि। हुनकर काव्य-मानस-लोकक पाचन-क्षमता प्रशंसनीय अछि। 'शोणितायल जिनगी' नामक कविता मे कवयित्रीक समाजवादी सपना निखरि क' आयल अछि, तं 'सर्वहारा' नामक कविता मे कवयित्रीक

राजनैतिक अवधारणा संशयविहीन रूप मे आयल अछि। सर्वस्व हरि कें बनल सर्वहारा, गोरथारी आ कबुरगाह के बीच पड़ल, दिशाहारा बनल अछि। ताहि दिशाहाराक खुदा, मस्जिद मे अजान दैत अछि आ गिरिजाघर मे ईसा बेबस ठाढ़ रहैत छथि। सर्वहाराक 'भीड़' अनेरो गाय (हिन्दू) आ सुग्गर (मुस्लिम) मे बंटि जाइत अछि। जनसामान्यवला एहेन व्याख्या ओहिना नहिं आबि आइत छै। रोमिशाक सौंदर्यबोध, प्रेमे जकां 'सामूहिक' अछि (नीति आ प्रेम) आ तें मृत्युगीत गेबाकाल ओ प्रेम-कविताक भयावह आह्वान करैत छथि। मृत्यु मे प्रेम आ मृत्यु सं प्रेम! कोनो 'बोल्डे' कवयित्री 'गर्भ' पर आ वीर्य (अपराजिता)क विरुद्ध जीवन आ प्रेमक बहन्ने कविता लिखि सकैत अछि। 'माय आ भगवती' दुनूक असगरपन, तखन प्रमाणित भ' जाइत अछि, जखन सिंगरहारक गाछ पर पसरल रहै छै भूआ। 'प्रेम आ वासनाक मध्य ठाढ़ स्त्री' सेक्स-भूखक 'स्टार्टर' आ 'मेन-कोर्स' दुनू बनल रहि जाइत अछि आ प्रेम 'मेन-कोर्स' नहिं बनि पबैत अछि। समाज मे बनैत 'ब्लैक-होल' मे दाम्पत्यक डूबबाक संभावना, पुरुषक वासनासक्त आत्मा कें चुरुक भरि पानि सं धोबाक बेगरता, स्त्री कें बिना छूने ओकर सुगंधक गीत कें प्रार्थना जकां गबैत रहयवला सुपुरुषक बेगरता, कविता मे व्यक्त क', रोमिशा पुरुष-समाज कें मानसिकता परिवर्तन आ सेक्सक कीमति पर प्रेमक चुनौती फेकैत छथि। जेना अपना समय मे विद्यापति पुरुष-संवर्ग कें माटि देने छलाह- 'सुपुरुष' बनवाक आ 'सुपुरुष नेहक'।

रोमिशा जीवनक 'कैनवास' पर चित्रकारी, कला, संगीत आ काव्यक सात स्वरक सिंफोनी बनाब' चाहैत छथि। 'मुक्ति आ बन्धन', 'स्वप्न', प्रेम मे 'डेराएल मोन'क वर्जना, प्रेमक 'विदा' गीत मे मोन धरैन समुद्रक गंगाजल-प्रवाह, 'प्रेम मे हैब' कें कविता मे अभिव्यंजना करैत, स्वत: निर्बन्ध भ' जायब, 'अहर्निशि प्रेम' मे मोन, संवादहीनता, अनिद्रा, स्वप्न, अन्तर्द्वन्द्व, अन्तश्चेतना, देह-धर्मक व्याख्या करैत, 'आत्मिक प्रेमक' ओकालति करैत छथि। 'भावना' मे प्रेमक समर्पण व्यक्त होइत अछि, तं चिड़ैक स्वातंत्र्य नारी, स्वातंत्र्यक प्रतीक बनैत अछि। 'अनिच्छित यात्रा' क 'ग्लोबल वार्मिंग' मे, धरती अपना कें 'निर्वस्त्र होइत' देखैत छथि। 'अधेड़ वयस मे प्रेम', 'आह आ वाह' के मध्य, अग्निपंछी 'फिनिक्स' बनि क' रहि जाइत अछि, जखनकि 'विरोध' माइग्रेनक दर्द (अधकपारी) आ अल्कोहल के बीच मे स्वयं सूति रहैत अछि। सम्बंधक 'दरकैत देबाल' सं 'बुदबुदाइत बुनबुना' 'बिना कहने, बिना सुनने' 'निश्छल' भावना 'महुआ' (मोह) जकां तूब' लगैत अछि। नवजात बेटीक माय, गर्भस्थ पुरुष-भ्रूणो सं डेराइत रहैत अछि (डर सं विद्रोह-चेष्टा) आ समाजक परिस्थिति आर बलात्कारमय होइत जाइत अछि, दिनो दिन। मरैत प्रेमक सुगंधक 'स्मृति' घोड़ाक टाप जकां छाती पर दौड़ैत अछि, तं 'इच्छाक पाथर' मे पुरखाक आत्माक चीत्कार सुनाइ दैत अछि। सदीक एकटा पैघ प्रश्न ई अछि जे, प्रेमक अनुवाद आंखि करैत अछि कि (आउ नृत्यकरी)? 'चुप्पी' मे प्रेमक करुण आर्तनाद, मोन मारि क' सुतैतो, मांछ जकां फूजल आंखिएं, अगिला जीवनक स्वप्न देखत, 'प्रेमक उद्‌गार' पर 'सृजनक दूभि' खोंसैत, रोमिशाक 'प्रेम' - विक्षिप्त निर्वस्त्र नायिका, प्रेतछाया बनि, अपन गर्भ उतारि क' गाछ पर टांगि अबैत अछि, तं मानव सभ्यताक नाम पर एकटा प्रश्नचेन्ह लटकि जाइत अछि। 'परंपराक दंश' टीसैत 'प्रेमक रेखा' जीवन-भरिक प्रेम-प्रक्रियाक इतिवृत्ति नपैत अछि, तं 'प्रतीक्षित प्रेम' 'स्वतंत्र गर्भक गीत' गबैत अछि, आ 'जीवन' सुन्दर प्रेम-क्षणिका बनि जाइत अछि। 'हंसी' मे गहींर दर्द-काव्य अछि, तं 'दंगा' गहींर प्रश्न समधानि क' फेकैत अछि। पति-पत्नीक अपन 'संबंध', 'स्त्री'-जीवनक कादो-स्नान, 'देह' बेचि क' महान् 'आत्मा' कीनैत अछि। 'पुरुषत्वक खंजर' सं विदीर्ण नारीत्वक 'अग्निपिंड' आ गर्भ मे 'बेचैनी'क गजल गबैत, चान अपन पूरा इजोत हृदयक गहिंराइ मे अजबारि दैत अछि, तं पौरुषक 'भ्रम' कें मात देबाक लेल 'चुल्हाक आगि सं लुत्ती उड़य लगैत अछि। 'तं कवयित्रीक आह्वान सटीक अछि, जे मैथिल कें भाषा बचबै सं पहिने भाषा सिखबैवाला कें बचायब जरूरी अछि, जाहि सं कोखिक नोर (मिथिलाक) समुद्र मे ने बिला जाय। वस्तुत: प्राक्-क्रिया आ रति-क्रिया, प्रेम नहिं थिक। प्रेम थिक जीवनक भीषण दु:स्वप्न कें भोगनाइ (स्त्रीक अप्पन चेहरा)। से प्रेम आ प्रेमिल, जीवनक उद्दाम लालसा कें, मिथिला-समाज, रोमिशा के अइ पोथी सं पढ़ि सकैत अछि।

रोमिशा सम्पूर्ण निर्वैयक्तिकताक संग, आत्मनिष्ठ विषय सभक वस्तुनिष्ठ भ' क', काव्यमय उपस्थापन केलनि अछि। मुदा हुनकर नवकविताक स्थापित एकशिल्पीय काव्य, शिल्पक अर्थ मे, वैविध्यक अभाव मे, शिल्प-प्रयोगक साधंस प्रदर्शित नहिं करवाक कारणें, एकरसताक शिकार भेल अछि। जखनकि कथ्य आ अन्तर्वस्तु, अभिव्यंजना आ रस-परिपाक मे, प्रसाद-गुणाक चासनीक निर्मिति आ ताहि मे काव्यक लवंगलता कें बोरए मे, हुनका अप्रतिम सफलता भेटलनि अछि। हिनकर काव्यक अन्तर्लय अविघ्नहत अछि। तथापि, किछु उकड़ अंग्रेजी-हिन्दीक शब्द सं बचनाय असंभव नहिं छल, जकर विकल्पो मैथिली मे उपलब्ध अछि। जेना-टॉक्सीकेटेड (बिखायल), डरल (डेरायल), हरसिंगार (सिंगरहार), एकाकीपन (एसकरपन), खिलनाइ (फुलेनाइ), महक (गमक), महुआ (मोह) से (सं) नरम (लरम) आदि...। एकटा कविता 'चलू गाम दिस' मे एको पांती कविता नहिं अछि, पूर्ण अभिधात्मक आह्वान अछि। ओ गद्य थिक, गद्यकाव्यो नहिं। मुदा, तकर सभक बावजूद, रोमिशाक जीवन-दृष्टि आ काव्य-दृष्टि, मिथिलाक नारी-जीवन, पुरुषक मानसिकता मे क्रांति हेतु आ मैथिली कविता लेल, अत्यंत प्रासंगिक अछि। ई पोथी मैथिली कविताक नारी-स्वर कें, बहुत सशक्त बनाबैत अछि। युवतम नारी-स्वरक, एकटा नीक बानगी थिक, रोमिशाक कविता। ■

मुख्य सं गौण हेबाक छटपटाहटि

✍ डॉ. विभा कुमारी

'विसर्ग होइत स्वर' युवा कवि प्रणव नार्मदेय केर प्रथम काव्य-संग्रह अछि, एहि संग्रह मे छत्तीस टा कविता अछि। सभ टा कविता ई भरोस दिएबाक तागति रखैत अछि जे आबए बला समय मे मैथिली काव्य परिमाण आ गुण दुनू दृष्टि सं आओर समृद्ध होयत। एकटा युवा नेनपन सं एखनि धरि अपन परिवेशक जे अनुभव करैछ, ओहि परिवेश मे रहैत ओकरा मोन मे जे रंग-बिरंगक भाव उपजैछ, जाहि मे कखनो आस बलवती होइछ, त' कखनो निराशा अपन पांखि पसारए लगैछ। ओहेन सभ तरहक भावक अभिव्यक्ति एतय भेटैत अछि।

संग्रहक पहिल कविता 'प्रेम छह तों' मे आत्ममुग्धता आ आत्मबोधक मध्य नेहक कनिकबेटा टुकरीक बिम्ब उपस्थित क' कवि प्रेमक अस्तित्व के घृणा पर स्थापित कय- *असतोमासद्गमय तमसोमाज्योतिर्गमयक* भाव-साम्य पूर्ण रूपेण उपस्थित करैत छथि। आत्ममुग्धता मनुक्खक मनुक्खताई छीन लैत छैक आ आत्मबोध ओकर मनुक्खताई कें व्यापक विस्तार दैत छैक।

कविक जे विशेषता एहि संग्रह सं फरिछा क' सोझा अबैत अछि, ओ अछि ओकर ईमानदार अभियक्ति। कतहु ओ किच्छो बढ़ा-चढ़ाक कहबाक चेष्टा नहिं करैत छथि। ओ एखन धरि जे देखल-सुनल-बूझल-गुनल तकरा शब्द देबाक एकटा ईमानदार प्रयास केलनि अछि। 'देखैत रहलै' ओहि वर्गक नव-पीढ़ीक आत्मविश्वासक चित्र अछि, जे वर्ग दुख कटैत-कटैत अपना मोन के पोलहा लेने छल जे ओकर दुनिया एतबे धरि छै। नवपीढ़ीक आत्मविश्वास पुरान पीढ़ीक जीवन मे आसक इजोत ल' अबैत छै।

विसर्ग होइत स्वर

रचनाकार	:	प्रणव नार्मदेय
प्रकाशक	:	नवारम्भ प्रकाशन, मधुबनी
वर्ष	:	2017
मूल्य	:	₹ 120
पृष्ठ	:	80
विधा	:	कविता संग्रह

कवि प्रणव मानव संबंधक मूल-भाव प्रेम कें हंसोथि-पसोथि क' जेना संचित करबाक प्रयत्न मे जुटल छथि जे कहुना ई परिवार आ समाज छहोछित होइबा सं बांचल रहै। कहुना मानव संबंधक मूल-आधार प्रेम भाव कें बचा ली आ उपयोगितावादी दृष्टि के उसारि सकी। मनुक्खक जन्म समाज मे होइछ, ओहि समाज मे ओकर व्यक्तित्वक निर्माण होइत अछि तें मनुक्ख के चाही जे ओ समाज लेल अपन सभ कर्तव्यक निमाह करैत एकटा एहेन वातावरण बनबैथ जतय संबंधक आधार उपयोग आ लाभ नहिं बल्कि प्रेम आ संवेदना हुए। 'चुमाओन' कविता मे आरंभ मे ओ समस्त विधि-व्यवहार पर प्रश्न उठबै छथिन, किएक ते एहि विधि-विधानक नाम पर एकटा अबोध बालक के जाति-वर्णक रास मे ओझरेबाक व्यवस्था कैल जा रहल अछि, कवि समस्त कर्मकांडक प्रति अरुचि आ घृणाक भाव प्रकट करैत छथि, किएक त एतहि सं एकटा स्वच्छ जल सन पारदर्शी आ पवित्र हृदय मे जाति-भेदक बिखक लत्ती रोपि देल जाइत अछि। मनुक्ख रूप जनम लए अपना कें मनुक्खे बनौने राखि सकब, एतहि सं एकटा चुनौती बनि जाइत अछि। एहि समस्त कर्मकांडक पीड़ा आ ग्लानि सं बहराइ मे मायक आशीर्वाद आ दुलार सहायक होइत अछि, नहिं त' कविक बाल हृदय पर ततेक ओजन परल जा रहल छल जे अपना के पिचायल अनुभव करै छलाह।

डॉ. विभा कुमारी कविता, कथा, आलोचना इत्यादि विधा मे लेखन करैत छथि। पठन-पाठन आओर लेखन मे निरंतर सक्रिय। भाषा आओर साहित्यक विविध आयाम पर चिंतन आओर चर्चा-परिचर्चा में विशेष अभिरुचि। संप्रति : वीएसजे महाविद्यालय राजनगर (ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय) में हिंदीक सहायक प्राध्यापक।

संपर्क : *भौआड़ा हाउसिंग को-ऑप कॉलोनी, मधुबनी, बिहार*

मो. *8800270718,* ***ईमेल :*** *dr.bibha.kumari2904@gmail.com*

कोनो मनुक्खक इच्छा व आकांक्षा जहन बेसी प्रबल भ' जाइत अछि तहन ओ समाज लेल आ स्वयं अपनो लेल घातक भ' जाइत अछि, तें कामना आ इच्छा-आकांक्षा पर मनुक्खक नियंत्रण हैब परम आवश्यक अछि। आकांक्षाक केंद्र मे होइत अछि धन आ तें मनुक्खक संवेदना दम तोड़, लगैछ, पर्यावरण हुए वा कि मानवीय संबंध सभ किछु नफा आ घटाक तराजू पर तौलल जाइ लगैत अछि। 'धी आ बेख' बेटी आ गाछक घटल जा रहल संख्या, बेटी-बापक बढ़ैत लाचारी आ किसानक आत्महत्याक बढ़ैत आंकड़ा पर सोचए लेल विवश करैत अछि।

'नव प्रतिशोध' कविता मे पैघ लोकक चर्च मे कोष्ठक मे आयल (जातिसं, मोन सं नहिं) समाजक जड़ि मे बहुत गहींर तक धसल जातिक व्यवस्था आ ओहिक आधार पर बनाओल गेल भेद-भावक सभटा लत्ती-फत्ती के एकसूरें सुररि दैत अछि। काल्हि धरि जे समूह मुंह सीने, माल-जाल जकां छुछे खटैत छल, मारि खाई छल ओकरा सं कवि निवेदन करैत छथि जे उहै अपन सहनशीलताक विस्तार द' अपन मोन-करेज आ हृदय कें आओर पैघ क' अत्याचारी समूह कें आब क्षमा क' दैथ। कवि के विश्वास छनि जे सभ दिन अपन सभ अधिकार सं वंचित रहितो ओ समूह अपन मानवीय संवेदना के नीक जेकां जोगने छथि आ क्षमा दान द' समाज मे एकटा नव सनेस देबए जोगर ओएह लोक छथि।

'धार-पहाड़-समुद्र' कविता प्रकृतिक अवयवक कारणे पहिल दृष्टि मे प्रकृतिक कविता बूझि पड़ि सकैत अछि, मुदा कनिक ध्यान देला सं फरिछा जाइछ जे पहाड़-धार आ समुद्र के सोझा राखि, मनुक्खक जन्म, जन्म-स्थान, ओकर यात्रा आ जीवनक अंतिम उद्देश्यक प्रसंग के मनुक्खक विविध प्रवृति आ ओहि लेल एकटा स्वीकार भावक अभिव्यक्ति अछि। पहाड़-धार आ समुद्र एक-दोसराक नहिं कोनो दोख लगबैत अछि आ नहिं छोह-रोख रखैछ, ई पांति बुझू त मनुक्ख जीवनक मूल-मंत्र अछि।

कविक संवेदनशीलताक अनुभूति ततेक सघन अछि, जे कविता पढ़ैत काल पाठक ओहि संवेदनाक तीव्र अनुभव क' पबैत अछि। आजुक समय मे भौतिकताक बढ़ैत ओजनक प्रभाव सं पारिवारिक आ सामाजिक संबंध लेब-देब पर आश्रित भेल जा रहल अछि, आइ मनुक्ख एक-दोसर के उपयोगिता हिसाबे चिन्हैत अछि, जहन कोनो व्यक्ति ओकरा उपयोगी नहिं बुझैत छै, तहन ओ ओकरा छोरि आगू बढ़ि जाइत अछि। जानि ने कोना' कविता देखब मे छोट बूझि पड़ैत अछि, मुदा गहींर-भाव आ संवेदना सं उमड़ल मार्मिकता आ पीड़ा एकरा एकटा पैघ कविता बनबैत अछि, आ अहि तरहें कवि पाठकक सोझा एक बेर फेर सं

संग्रहक शीर्षक कविता 'विसर्ग होइत स्वर' स्त्रीक अस्तित्व कें वर्णमालाक संदर्भ मे परिभाषित करैत अछि। घरक सभटा दायित्व पूर करबाक लेल एकटा घरनी, अपन सम्पूर्ण जीवन समर्पित क' देत अछि, अपन स्वास्थ्य आ विश्रामक बलि दै ओ भरि घरक लोकक स्वास्थ्य आ विश्रामक जुटानी मे सदिखन लागलि रहैत छथि।

एहि सत्यक उदघाटन करबा मे सफल सिद्ध होइत छथि, जे कोनो कविता अपन आकार सं छोट-पैघ नहिं होइत अछि। व्यक्तिक एहन उपेक्षा जे कात- करोट त' छोरू सोझे ओकरा निप्पत्ते क' देल गेल। ई व्यथा आजुक जीवनक यथार्थ थिक। जे व्यक्ति सभ टा कर्तव्य आ दायित्वक पालन करैत अपन जानक परवाहि नहिं करैत अछि, तकरा एक समय बाद कात- करोट मे ठेल-ठालि क' सन्हिया देल जाई छै आ किछु काल पश्चात ओ निपत्ता भ' जाइत अछि।

संग्रहक शीर्षक कविता 'विसर्ग होइत स्वर' स्त्रीक अस्तित्व कें वर्णमालाक संदर्भ मे परिभाषित करैत अछि। घरक सभटा दायित्व पूर करबाक लेल एकटा घरनी, अपन सम्पूर्ण जीवन समर्पित क' देत अछि, अपन स्वास्थ्य आ विश्रामक बलि दै ओ भरि घरक लोकक स्वास्थ्य आ विश्रामक जुटानी मे सदिखन लागलि रहैत छथि। मुदा हुनकर अस्तित्वक कोनो पहिचान नहिं रहि जाइत छन्हि, ओ किनको पत्नी व मांक रूप टा मे गछल जाइ छथि, आरंभ मे ओ सभक आवश्यकता पूर्तिक मादे त' आवश्यक बूझल जाइ छथिन तैयो हुनक अस्तित्वक कोनो टा मोजर नहिं होइत छनि, उमेर बढला सं ओ निट्ठाहे गौण भ' वर्णमालाक अंतिम पोदान पर अवस्थित विसर्ग जेकां भ' जाइत छथि। एकटा धारणा साहित्य मे रहल अछि जे स्त्रीक अस्तित्व, ओकर पीड़ा, ओकर अनुभूति आदिक चित्रण स्त्रीए क' सकैत छथि, कवि एहि धारणा के तोड़ब मे नीके जेकां सफल रहलाह। जदपि ई हुनकर पहिल संग्रह छियनि तइयो कतहु सं ओ नवसिखुआ नहिं बुझेलाह। गहींर भावक कविता सभ, संवेदना सं छारल आ दैनिक जीवनक अनुभव सं जनमल। एक्कहु टा कविता नियारि क' गढल नहिं अछि। भाषा मे सहजता-सरलता अछि। शब्दावली जेना गाम-घर में प्रयुक्त होइ वाला हल्लुक शब्द सभ सं निर्मित भेल होइन्ह, अप्पन विद्वता प्रदर्शित केनाइ वा पाठक के कठिन शब्द सं डरेनाइ कवि के नहिं पसीन परलेन्ह अछि। कवि शिक्षा आ रोजगारक क्रम मे आ पर्यटन लेल सेहो देश-विदेशक अनेक स्थानक यात्रा आ प्रवास केलेन्ह अछि, आ ओ समस्त अनुभव कतहु ने कतहु हुनक अनुभूतिक निधि के समृद्ध करब मे सहयोगी बुझना जाइत अछि। हिनक कविता सभ पढ़ि कें बुझाइत अछि जे एकहक टा कविता नीक जकां सिझा-पका क' चुल्ही सं उतारल गेल हुए। किछुओ टा अधखिज्जु आ अधसिज्झु नहिं। ई अवश्य उमेद करैत छी जे हिनकर आगामी कविता सभ मे हुनक जियल वृहद परिवेशक आओर स्पष्ट चित्र भेटत, शब्दावली आओर समृद्ध रूप मे उपस्थित हैत। ■

बाल उपन्यासक कसौटी पर 'गुलरी'

✍ अमित मिश्र

साहित्य समाजक दर्पण होइत अछि आ नेना-भुटका समाजक भविष्य। एहि विचारक खोइंचा छोड़ेला पर कहल जा सकैत अछि जे 'बाल साहित्य समाजक भविष्य निर्माणमे एकटा मजगूत स्तंभ अछि। बाल साहित्य सं नेना-भुटकाक जुड़ाव तेहन ने भ' जाइ छै जे ओ ओकरा आदर्श मानि ओकर बाट ध' लैत अछि। नेनाक मन-मस्तिष्क कें आकर्षित करै बला ई विधा आन विधा सं कनेक बेसिए जिम्मेदार अछि। एकरा जिम्मेदारीपूर्वक निर्वाह केनाइ बाल-साहित्यककारक प्रथम आ अंतिम गुण हेबाक चाही।

अधिकांश बाल साहित्य जे लिखल जा रहल अछि से काल्पनिक दुनियांक निकट रहैत अछि। प्राचीन काल सं परी, भूत-प्रेत, दैत्य, राजा, रानी बला खिस्सा कें बाल-साहित्य मानल गेल अछि। एकर कारण रहल अछि एहि सभ कथानक मे एकटा रहस्य, तिलस्म आ रोमांचक अधिकता। ई रोमांच नेनाक मोन पर अपन छाप छोड़ैत अछि आ ओकरा कथाक प्रति आकर्षित करैत अछि।

उपरोक्त कथन सत्य अछि आ साहित्यकार एकरा सं परहेज नै क' पाबि रहल अछि। एकर खतरा सेहो अछि, ड्रैगन दैत्य वा भूत-प्रेतक कारनामा बाल-मनोविज्ञान लेल घातक सेहो होइत अछि। ई सब नेना-भुटका एकटा अज्ञात डर सं वंचित नै रहि पाबै छथि।

एहि खतराकें चिन्ह क' एहि सभसं बिल्कुल फराक विचार राखि चर्चित गीतकार डॉ. चन्द्रमणि झा, बाल-उपन्यासक सृजन केने छथि। एकटा प्रसिद्ध गीतकार जे छन्दकें अपन जीवनक अंग बना लेने छथि, से जखन अपन छवि बदलै छथि

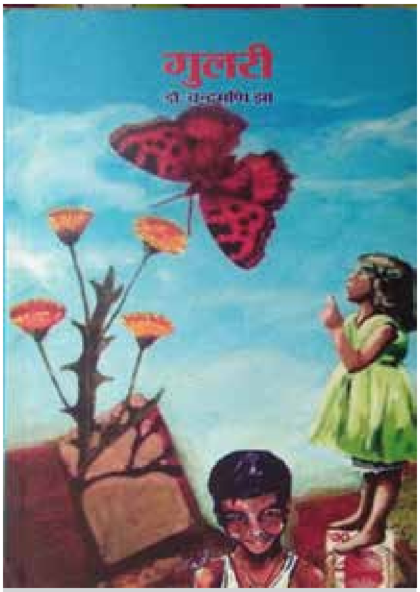

गुलरी

रचनाकार : डॉ. चन्द्रमणि झा
प्रकाशक : नवारंभ, मधुबनी
वर्ष : 2018
मूल्य : ₹ 150
पृष्ठ : 128
विधा : उपन्यास (बाल साहित्य)

त' धरातल पर आबै छै उपन्यास लगातार पन्द्रह दिनक रतिजग्गाक बाद, जखन स्वयं नेना बनाबै छथि त' हमरा सभक हाथमे आबैत अछि 'गुलरी'।

'गुलरी' एहि उपन्यासक नायिका अछि। एगारह वर्षक गुलरी मिथिलाक गाममे बसैत सुच्चा मैथिल धियाक प्रतिनिधित्व क' रहल अछि। जतबे पढ़ै मे कुशाग्र बुद्धिक अछि। ततबे पारिवारिक दृष्टिए मेहनती। घरक सभटा काज करबामे योग्य गुलरीक एकटा सहेली अछि गौरी। गौरी आ गुलरी संगे पढ़ैत अछि आ संगे-संग नवोदय पास करैत अछि। गुलरीक छोट भाइ आलोक सेहो पढ़ै मे तहिना लुत्ती अछि। तकर कारण अछि पढ़ल-लिखल बेरोजगार पिता गणेशक नेनाक पढ़ाई प्रति जिम्मेदारी आ बाबा शिबू बाबूक सिनेह आ ज्ञानबर्धक गपशप। गौरीक पिता बीडीओ साहेब गुलरीक परिवार लेल कोनो भगवानसं कम नै छथि। गणेशक मास्टरीक नौकरी सं ल' क' गुलरीक नवोदय मे नामांकन धरि बिडिओ साहेबक कृपा रहलनि अछि। बिडिओ साहेब सन ईमानदार आ सुच्चा मित्र विरले भेटैत अछि। विज्ञान शिक्षक हरिमोहन बाबू आ हेडमास्टर श्रीकान्त बाबू शिक्षकक रूपमे एकटा उच्च कोटिक आदर्श स्थापित करबा मे सफल भेल छथि उपन्यासकार। छात्रक रूपमे गुडक गुदगुदाबैत गप कथानक मे जान आनि दैत अछि। ओ कनेक कमजोर छात्र छल मुदा मेहनतिक बल पर सातम कक्षामे चारिम नम्बर पर आएलाक बाद कहैत अछि- 'अगिला साल हम फर्स्ट करबै। हम कोनो मुखलौल छियै।' एहन बात सभ नेनाक प्रेरित करत से विश्वास अछि।

संपूर्ण उपन्यास कुल चौदह खंड मे अछि। सभ खंड मे कथानक बदलि गेल अछि मुदा पात्र समान अछि। बीच-बीच मे छोट-छोट भूमिका मे अन्य पात्र सभ आएल छथि। प्रत्येक खंड मे कथानक बदलि गेलाक कारणे, प्रत्येक खंडक अलग-अलग शीर्षक रहलाक कारणें आ अधिकांश खंडसं पिछला खंडक कथा संग क्रमबद्धता नै रहलाक कारणे एकरा उपन्याससं बेसी उचित हएत कथा संग्रह कहब।

कुल 128 पृष्ठक उपन्यास छोट नेना-भुटका लेल नै अछि। हं किशोर वा मध्य विद्यालय/उच्च विद्यालयक छात्र-छात्राक

(शेष पृष्ठ 78 पर)

सुसुप्त न्यूरॉनकें जागृत करैत बालमणि

✍ अमित मिश्र

नेनपन... एकटा अविस्मरणीय समय होइ छै। नेनपन एकटा एहन अवस्था होइ छै, जाहिमे मनुखक मस्तिष्क सभसं बेसी सक्रिय रहै छै। एकहकटा न्यूरॉन, एकहकटा कोशिका ऊर्जासं परिपूर्ण रहै छै, यैह कारण छै जे ई समय मनुखक भविष्यक निर्धारण करैत अछि। कहल गेलैए पूतक पैर पलनेमे देखेनाइ शुरू भ' जाइ छै। एहन समयमे जखन कि मस्तिष्क अपन अधिकतम कोशिकाकें एक्टिवेट करैमे लागल रहै छै, हमर सभक कर्तव्य होइ छै जे ओहि नेना सभमे साकारात्मक ऊर्जा प्रदान करी। एहन ऊर्जा प्रदान करबामे सहयोगी होइ छै नेनाक रुचि अनुसार देल जाइ बला शिक्षा, संस्कार आ संस्कृति।

एहने समयमे हमरा सभकें आवश्यकता बुझाइ छै बाल साहित्यक। बच्चा सभकें जे रुचय-पचय सएह भेल बाल साहित्य। बाल साहित्य एकटा एहन रिंच अछि, जाहिसं बच्चा बुधिक केबार अपने-आप खुल' लागै छै। हमरा सभक भाषामे एहने बाल रचनाक घनघोर कमी देखना जाइए। बाल साहित्यक नामपर कांच आ कचरा सामग्री परसल जाइए। एहन सामग्री नेनाकें अपन भाषासं कने बेसिए दूर करैत अछि। मने हमर सभक भाषा मैथिलीमे एखनो बाल सुलभ रचनाक कमी खूब देखना जाइए। एहि कमीकें हम सभ दूर करबाक प्रयास क' रहल छी। ई प्रयास आश जगबैत अछि।

एहने समयमे हमरा सभक सोझा आबैत अछि एकटा एहन पोथी जे ओहि कचरा बला श्रेणीसं एकटा अलग पहिचान बनबैत अछि। एहि पोथीक नाम अछि ‘बालमणि’। मणिकांत झा रचित मणि शृंखलाक चौदहम पुष्प अछि ‘बालमणि’। नामसं स्पष्ट अछि जे ई बाल सभक लेल लिखल गेल अछि। मणिकांत जी रेडियो वार्ता कर्ता आ सामाजिक एक्टिभिस्ट त' शुरूएसं छथि। एम्हर तीन-चारि वर्षसं मणि शृंखलाक माध्यमे धुरझार पोथी लिखि रहल छथि। रचनाकार अपन मोनक बात कहैत लिखै छथि, जे नेनपन हुनकामे एखनो बचल छन्हि। ओ नेनाक क्रियाकलापपर आकर्षित होइत छथि। नेनाक चंचलता, बदमाशी आ नटखटपन हुनका मोहैत छन्हि। एकरे परिणाम थिक जे ओ नेनाक लेल सेहो कलम उठेलनि।

बालमणि

रचनाकार	:	मणिकांत झा
प्रकाशक	:	महात्मा गांधी शिक्षण संस्थान, लहेरियासराय, दरभंगा
वर्ष	:	2018
मूल्य	:	₹ 70
पृष्ठ	:	112
विधा	:	बाल कविता/गीत

कविता/गीत पढ़लाक बाद कविक ई स्वीकरोक्ति सत्य जानि पड़ैत अछि। सभटा रचना गीत जकां अछि। गीतेक छन्दमे स्थाई आ अंतरा बना क' लिखल गेल अछि। रचना सभ पढ़लाक बाद लागैत अछि जे रचनाकार अपन बाल मनकें कम, अपन अनुभवकें बेसी परसने छथि। सभटा गीत ज्ञानदायक आ प्रेरक अछि। कविता सभमे जतेक तथ्य राखल गेल से सभ तरहसं शोध कएल अछि। नेना त' दूर, बहुतो वयस्ककें नै बुझल हेतै। केराक कतेक नाम छै? कदिमाक उपयोग की सभ छै? कटहरक कतेक व्यंजन छै? आमक कते किस्म छै? करैलाक कतेक तीमन भ' सकै छै? आदि कतेको वयस्ककें नै बुझल हेतै। यैह कारण छै जे हम उपरमे कहलौं जे रचनाकार बाल मनसं बेसी अपन अनुभव, अपन शोध आ अपन शब्द विन्यासक प्रयोग केने छथि।

एहि पोथीमे कुल एक सए गीत अछि। सभटा गीतकें अलग अलग श्रेणीमे बांटल गेल अछि। पूजन-वंदन, मान-स्वाभिमान, जल-जीवन, समय-साल, चिड़ै-चुनमुनी, जीव-जंतु, फल-फूल, पाबनि-तिहार, गाड़ी-घोड़ा, चीज-वस्तु, छुटल-बढ़ल एहि तरहें एगारह श्रेणीमे सभटा गीत/ कविताकें समेटल गेल अछि। सभटा श्रेणीमे ओहि नामक अनुसारे कविताक कथ्य राखल गेल अछि। एहि तरहें देखैत छी जे रचनाकारक प्रयास छन्हि जे नेना-भुटकाकें अपन परिवेशक सभटा बस्तुसं परिचित करबा दी। संभवत: एहि

उदेश्यमे सफल सेहो लागि रहल छथि।

इनारक बात कहैत कवि कहैत छथि जे कोना सौ-सौ हाथक इनार होइत अछि आ तकरा साफ करबा लेल ब्लीचिंग पाउडरक उपयोक करबाक चाही। आ जं रस्सी टूटि क' बाल्टि खसि पड़य त' बिना नोर खसेने कांकोरक उपयोग करी। पंक्षी, कोइली, चिल्होरिया, बगुला, गाय, बाज, मूस छुछुन्नरि, आम, लीची, जामुन, लताम इत्यादि जतेक रचना अछि, सभमे कवि ओकर रंग-रूप, आकार-प्रकार, उपयोग, आदि भावक प्रयोग केने छथि। एक तरहसं कहल जाए त' सभटा रचनाक रचबाक मीटर एकहि रंग लागि रहल अछि। यैह एहि कविता सभक सकारात्मक पक्ष अछि त' यैह नकारात्मक सेहो। सकारात्मक एहि कारणे जे हम पहिने कहलौं, सभटा रचनामे एकटा खोज एकटा शोध भेल अछि। एक संग एक विषय पर राखल तथ्य ज्ञानक बृद्धि करबामे सफल अछि। जेना लिअ केरा कवितामे केराक नाम चिनियां, बरहरी, मालभोग, कान्हावंशी, सिंगापुरी, हाजीपुरी, नौगछिया क, भूसाबलक केरा, आदि कतेको वयस्क कें सेहो नै बुझल हेतनि। एहने सन नीक-नीक ज्ञानक गप सभटा रचनामे भेल अछि। एकर नाकारात्मक पक्ष ई अछि सभटा रचनाक सृजन एके फॉर्मेटमे हेबाक कारणे ई कनेक उबाऊ सेहो भ' गेल अछि। तें हमरा लागैत अछि जे कोनो बच्चा एकरा एक संग सभटा रचना नै पढ़ि सकत।

किछु रचना एकहिं भावक अछि जेना दूपहरिया, जेठक दुपहरिया, रौदी, फेर मानसून, मेघौन दिन, मेघ, वर्षा, फेर आम आ मालदह आम। एहिसं कविकें बचबाक चाही छल। किएक त' बाल मन बड़ चंचल होइ छै। एकहि रंगक गप केलासं ओकर मोन उबिया जाइ छै आ तखन ओ रचनाक मूल तत्वपर ध्यान नै द' सकत।

ओना कविक कर्तव्य मात्र मनोरंजने टा नै होइ छै। साहित्य मात्र हंसबैएक काज नै करैत अछि। एकर काज छै ज्ञानक बृद्धि करब। बुद्धिक स्थानांतरण करब। जखन कोनो नेनाक लेल रचना होइ तखन त' एहि गुणक होयब परम आवश्यक भ' जाइ छै। एहि तर्कपर ई पोथी सत प्रतिशत सफल बुझना जाइत अछि। एकर रचना बड़ ज्ञानवर्धक अछि। बच्चा बहुत किछु सीख सकैत अछि। एहिमे बांटल गेल श्रेणी बच्चा सभकें अलग-अलग टेस्ट प्रदान करैत अछि। हं एकटा बात अछि जे ई पोथी दस वर्षसं उपरेक नेना लेल उपयोगी अछि। एहिसं छोट वयसक नेना लेल ई कनेक कठिन होयत।

अंतमे रचनाकार श्री मणिकांत झा जीकें बधाइ आ धन्यवाद दैत हम आशा करब जे ओ बाल साहित्य लेल निरंतर काज करता। एहिसं बेसी नीक पोथी कम बयसक नेना सभ लेल आनताह। हम पाठक बन्धुसं सेहो कहब जे एहि पोथीकें अपन दुलार दैथि। हमर दाबा अछि जे ई अहांकें उदास नै करत। एहिमे सीखबा-बुझबाक लेल पर्याप्त सामग्री अछि।

तीरभुक्ति

अखिल भारतीय मिथिला संघक शोध पत्रिका

पाठकगणसं अनुरोध

'तीरभुक्ति' मिथिला आओर अहि सं जुड़ल मुद्दा पर मैथिलीमे प्रकाशित शोध पत्रिका अछि। अहिमे मैथिली आओर मिथिला सं जुड़ल अकादमिक विशेषज्ञ, लेखक, पत्रकार आ विश्लेषक के शोध रचना पढ़ल जा सकैत अछि। 'तीरभुक्ति' के अहां के सहयोग आ समर्थन भेटैत रहय, अहिमे 'तीरभुक्ति' के सफलता अछि। एहि शोध पत्रिका कें आओर बेसी लोकप्रिय बनाबैक लेल मिथिला, मैथिली आ अहि सं जुड़ल विषय पर रूचि राखय बला पाठक के 'तीरभुक्ति' केर पांच वार्षीय सदस्यता लेबाक लेल प्रेरित करी। 'तीरभुक्ति' के सालमे चारि टा अंक प्रकाशित होयत।

मूल्यः एक प्रतिः 25 टाका,
नियमित सदस्यताः
पांच वर्ष (20 अंक): 500 टाका

*(पत्रिका डाक वा कूरियर माध्यमे वा रजिस्टर्ड एयरमेल सं पठाओल जायत, जेकर शुल्क अहि मूल्यक संग जुड़ल अछि) सदस्यता लेल अपन पूरा नाम, पता (पिन कोड सहित), मोबाइल नंबर चेक/ड्राफ्ट सहित **'अखिल भारतीय मिथिला संघ'** केर नामे कार्यालयक पता पर पठाबी वा*
teerbhuktimaithili@gmail.com
पर मेल करी।

पत्राचार पता :
तीरभुक्ति, 20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली-110001

सदस्यता क्रमांक ....

दिनांक ....

(केवल कार्यालय प्रयोग हेतु)

हम तीरभुक्तिक नियमित सदस्य बनय चाहैत छी। हमर विवरण निम्नलिखित अछि–

नाम : ....

पता : ....

....

....

मोबाइल नं. ....

उम्र : .... पेशाः ....

शिक्षा : ....

शुल्क विवरण :

☐ पांच वर्ष (500 टाका मात्र)

भुगतान :

☐ नगद (विवरण) ....

....

☐ चेक/बैंक ड्राफ्ट (विवरण) ....

....

☐ नेफ्ट (NEFT) (विवरण) ....

....

नोट : चेक/ड्राफ्ट **अखिल भारतीय मिथिला संघ** केर नामे बनाबी। NEFT करबाक लेल बैंक विवरण निम्नलिखित अछि–

बैंक खाता विवरण

नाम : अखिल भारतीय मिथिला संघ

(A khil Bhartiya Mithila Sangh)

खाता संख्या : 11084229861,

आईएफएससी कोड : SBIN0000691

एमआईसीआर कोड : 110002087

बैंक : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया

शाखा : पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली

तीरभुक्ति प्राप्ति स्थल

दिल्ली : **विजय चन्द्र झा / विद्यानंद ठाकुर**
20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली, मो. 9650461788, 9717539000

: **प्रकाश झा**
'रंगप्रसंग', राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, भगवान दास रोड, मंडी हाउस, नई दिल्ली, मो. 9811774106

: **भास्कर ज्योति**
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, मो. 9015753660

गाजियाबाद : डॉ. ममता ठाकुर, मो. 9717258787

गुवाहाटी : प्रेमकांत चौधरी, मो. 9435342658

हैदराबाद : मनोज शांडिल्य, मो. 9866077693

दरभंगा : प्रो. भीमनाथ झा, छपकी परड़ी, लक्ष्मीसागर, मो. 9430827936

झंझारपुर : आनंद कुमार झा, मो. 9939041881
: सोनू बुक कॉर्नर, मो. 9931291259

मधुबनी : सुनील कुमार झा, जानकी मैथिली पुस्तक भंडार, मो. 9473115956

मुंबई : विभा रानी, मो. 887970891

पटना : शिव पुस्तक भंडार, विद्यापति भवन, पटना, मो. 9905281145
: किताब कोनचर,
लगिचः सदाकत आश्रम, गोसाईं टोला मुंहपर, पटना– 800010
संपर्कः 9955995509

भागलपुर : प्रो. केष्कर ठाकुर, मो. 9430457204

सहरसा : अरविन्द कुमार मिश्र 'नीरज' मो. 9771006810

मधेपुरा : अरविन्द श्रीवास्तव, मो. 9431080862

समस्तीपुर : नरेश कुमार 'विकल', मो. 9430244114

कोलकाता : लक्ष्मण झा सागर, मो. 9903879117

सिलचर : स्वाती शाकम्भरी, मो. 9213152822

सुपौल : केदार कानन, मो. 7004917511

रायपुर : मनीष कुमार झा, मो. 9425517092

मिथिलाक ज्योतिष परंपराक अनंत यात्रा

✍ डॉ. विनय कुमार चौधरी

किसुन संकल्प लोक, सुपौल द्वारा प्रकाशित आ' डॉ. ललितेश मिश्र द्वारा सम्पादित ग्रंथ 'आखर अनंत' वस्तुत: ज्योतिषाचार्य पंडित बलदेव मिश्रक कालजयी ज्ञानमयी आ' अनुभव-अनंत रचना संग्रह थिक। कुल 246 पृष्ठक पोथी मे 42 आलेखक मादे पंडित जी सम्पूर्ण स्मृतिशास्त्र-ज्ञानशास्त्र-समाजशास्त्रक सकल गंभीर अनुभूति पाठक कें करौने छथि। हमरा जनतबे ई पोथी नहि, अपितु स्मृति, संस्मृति आ' संस्तुति ग्रंथ थिक। पूर्वज परिचय ओ' हुनक कृति, परम्परा ओ प्रीति, संस्कार ओ संस्कृति, पराभव ओ प्रकृति, सत्य ओ सत्याभास, कर्तव्य ओ कर्मकांड, जीवन ओ दृष्टि... सभक समेकित अभिरूप ओ स्वरूप थिक-ई पोथी।

फणीश्वर नाथ रेणुक ई कहब- 'नीक साहित्य मनुष्य कें सामाजिक आ' स्वाभाविक तथा समाज के मानवीय आ' माननीय बनबैत अछि' सरिपहु एहि पोथी कें पढ़ला-गुणला सं सत्य-सार्थक बुझाइत अछि। आखर अनन्त व्यक्ति कें अपन जड़ि आ जीव सं जोड़ने अछि। एहने-एहने पोथी कें दृष्टि पथ पर राखि संभवत: प्रो. रमा नाथ बाबू कहने हेताह- जनताक रुचि कें जागृत, परिष्कृत, व्यवस्थित, संतुलित, संवेदित ओ उन्नत बनेनाई-बनाक' रखनाइ मात्रे नीक पोथी ओ पोथी-कारकक लक्षण ओ गुण थिक। गुण होएबाक चाही। ओ ईहो कहैत अछि जे आंखि मुनिक', निस्तेज भ' क' वा अत्यन्त तेजी देखाक' वा चाटुवृत्ति सं वा स्थानापन्न हेबा कें दृष्टि मे राखि जे रचना होइत अछि ओकरा तर्क

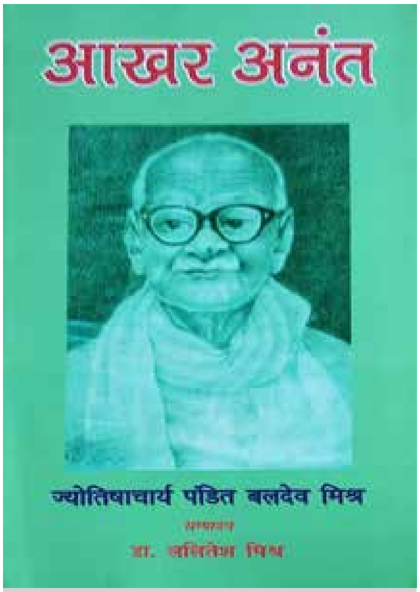

आखर अनंत

रचनाकार	:	स्व. पं. बलदेव मिश्र
सम्पादक	:	डॉ. ललितेश मिश्र
प्रकाशक	:	किसुन संकल्प लोक, सुपौल
वर्ष	:	2018
मूल्य	:	₹ 300
पृष्ठ	:	246
विधा	:	निबंध संग्रह

वा तथ्य सं छूति नहि, तैं ओ अकोटि साहित्य मानल जाय। पंडित जीक समग्र रचना तर्कक तुला पर, ज्ञानक टीका पर, इतिहास-भूगोल-संस्कृति-समाजशास्त्रक शिला पर उपस्थित-अवस्थित विचार संस्थापना प्रतीत होइत अछि।

पोथीक पहिले आलेख मे मानव कें चरित्रक महत्व कें उल्लिखित ओ रेखांकित करैत कहल गेल अछि- 'समुद्र अपन मर्यादा छोड़ियो देअय, पैघ-पैघ ऊंच पर्वत श्रृंखला पृथ्वी मे समाहितो भ' जाए तैयो चरित्रवान महान पुरुष अपन मर्यादाक त्याग नहि करैत अछि। संस्थानो यैह थिक-

कुलीनम कुलीनं वा वीरं पुरुषमानिनम्।
चरित्रमेव व्याख्याति शुभं वा यदिवाऽशुभम्।।

कुलीन पुरुषक चर्चा करैत पंडितजी कहैत छथि जे सफलताक बीच जौं व्यक्ति विनयशील, अनौद्धत आ' अभिमानरहित हो त' वैह व्यक्ति भेल भद्र ओ कुलीन – सर्वकालीन-सर्वजनीन सत्य यैह थिक। पंडितजी उचिते कहैत छथि जे असफलता वा दरिद्रता ओते चिन्तनीय नहि; चिन्तनीय थिक ओकरा दूर करबाक यत्न नहि करब। अयत्नी व्यक्तिक सहायता ईश्वरो नहि करैत छथि- उद्योगिनोऽसहायस्य दयते जगदीश्वर:। मानवक जीवन स्तर उठेबाक हेतु विद्या आ धन दुनू के ओ समान रूपें अनिवार्य मानैत छथि। मैथिलक स्वभावक चर्चा करैत ओ कहैत छथि- 'दारिद्रय दु:ख दहनाय ॐ नम: शिवाय'। एहि आलस्य आ अभाग्यक संबंध अभिक्षा-अज्ञान सं जोड़ैत पंडित जीक प्रस्थापना छुन्हि – 'विद्यवे मनार्थ यश: सुखानाम्'। विद्या मात्रहि सं मान, यश, सुखादि सभ प्राप्त होइत अछि।

पंडित जी मिथिलाक ज्ञान आ' विद्या परम्परा मे मीमांसक मंडन मिश्र, युग प्रवर्तक विद्यापति नवयुग संस्थापक कवीश्वर चन्दा झा, महाकवि कालीदास, विद्या प्रवर्तक बृद्ध वाचस्पति मिश्र, नव्य न्याय प्रस्तोता गंगेश उपाध्याय, महामहोपाध्याय शंकर

(शेष पृष्ठ 73 पर)

डॉ. विनय कुमार चौधरी सहरसा स्थित राजेन्द्र महाविद्यालय समाजशास्त्र विभाग मे प्राध्यापक पद सं सेवानिवृत्त छथि। दरभंगा जिला स्थित पिंडारूच गामक निवासी छथि। समाजशास्त्र विषयक हिनक तीन गोट पोथी प्रकाशित छनि।
संपर्क : *श्रीकृष्ण कुटी, पंचवटी, सहरसा-852201,* ***मो.*** *: 9835878200*

ISSN : 2582-1660, वर्ष : 2, अंक : 2

मनभावन अछि बाइस्कोप

✍ हितनाथ झा

'व्यंग्य लिखब असान गप नहिं छै। तै पर ठाहि-पठाहि। महाग मुश्किल।'

ई बात वरिष्ठ कथाकार अशोक स्वयं कहैत छथि मुदा सेहो काज अखबार हिन्दुस्तान, हिनकासं करबाइए लेलकनि। भलें ई अपनाकें कथाकार मानथु (मानिते छथि, तैं ने अपन नामक पहिने कथाकार लिखने छथि) नीके केने छथि। ई स्वयं नहिं, मैथिली साहित्य संसार हिनका मैथिलीक विशिष्ट कथाकार मानि चुकल छनि। मुदा इहो बात सत्य जे हिनकर अध्ययनशीलता, हिनकर बजबाक शैली, हिनकर बॉडी लैंग्वेज, हिनकर सोचक विस्तार, हिनकर लिखबाक कला आ मैथिली साहित्यक विकास हेतु सदिखन चिन्तन करबाक कारणें हिनका मात्र कथा लिखबामे स्थिर नहिं रहय देलकनि। मैथिलीकें जतय जेहन जेना जरूरत पड़लैक, हिनकर उपयोग कयलकनि। साहित्यक मंच हो, संयोजनक आ उद्घोषकक प्रयोजन पड़तैक, तं श्री अशोक सामने ठाढ़। कथा तं सहजहिं, कोनो पत्रिकाक लेल कोनो समीक्षा-विशेषक प्रयोजन पड़तैक, तं ध्यानपर कथाकार अशोक। कविताक पोथीसं अपन यात्रा प्रारंभ केनिहारि कथाकार अशोक एक विधा डेबने नहिं रहि सकलाह, जतय जेना जाहि तरहक प्रयोजन पड़लैक, लिखैत चल गेलाह आ बजैत चल आबि रहल छथि, हिनकर खातामे विविध विधाक लगभग दस मूल पुस्तकक प्रकाशित छनि। संपादनमे सेहो हिनक स्थान अग्रिमे पंक्तिमे छनि।

हिनकर व्यंग्य साहित्य पर चर्चा करबासं पहिने, हिनकहिं मुंहे सुनल गप्प कहय चाहैत छी।

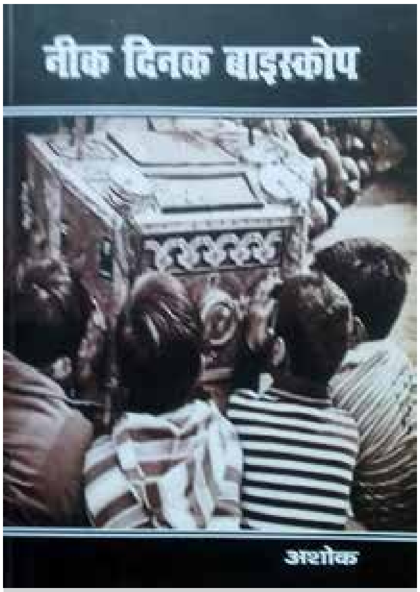

नीक दिनक बाइस्कोप

रचनाकार	:	अशोक
प्रकाशक	:	शेखर प्रकाशन, पटना
वर्ष	:	2018
मूल्य	:	₹ 50
पृष्ठ	:	80
विधा	:	व्यंग्य

'जखन हमर यात्रा संस्मरण निकलल, तं एक साहित्यप्रेमी (नाम स्मरण नहिं अछि, अछियो तं एतय नहिं कहब) पढ़लनि आ जखन ओ रूस गेलाह तं हुनको यात्रा संस्मरण लिखबाक मन भेलनि, ई बुझि जे लिखब बहुत आसान काज छैक, जे देखलियै, सुनलियै, गुनलयै ओकरा लिखब कोन भारी बात! मुदा ओ एक पेजसं बेसी नहिं बढ़ा सकलाह, लिखल नहिं भेलनि।'

सत्ते लिखब बहुत दुरूह काज छैक, खास क' साहित्य। ओ सभ बूते नहिं भ' सकैत छैक, ओना आइ काल्हिपर ई लागू नहिं अछि, ने फेसबुकपर, ने पत्र-पत्रिकामे आ ने सुन्दर, सुव्यस्थित मोट गेटअप-सेटअपमे प्रकाशित किताब पर। जेना मोन भेल लिखि देलहुं, जकरासं मोन भेल प्रसंशा करबा लेलहुं आ समयानुकूल जोगाड़मे लागि गेलहुं। साहित्यकार भेनाइ बहुत विरल आ कठिन काज छैक, जकरामे ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा रहैत छैक, निरन्तर साधनारत रहैत छथि, वैह साहित्यकारक रूपमे चिन्हल, जानल आ मानल जाइत रहताह। बांकी वर्तमानमे जे लूटि लेथु, वर्तमाने टामे रहताह। आगू क्यो नामो लेनिहार नहिं!

श्री अशोक ओहि विरल साहित्यकारमे छथि, मैथिलीकें खगता छैक। हिनकर लिखल साहित्य सभ दिन ओहिना महत्वक रहत।

कथासं समीक्षा दिस झुकाब, ई तं अधिकांश लोक हिनकर विषयमे बुझैत छनि, मुदा ई व्यंग्यो लिखलाह, ई बात कम लोक बुझैत हेतनि। जेना ऊपरमे कहलहुं, सेहो काज हिनकासं 2014सं 2016क बीचमे पटनाक दैनिक हिन्दुस्तान लिखबा लेलकनि। दू सालमे 31 टा लिखलनि आ ओ स्तम्भ बन्द भ' गेलैक तं हिनको व्यंग्य लिखब बन्द भ' गेलनि, ई एहिसं बुझा पड़ैत अछि जे ओकर दू सालक बाद पुस्तक प्रकाशित भेलनि, ओहिमे ओएह 31टा। एको टा बेसी नहिं। तैं जे लिखलनि से मजबूरीवश लिखने हेताह, मुदा लिखलनि तं ओ सर्वत्र प्रशंसित भेलनि, चर्चित भेलनि। हिन्दीक अखबारमे मैथिलीक स्तम्भ छपब, ओहो हिन्दुस्तान सन प्रसिद्ध अखबारमे, जकर एक अलग आ सजग पाठक रहैत छैक, निश्चिते प्रत्येक मैथिली जननिहार पढ़ैत छल होयताह आ तैं कथाकार अशोक

नीके केलनि, एकरा पुस्तकाकार प्रकाशित कय, स्थायी महत्वक बना लेलनि। फेर कोनो अखबार पकड़तनि, तखने हिनकर कलम एहि विधा लेल ससरतनि। अशोक स्वयं स्वीकारैत छथि -

'अखबारक कारणे चर्चित भेलहुं। जे सभ हमर कोनो पोथी नहिं पढ़ने रहथि सेहो एकरा पढलनि। कतेक लोक फोन क' क' प्रशंसो कहियो क' करथि। सेवा जीवनक त' कतेको सहकर्मी हमर लेखनसं एही माध्यमे परिचित भेलाह।'

ओह! मैथिलियोमे "दैनिक" होइत !

आब एहि पुस्तकक विषयमे। हालमे मिथिलाक बहुत क्षेत्र बाढ़िमे डूबल रहल। हिनकर एक व्यंग्य छनि 'निचू चाड़ तर सोहाय मलार'। कतेक सटीक व्यंग्य छनि-जखने कारी-कारी मेघ लगैए तखने कोढ़ कांपय लगैए। अंतमे कहैत छथि - एहन घर हो जाहिमे चुआठ नहिं हो। निचू घर रहत तखन ने सोहायत मलार। स्मार्ट सिटीसं लय नेपाल सरकार सं वार्तापर तक नीक व्यंग्य छनि।

राजनीतिमे सत्ता परिवर्तन खेल भावनाक रूपमे ग्राह्य हेबाक चाही, जकर व्यंग्यकार पूर्णत: अभाव देखैत छथि, तैं ने लिखलनि अछि - 'एक पक्ष कें जं सुखमे शब्द हेरायल छनि त' दोसर पक्ष के दु:खमे शब्द बिलायल छनि।' नि:शब्दताक बाद जे कटुता, ताहिसं चिंतित छथि, मुदा कहैत छथि, गर्मीक अकुलाहटिसं तं त्राण चाही, सुखायल दूबिकें हरियरीक लेल जहिना जलक फुहार, तहिना जनताकें अन्न-जल आ सद्व्यवहार।

गामक शहरीकरण कोनो निदान नहिं, आर्थिक रूपें यदि सबल क' देल जाइ, तं गाम विलयबो नहिं करत, पोखरि, इनार, गाछ-वृक्ष सभ यथावत रहत, पर्यावरण संतुलित रहत, मुदा ई करत के, एहि लेल सरकारक इच्छा-शक्ति चाही, मुदा...।

सत्ता-सुखक लेल जातिवाद, सम्प्रदायवादसं लय टमाटर आ पियाजपर होइत बहसक नीक स्वाद-रसक तड़का तैयार करबामे अशोकक व्यंग्य पूर्ण सफल भेलनि अछि, कतहु नीरस नहिं, सभ तरि सरसे-सरस।

मुखौटा पहिने मेला-ठेलाक वस्तु छल, बच्चाक मुंहपर मुखौटा रहैत छल, नाटक-नौटंकीमे मुखौटा पहिरैत छल, प्रभाव देखबैत छल, मुदा आबक स्थितिमे मुखौटे टा अवलम्ब। मुखौटा सभपर भारी, सभ लेल भारी। जागल-सूतल बिनु मुखौटाक काजे नहिं चलैत छैक, घर रहओ वा बाहर। मुखौटाक बिनाक स्थिति देखल जाय' हम अहांक पति-परमेश्वर छी। अहांक बेटा-बेटीक बाप छी। मुदा कियैक मोजर देथिन। तखन ओ झटसन मुखौटा पहीरि लेलनि। मुखौटा पहिरिते दुनियां अपन भ' गेलनि।'

'धूर्त समागम'मे कहैत छथि। नाटक देखि चकबिदोर लागि गेल। चकबिदोर एहि दुआरे जे एक्केइसम शताब्दीक गप चौदहमे देखाओल गेल छल। सात सौ वर्षहुमे लोकमे कोनो बदलाव नहिं। बढियां तुलनात्मक व्यंग्य कयने छथि। चुनावक फगुआ पहिल व्यंग्य छनि। बढियां जकां पार्टी सभकें क्लास लेलानि अछि।

22 मई 2014 क लिखल व्यंग्य'नीक दिनक बाइस्कोप' जाहि नामपर किताबोक नामकरण पड़ल अछि, पांच सालक बाद पढि रहल छी, नीक 'बाइस्कोप' देखेने छलाह।

एहिना एकसं एक व्यंग्य छनि, किछु व्यंग्य तं बहुत नीक सुतरलनि अछि, ओना सभ रचना अपन नाम (शीर्षक) क सार्थकता देखबैत अछि। पुरनो लिखल व्यंग्य एखन टटका लगैत अछि। आ आगुओ पढ़ब तं लागत एखनुक तं बात थिक। यैह एहि पुस्तकक सार्थकता अछि।

शेखर प्रकाशन, पटनासं प्रकाशित ई पोथी मात्र 50 रु. मे उपलब्ध अछि। तैं हम आब हिनकर अन्य रचनापर नहिं कहब। स्वयं पढ़ी आ अपने निर्णय करी। हमरा विश्वास अछि, हमरासं अपने पूर्ण सहमत होयब। ■

(पृष्ठ 71 केर शेष)

मिथिलाक ज्योतिष परंपराक अनंत यात्रा

मिश्र आदिक व्यक्तित्व-व्यक्तिमत्व-कर्तृत्व कें उद्भासित करैत मैथिल-मिथिलाक श्रेष्ठता सं जग कें परिचित करौलन्हि। बौद्ध साहित्य, पाश्चात्य जगत्, भक्ति परम्परा आदिक विस्तारित चर्चा सं मैथिली साहित्य, मिथिला-समाज आ' मैथिल जीवन मे भेल। होइत परिवर्तन वा परिवर्द्धन सं समाज साकांक्ष ओ विज्ञ भ' सकल। मैथिल समाजक नकलची वृत्ति के 'व्यथा' कहैत ओ संस्थापना दैत कहलन्हि जे व्यक्तिक वेष, 'वाणी, बुद्धि, वयस, कर्म, धन ज्ञान ओ संस्कार' क अनुसारे मीक लगैत अछि; नकल सं नहि ओही सं व्यक्ति गौरव प्राप्त करैत अछि।

विद्यया वपुसा वाचा वस्त्रेणविभवेन च।
वकारैः पंचभिर्युक्तो नर: प्राप्नोति गौरवम्।।

जखन व्यक्ति विद्याक वशीभूत होइत अछि, आमर्ष ओकरा मे ज्वलित रहैत छैक... तखन ओकरा सुखक ने त' भूख होइत छैक आ' ने ओकर चेतना-तै पंडित जी भारविक एहि उक्ति 'ज्वलयति महतां मनोस्यमर्षे नहि लभतेऽवसरं सुखाभित्यष:' कें उद्धृत करैत व्यक्ति क' श्रेष्ठ जनाचरण सं शिक्षा व प्रेरणा लेबा पर जोर दैत छथि।

ज्योतिषाचार्य पंडित बलदेव मिश्र जी मिथिला मे ज्योतिष परम्पराक चर्चा करैत देशक तत्कालीन चालीस सं ऊपर मूर्धन्य गणित-फलित ज्योतिषाचार्य कें स्मरण कैलन्हि अछि आ' कहलन्हि जे भारत मे पंचांग, ग्रहणविचार, मुहूर्त दृष्टि, लग्न विचार आदिक श्रीगणेश सहस्त्रवर्ष पूर्व मिथिला मे भेल छल जकर प्रकारान्तर-न्याय सम्पूर्ण देश मे भ' सकल। एकर आदि ज्ञात पुरुष मकरन्द मिश्र छथि।

पंडित जी एहि पोथी मे लोक व्यवहार, लोकाचरण, आदर्श विवाह, मेलोत्सव, शिव-भक्ति अनुष्ठान, मैथिल दृष्टि आदि के तथ्यात्मक आ' तर्कात्मक रूप सं प्रस्तुत केने छथि। ■

संपादकीय नीति

- 'तीरभुक्ति' प्रत्येक तेसर मासक अंतिम सप्ताहमे प्रकाशित होइछ।
- तीरभुक्तिमे मुख्यत: शोध आलेख प्रकाशित प्रकाशित होइत अछि। संगहि किछु विशिष्ट कॉलम सेहो प्रकाशित होइत अछि।
- तीरभुक्ति केर प्रत्येक अंक एक विशेष थीम पर केंद्रित होइत अछि। एकर सूचना पत्रिकामे आ समाजिक माध्यम सबमे देल जाइछ। लेखकगण सं निवेदन जे थीमहि केर संगत विषय पर शोध आलेख पठाबी। थीम सं भिन्न आलेख यथायोग्य समय अयला पर प्रकाशित होयत।
- तीरभुक्ति Blind Peer Review पद्धति केर शोध पत्रिका अछि। सम्पादक मण्डल आ समीक्षक केर सहमति केर बादहि आलेख प्रकाशित कयल जाइछ।
- प्रत्येक शोध आलेखमे सन्दर्भक स्पष्ट उल्लेख आवश्यक अछि। एहि लेल APA 6जी Edition सन्दर्भ शैलीक प्रयोग कयल जाए।
- शोध आलेखक आरंभमे शोध सारांश (अधिकतम 100 शब्द) आ अंतमे शोध निष्कर्ष लिखब अनिवार्य अछि। सम्पूर्ण आलेख 2000-2500 शब्दक सीमामे हेबाक चाही।
- **हम किएक लिखैत छी** कॉलम आत्माभिव्यक्ति केर कॉलम अछि। एहि कॉलममे युवा रचनाकार लोकनिकें प्राथमिकता देल जाइछ।
- तीरभुक्ति पूर्णत: मैथिली पत्रिका अछि। आन भाषामे लिखल आलेख एतय स्वीकार नहि होइत अछि। लेखक स्वयं एकर मैथिली अनुवाद करा पठा सकैत छथि।
- प्रत्येक आलेखक संग लेखकक उद्घोषणा अनिवार्य अछि, जाहिमे लेख मौलिक आ अप्रकाशित होयबाक सूचना होय। संगहि आलेख कतहु आओर विचाराधीन नहि होय।
- फेसबुकवा सोशल मीडियामे कतहु आन ठाम प्रकाशित आलेख सेहो स्वीकार नहि होयत। लेखकलोकनि सं आग्रह जे एहन आलेख पठाबी।
- कोनो तरहक तथ्यात्मक त्रुटिक लेल लेखक स्वयं उत्तरदायी हेताह। उद्घोषणाक स्वरूप सम्पादकीय टीम स प्राप्त कयल जा सकैछ।
- तीरभुक्ति त्रैमासिक पत्रिका अछि। ताहिसं आलेख प्राप्तिक बाद प्रकाशन धरि 3 सं 6 मासक समय लागि सकैत अछि। एहि अवधिमे आलेख अन्यत्र कतहु प्रकाशनार्थधविचारार्थ नहि पठाओल जाए। यदि एहन बेगरता होय त सम्पादक कें सूचित क आलेख वापिस लेल जा सकैछ।
- तीरभुक्ति मे प्रकाशनार्थ सभटा रचना teerbhuktimaithili @gmail.com पर पठाओल जाए। रचना कृतिदेव 010 अथवा वाकमैन चाणक्या फॉन्ट में 14 फॉन्ट साइज़ में टाइप हेबाक चाही। आलेख एमएस वर्ड आ पीडीएफ दुनु रूपमे पठाओल जाए।
- प्रकाशित भेलाक बाद पत्रिका लेखक लोकनि आ नियमित सदस्य लोकनिकें डाक सं पठाओल जाइछ। सदस्यता विवरण सभ अंक मे प्रकाशित होइत अछि।
- जे नियमित सदस्य नहि छथि, ओ पत्रिका प्राप्ति लेल तीरभुक्ति कार्यालयमे अथवा पत्रिकामे प्रकाशित प्राप्ति स्थल सब पर सम्पर्क क सकैत छथि। ■

(पृष्ठ 71 केर शेष)

बाल उपन्यासक कसौटी पर 'गुलरी'

लेल ई ज्ञानवर्द्धक उपन्यास सिद्ध हएत। चौदहो खंड ज्ञान-विज्ञान सं परिपूर्ण अछि। गाछक महत्व, जीव-जन्तुक महत्व, तरेगण ाक टिमटिबेक कारण, नाहकें पानि पर हेलबाक कारण सन दर्जन भरि विज्ञानक प्रश्नक रोचक ढंग सं कथाक माध्यमे उत्तर देल गेल अछि। स्वतंत्रता संग्राम, स्वस्थ जीबाक लेल क्रिया संग फुटबॉल खेल पर विस्तृत विवरण एहिमे भेटैत अछि। अनेक प्रकारक ज्ञान-विज्ञानक प्रश्नोत्तर सभ उपन्यासकें नेना-भुटकाक लेल उपयोगी आ आवश्यक बनबैत अछि।

उपन्यासक मजगूत पक्ष अछि एकर भाषा। छोट-छोट सरल शब्दसं बनल वाक्य एकर ग्राह्यता बढ़बैत अछि। कथानकक चुनाव आ तकर विस्तार साहित्यक पैरामीटर पर एकरा नीक गद्य सिद्ध करैत अछि। गीतकार हेबाक बादो लेखक कथाकें अंत करबाक कलासं बंचित नै छथि। शिबू बाबू सं आरंभ भेल कथा शिबू बाबूक मृत्यु पर खत्म होइत अछि। जीवनक सभटा रंग एहि रचनामे भेटत।

उपन्यास अभिभावककें सिखबैत अछि नेना पर पढ़ाइक बोझ थोपल नै जाए। नेना स्वतंत्र सुग्गा जकां होइत अछि। ओकरा अपन रुचि सं काज करबाक छूट भेटय। गुलरीक माता-पिता ओकरा अपन कैरियर चुनबाक छूट देलनि आ ओ फुटबॉलक श्रेष्ठ खेलाड़ी बनि अपन समाजक नाम रौशन केलक।

अंत मे कहब जे उपन्यास गुलरी नेनाक संग-संग हुनक माता-पिताकें सेहो पढ़बाक चाही। अहां जं एकरा पढ़ब त' हमर विचारसं अवश्य सहमत हएब। ■

जामिया मिल्लिया इस्लामिया में 'विद्यापतिः समय से संवाद' पर गोष्ठी आयोजित

नई दिल्ली। अखिल भारतीय मिथिला संघक मैथिली शोध पत्रिका 'तीरभुक्ति' आ आलोचनाक अर्धवार्षिक पत्रिका 'हस्तांक'क' संयुक्त तत्वावधानमे जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालयक संस्कृत विभागमे 'विद्यापतिः समय से संवाद' विषय पर पांच सितम्बर के एकटा संगोष्ठीक आयोजन केल गेल। संगोष्ठीमे जयदेवकृत गीतगोविन्दम आ विद्यापति पदावलीक परिपेक्षमे विचार-विमर्श केलगेल। संगोष्ठीमे विषय क' लेल बीज व्यक्तव्य दैत जामिया मिल्लिया इस्लामियाक हिन्दी विभागक प्रो. चंद्रदेव यादव बजलाह जे विद्यापति अपन कविता सभमे अपना समयक सामंती समाजक विलासताक यथार्थ वर्णन केने अछि। आदिकालीं स्त्रीक प्रतिछवि विद्यापतिक पदावलीमे देखा पड़ैत अछि। बतौर मुख्य वक्ता जेएनयूक प्रोफ़ेसर आ प्रसिद्ध आलोचक प्रो. देवशंकर नवीन के मोताबिक विद्यापतिक कृतित्व एतेक व्यापक अछि जे हुनका पर आधारित दन्त कथा-कहानी हुनका सं कत्तो आगू बढि गेल। विद्यापतिक कवितामे मैथिल स्त्री जतेक स्वच्छंद, लौकिक आ उन्मुक्त अछि, ओ केवल सूरदास कतय देखाह पड़ैत अछि। दिल्ली विश्वविद्यालयके डॉ. प्रेम तिवारी विद्यापतिक रचना आ प्रो. चंद्रदेव प्रसादक विद्यापतिक पोथी पर अपन विचार राखलक।

दिल्ली विश्वविद्यलयक प्राध्यापक आ प्रसिद्ध आलोचक डॉ. बजरंग बिहारी तिवारी बजलाह जे विद्यापति जाहि तरहे मिथिलाक समाज क' देखैत छैथ, ओ कोनो दोसरा के पदावलीमे नहि भेटैत अछि। विद्यापति अपन लेखनमे संस्कृत के नहि चुनि के मैथिली के चुनलाह, ई बड पैघ आ साहसिक काज छल। एही अवसर पर हिंदी विभागक प्रो. नीरज कुमार विद्यापतिक गीतमे आयल कतेक रास शब्दक व्यापक अर्थ श्रोता सभक आगू राखलक। अखिल भारतीय मिथिला संघक अध्यक्ष विजयचंद्र झा विद्यापति के शिवभक्ति आ श्रृंगार पर अपन विचार राखलक आ बाजल जे विद्यापति ओहि दौरक सामाजिक कुरीति पर अपन रचनाक माध्यम सं प्रहार केने अछि। जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के डॉ. मुकेश मिरोठा सेहो प्रो. चंद्रदेव यादवक रचना प्रक्रिया आ विद्यापति पर हुनकर पोथी क' लेल बतौलक जे प्रो. चंद्रदेव यादव कोन तरहे विद्यापति पर गंभीर काज केने अछि।

संगोष्ठीक अध्यक्षता करैत जामिया मिल्लिया इस्लामियाक हिंदी विभागक पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. अब्दुल बिस्मिल्लाह कहलाह जे विद्यापति के किंवदंति सभसं हटा के नहि देखल जा सकैत अछि। विद्यापति सं जुड़ल जे सभटा पक्ष एही ठाम राखल गेल ओही सं शोधकर्ता और शिक्षक सभकें विद्यापति पर नव सिरा सं सोचबाक आ शोध करबाक लेल विवश होयत। इस अवसर पर संस्कृत विभागक अध्यक्ष प्रो. गिरीश चन्द्र पंत, हिन्दी विभागक पूर्व अध्यक्ष प्रो. हेमलता महेश्वर, डॉ. अजय नावरिया, हस्तांक के संपादक सुशील द्विवेदी, अखिल भारतीय मिथिला संघक महासचिव विद्यानंद ठाकुर, कोषाध्यक्ष शीतलकान्त झा सेहो मौजूद छलाह। कार्यक्रमक मंच संचालन 'तीरभुक्ति'क संपादक विनीत उत्पल करलक। धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम संयोजक डॉ. अदनान बिस्मिल्लाह करलक। एही मौके पर सभी वक्ता सभकें स्मृति चिन्ह, 'तीरभुक्ति' पत्रिका संग अखिल भारतीय मिथिला संघक स्मारिका सेहो प्रदान करल गेल। ■

बीपीएससी में चयनित भेलाह भास्कर

'तीरभुक्ति' पत्रिका केर संपादक मंडलक सदस्य आ जेएनयू मिथिला मंचक सक्रिय कार्यकर्ता भास्कर ज्योति बीपीएससी मे 38म स्थान पर चयनित भेलाह अछि। पछिला किछु वर्षमे ई बीपीएससी में मैथिली विषय केर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन अछि। गत वर्ष भास्करक बहिन कुमारी पल्लवी सेहो मैथिली स चयनित भेल छलीह। ओहो तीरभुक्ति लेल लिखैत छथि।

संभवतः पहिल प्रसंग अछि जे कियो भाय आ बहिन दुनु मैथिली विषय राखि लोक सेवा में चयनित भेल अछि। दूनू भाई बहिन कें तीरभूक्ति आ अखिल भारतीय मिथिला संघ दिश स अनेकानेक बधाय।

– **विजयचंद्र झा**, अध्यक्ष, अ.भा.मि.संघ

ISSN : 2582-1660
29 अक्टूबर, 2019 कें प्रकाशित

RNI No. : DELMAI/2018/76698
TEER BHUKTI - The Journal of Akhil Bhartiya Mithila Sangh

जामिया मिल्लिया इस्लामिया मे 'तीरभुक्ति' आ 'हस्तांक' द्वारा आयोजित 'विद्यापति : समय से संवाद' मे उपस्थित विद्वज्जन (बामा कात)। एहि अवसर पर वक्तागण कें सम्मानित करैत अ.भा.मि. संघक अध्यक्ष श्री विजयचंद्र झा

अ.भा.मि.संघ द्वारा आयोजित हरिमोहन झा स्मृति संध्या केर किछु दृश्य (ऊपर आ नीचां)

दिल्ली के संगम विहार मे अखिल भारतीय मिथिला संघ केर केंद्रीय कार्यालय परिसर मिथिला भवन केर उद्घाटन शुभ अवसर पर उपस्थित, राज्यसभा सांसद श्री प्रभात झा आन गणमान्य लोकनि

प्रकाशक आ मुद्रक विजयचंद्र झा द्वारा अखिल भारतीय मिथिला संघक दिशसं मकान नंबर एच-435, गली नं. 7, ई-ब्लॉक, संगम विहार, नई दिल्ली-110062 सं प्रकाशित आ जे.के. ऑफसेट, बी-278, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्लीसं मुद्रित।
संपादक : विनीत कुमार झा 'उत्पल'